ISSN 2349-6614

नवम्बर 2022 मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

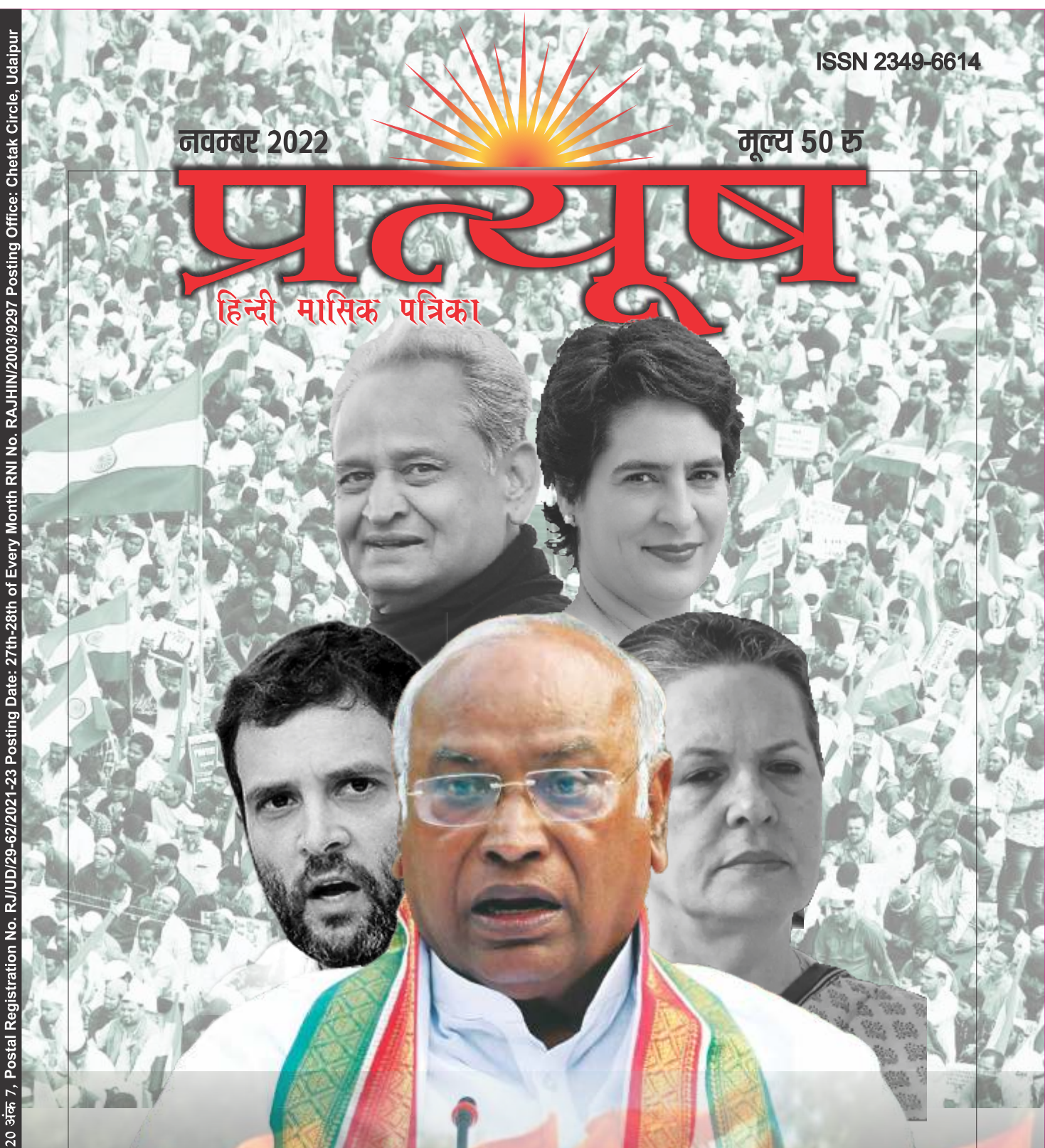

नैया के नए खिवैया

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 20 अंक 7, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

टाया एस्टेट्स

अमृत वाटिका - राज वाटिका - श्याम वाटिका

टाया एस्टेट्स, सहेलियों की बाड़ी, उदयपुर

टाया रिसोर्ट्स

सजनी वाटिका-साहेब वाटिका-हजारी बाग

सुभाष नगर, उदयपुर

बुकिंग हेतु सम्पर्क करें :

सुखसागर पैलेस, 133, अशोक नगर, मेन रोड, उदयपुर, मो. : 9001997000, 9001998888

नवम्बर 2022 वर्ष: 20, अंक: 7

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

अंदर के पृष्ठों पर...

शंखनाद

हिमाचल-गुजरात में वापसी या विदाई?
08

मायड़

राजस्थानी भाषा को लौटाएं उसका सम्मान
12

कीर्तिशेष

नतीजों की परवाह किए बिना जोखिम उठाया
30

सम्मान

सफलता के श्रेय की हकदार मेरी मां
36

राष्ट्रमंडल खेल

'चकदा एक्सप्रेस' का विराम
38

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोगाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Our Religion is Humanity

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी

एक ईंट मानव सेवा के लिए

संस्थान बना रहा है 450 बेड का सर्वसुविधायुक्त हॉस्पीटल

निर्माण कार्य में बनें सहभागी

सहयोग हेतु स्कैन करें

UPI - narayanseva@SBI

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलायें निवाला

भोजन

गरीब बच्चों को पढ़ा लिखाकर बनायें सशक्त

शिक्षा

गरीब–दिव्यांगों को बनायें आत्मनिर्भर

रोजगार

दिव्यांग बन्धु–बहनों को चलाएं अपने पैरों पर

ऑपरेशन

अंगविहिन दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंगों का उपहार

कृत्रिम अंग

कन्यादानी बनें, पुण्यभागी बनें

दिव्यांग विवाह

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत

+91 294 662 2222, 266 6666 | +91 7023509999

कांग्रेस को नई सुबह की तलाश

देश के सबसे पुराने राजनैतिक दल, जिसके नेतृत्व में स्वतंत्रता के लिये अंग्रेज हुकूमत से लम्बा संघर्ष किया गया और जो आजादी के बाद के लगभग 6 दशक तक सत्ता में रहा, उस कांग्रेस पार्टी के 22 वर्ष बाद 17 अक्टूबर को हुए अध्यक्ष पद के चुनाव में राज्य सभा में पार्टी संसदीय दल के नेता

मल्लिकार्जुन खरगे निर्वाचित हुए हैं। उन्होंने सीधे मुकाबले में पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं सांसद शशि थरूर को भारी मतों से पराजित किया। पच्चीस वर्ष में यह दूसरा मौका है जब पार्टी अध्यक्ष के चुनाव हुए। राजीव गांधी के 1991 में निधन के बाद 5 साल तक पार्टी नेतृत्वहीन रही। सन् 1996 में पार्टी के बड़े नेताओं व श्रीमती सोनिया गांधी की राय से पार्टी कोषाध्यक्ष सीताराम केसरी अध्यक्ष बने। 1998 में केसरी के हटने के बाद सोनिया गांधी को मैदान में लाया गया। किन्तु तब भी पार्टी का एक गुट गैर गांधी को अध्यक्ष बनाने पर अड़ा था। परिणामस्वरूप सोनिया के मुकाबले जितेन्द्र प्रसाद को उम्मीदवार बनाया गया। लेकिन, उन्हें भारी पराजय का सामना करना पड़ा और तब से गांधी परिवार के सदस्य ही निर्विरोध अध्यक्ष बनते रहे हैं। गाहे-बगाहे फिर भी गैर गांधी को अध्यक्ष बनाने की मांग उठती ही रही। अंतत: इस वर्ष अक्टूबर में चुनाव कराने का निश्चय हुआ तो सोनिया गांधी और राहुल गांधी दोनों ने चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया। सोनिया गांधी बीमारी के बावजूद पार्टी को लम्बे समय से संभालती रहीं थी।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इस बार कांग्रेस में 'करो या मरो' का जज्बा दिखाई दे रहा है। माना जा रहा है कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा से भी सत्ता विरोधी लहर बनाने में कामयाबी मिलेगी। इसलिये कि इस बार उसके पास कुछ ठोस मुद्दे हैं जो सीधे-सीधे आम जन से जुड़ें हैं। महंगाई और बेरोजगारी दो ऐसे अस्त्र हैं, जिसे कांग्रेस बहुत कुशलता से इस्तेमाल कर रही है। इसके अलावा किसानों, मजदूरों और भ्रष्टाचार से जुड़े मसले भी हैं, जिन्हें वह गिनाने से नहीं चूक रही। इन मुद्दों पर सरकार के तर्क प्रभावी साबित नहीं हो रहे, इसलिए भी कांग्रेस का हौसला बुलंद है। दरअसल, देश में अर्थव्यवस्था की स्थिति लम्बे समय से डावांडोल है, सरकार इसके एक पक्ष को सम्भालने का प्रयास करती है, तो दूसरा असंतुलित हो जाता है। कोविड काल के पहले से ही अर्थव्यवस्था डगमगाने लगी थी। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा ज्यादा समय तक दक्षिण भारत में रही है। यात्रा 12 राज्यों और 2 केन्द्र शासित प्रदेशों में साढ़े तीन हजार किलोमीटर की दूरी तय करते हुये फरवरी 23 में जम्मू-कश्मीर में समाप्त होगी। पूरी यात्रा के दौरान 22 महत्वपूर्ण स्थानों में से 9 दक्षिण भारत में स्थित हैं। दक्षिण भारत खासकर तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और तेलंगाना में लोकसभा की 129 सीटे हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में इन प्रदेशों में कांग्रेस को 28 सीटें मिली थीं, जबकि भाजपा 29 सीट जीतने में सफल रही। भाजपा को 25 सीट अकेले कर्नाटक से मिली थी। यात्रा के जरिए दक्षिण भारत में पार्टी को मजबूती मिल सकती है। वह दक्षिण में बेहतर प्रदर्शन करती है, तो सत्ता तक पहुंचने का उसका रास्ता सुगम हो सकता है।

कांग्रेस के लिए निराशा और हताशा भरी इस लम्बी रात की सुबह कब होगी ? क्या गांधी परिवार से इतर पार्टी अध्यक्ष चुन लिये जाने और भारत जोड़ो यात्रा की बदौलत पार्टी तमाम बाधाओं से उबर कर खुद को फिर से खड़ा कर सकेगी ? इसका जवाब आने वाला समय या नवनिर्वाचित अध्यक्ष के फैसले ही दे पाएंगे। नए अध्यक्ष के सामने फिलहाल सबसे बड़ी चुनौती हिमाचल और गुजरात में होने वाले चुनाव हैं। पार्टी के अंदरूनी हालात इतने खराब हैं कि चीजों को जल्दी से जल्दी पटरी पर लाना खरगे के लिये आसान नहीं होगा। चीजों को इतने दिनों तक टाला गया कि अब अंतिम समय में उन्हें संवारना टेढ़ी खीर है। कांग्रेस सिर्फ राजस्थान और छत्तीसगढ़ में शासन में है। वहां भी अगले साल चुनाव होने हैं। दोनों राज्यों में पिछले दो साल से गुटबाजी चरम पर है। करीब 17 माह बाद लोकसभा चुनाव का बिगुल भी बज उठेगा। कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता पार्टी छोड़ चुके हैं, तो कुछ निकलने का बहाना तलाश रहे हैं। गांधी परिवार को पार्टी के एक बड़े तबके का अब भी समर्थन प्राप्त है। गांधी परिवार से अलग कांग्रेस का कोई सार्थक वजूद मौजूदा हालातों के चलते कायम रह पाएगा, यह संतुलन बिठाना भी खरगे की अनुभव और राजनीतिक कौशल की दृष्टि से बड़ी परीक्षा होगी। हालांकि, भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल गांधी के साथ मंच साझा करते हुए खरगे इस बात का जवाब दे ही चुके हैं। उन्होंने कहा कि वे कांग्रेस को गांधी परिवार के मार्गदर्शन में चलाएंगे। वैसे तो कांग्रेस 137 साल से चल ही रही है, लेकिन मौजूदा परिप्रेक्ष्य में उसकी गति में वो बात नहीं दिखती जो पूर्व में थी। इस गति को खरगे कितना तेज कर पाएंगे, यह देखने वाली बात है। पदभार संभालने के बाद खरगे ने जो महत्वपूर्ण फैसले किए हैं, उनमें युवाओं को 50 फीसदी भागीदारी देना और सीडब्ल्यूसी को भंग कर 47 सदस्यीय संचालन समिति का गठन है। इसमें अध्यक्ष पद के चुनाव में खरगे के प्रतिद्वंद्वी शशि थरूर को छोड़कर सभी बड़े चेहरे शामिल हैं। शशि थरूर को अलग-थलग करने से सबको साथ लेकर चलने के अपने संदेश पर खुद उन्होंने ही प्रश्न चिह्न लगा दिया है। संचालन समिति में 50 से कम आयु के कितने लोग हैं, यह सवाल भी उनसे पूछा जाने लगा है।

आतंक के पोषण पर ताला

मनीष उपाध्याय

केन्द्र सरकार ने पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआइ) और उससे संबंद्ध आठ संगठनों को देश के लिए खतरा बताते हुए 28 सितम्बर को इन पर पांच साल के लिए प्रतिबंध लगा दिया। सरकार की ओर से यह स्पष्ट किया गया है कि फैसला पुख्ता साक्ष्यों के आधार पर किया गया। इसे सियासत के चश्मे से नहीं देखना चाहिए। देश की एकता और अखण्डता के साथ किसी तरह का समझौता नहीं किया जा सकता। अनेक मुस्लिम संगठनों ने सरकार की इस कार्रवाई का स्वागत किया है। दरअसल, हाल में पीएफआइ से संबंधित ठिकानों पर सुरक्षा एजेंसियों ने जिस तरह छापे मारे और सवा दो सौ से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया, शायद उसी में सरकार को इस बात के आधार मिले कि वह इस संगठन को लेकर क्या रूख अख्तियार करे। यों पीएफआइ की गतिविधियों को लेकर काफी समय से शक जाहिर किया जा रहा था कि क्या यह देश के संविधान के ढांचे के खिलाफ भी कोई काम कर रहा है, मगर देश के लोकतांत्रिक स्वरूप में अलग-अलग विचारों और उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सिद्धांत की वजह से कार्रवाई टलती रही। मगर अब सरकार का मानना है कि पीएफआइ और इसके सहयोगी संगठन या इससे जुड़ी संस्थाएं उन गैरकानूनी गतिविधियों में संलिप्त हैं जो देश की अखंडता, संप्रभुता और सुरक्षा के खिलाफ हैं। साथ ही इससे शांति और सांप्रदायिकत सद्भाव का माहौल खराब होने और देश में उग्रवाद को प्रोत्साहन मिलने की आशंका है। अगर इन आरोपों के दायरे में पीएफआइ की कोई भी गतिविधि आती है तो यह गंभीर चिंता की बात है और स्वाभाविक ही सरकार ने इस मसले पर एक बड़ा कदम उठाया है।

इसमें दो राय नहीं कि देश के लोकतांत्रिक ढांचे में किसी भी संगठन को अपने विचारों या मतों के प्रचार-प्रसार का अधिकार है और पीएफआइ इसी के तहत अपनी जमीन मजबूत बना रहा था, लेकिन अगर आइएसआइएस यानि इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया जैसे आतंकवादी समूहों के साथ उसके सम्पर्क के उदाहरण हैं तो इसे लोकतांत्रिक अधिकारों की किस परिभाषा के तहत देखा जाएगा? किसी भी समुदाय के संवैधानिक अधिकारों के लिए राजनीतिक आंदोलन करने या आवाज उठाने से किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती, मगर लोगों के भीतर एकांगी या कट्टर विचार के साथ असुरक्षा का भाव भरने को कैसे उचित ठहराया जा सकता है? सरकार की इस कार्रवाई पर राजनीतिक बयानबाजी दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसे मामलों में राजनीति ठीक नहीं। उम्मीद की जानी चाहिए कि केन्द्र और राज्य सरकारें देश की सुरक्षा को खतरे में डालने वाले हर संगठन के खिलाफ पूरी ताकत से खड़ी होंगी। प्रतिबंध तो ठीक है, मगर जरूरी है इन संगठनों की जड़ को नेस्तनाबूद करना क्योंकि पिछले अनुभव बताते हैं कि ऐसे संगठन प्रतिबंध के बाद नए मुखौटे में फिर खड़े हो जाते हैं। पीएफआइ ऐसा ही संगठन है, जो सिमी पर पाबंदी के बाद जन्मा। प्रतिबंध के बाद इनकी गतिविधियों पर भी बराबर नजर रखने की जरूरत तो है ही साथ ही इनकी विदेशी फंडिंग को खत्म करना भी उतना ही जरूरी है। पीएफआइ के खिलाफ सख्त

इन पर प्रतिबंध

1. पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया
2. रिहैब इंडिया फाउंडेशन
3. कैम्पस फ्रंट ऑफ इंडिया
4. ऑल इंडिया इमाम काउंसिल
5. नेशनल कनफडरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स ऑर्गेनाइजेशन
6. नेशनल वीमेंस फ्रंट
7. जूनियर फ्रंट
8. एम्पावर इंडिया फाउंडेशन
9. रिहैब फाउंडेशन (केरल)

कदम उठाने के लिए गृह मंत्रालय, प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी और एनआईए (राष्ट्रीय जांच एजेंसी) की भूमिका निश्चित तौर पर सराहनीय है, लेकिन इस मोर्चे पर अभी यह शुरुआत है, इसे अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझना चाहिए। पीएफआइ के खतरे को हमेशा के लिए खत्म करने के लिए तीन मोर्चे पर वार करना होगा। पहला यह कि इस संगठन से जुड़े लोगों की चल-अचल संपत्ति जब्त करनी होगी। दूसरा यह कि इनके सपोर्ट सिस्टम को ध्वस्त करना होगा और तीसरी यह कि देश भर में फैले इसके स्लीपर सेल की शिनाख्त कर उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी होगी। तभी जाकर आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती बने इस संगठन को पूरी तरह ध्वस्त करने के बारे में आश्वस्त हुआ जा सकेगा।

पांच सवालों के जवाब

1 कैसे हुई स्थापना

पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआइ) का गठन नवंबर 2006 में केरल के कोझिकोड में हुई एक बैठक में हुआ था। फरवरी 2007 को बेंगलुरु में इम्पावर इंडिया कॉफ्रेंस में इसका औपचारिक एलान हुआ था। इसके गठन का उद्देश्य देश के दबे-कुचले लोगों की लड़ाई लड़ना था। 2009 में पीएफआइ से ही राजनीतिक दल सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया (एसडीपीआई) निकला था। इसी तरह कैंपस फ्रंट ऑफ इंडिया भी है जो युवाओं को अपने साथ जोड़ता है।

2 क्यों गहरा रहा है शक?

पीएफआइ पर वर्ष 2010 में आरोप लगा कि उसके तार प्रतिबंधित संगठन स्टूडेंट इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) से जुड़े हैं। पीएफआइ का नेशनल चेयरमैन अब्दुल रहमान सिमी का पूर्व राष्ट्रीय सचिव था। संगठन का राज्य सचिव अब्दुल हमीद सिमी के पूर्व राज्य सचिव की जिम्मेदारी संभाल चुका था। जांच एजेंसियों ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि पीएफआइ से जुड़े अधिकतर लोगों का संबंध सिमी से है। इस साल 12 जुलाई को पटना में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रैली के दौरान उन पर हमला करने की भी योजना बनाने का खुलासा ईडी ने किया था।

3 पैसा कहां से आता है?

प्रवर्तन निदेशालय ने धनशोधन के एक मामले में लखनऊ की अदालत में चार्जशीट दायर कर बताया था कि पीएफआइ को संयुक्त अरब अमीरात, कतर, सऊदी अरब, ओमान, कुवैत और बहरीन से हवाला के जरिये पैसा मिलता है। टेरर फंडिग के तहत तुर्की से भी फंडिंग के साक्ष्य मिले हैं। ओमान में चीन की कम्पनी रेस इंटरनेशनल में काम करने वाले पीएफआइ सदस्य और सीएफआइ के राष्ट्रीय महासचिव केए रौफ शेरिफ के खाते में भी एक करोड़ रुपए आए थे।

4 क्या आईएस से संबंध है?

एनआईए ने खुफिया इनपुट के आधार पर 2016 में उत्तरी केरल के कन्नूर में छापा मारा तो प्रारंभिक जांच में पाया कि युवाओं के एक समूह ने इस्लामिक स्टेट (आईएस) की तर्ज पर अल जरूल खलीफा की स्थापना की है। मकसद देश में दो समुदायों के बीच तनाव पैदा करना था। बाद में एनआईए ने इसे केरल का पहला आईएस मॉड्यूल करार दिया। गिरफ्तार हुए लोगों से पूछताछ हुई तो पता चला कि जो गिरफ्तार हुए उसमें कुछ का संबंध पीएफआइ से हैं।

5 केरल में हत्या का आरोप क्या है?

केरल सरकार ने वर्ष 2014 में हाईकोर्ट को दिए हलफनामे में बताया था कि राजनीति से जुड़े 27 लोगों की हत्या में पीएफआइ सदस्यों की संलिप्तता रही है। यही नहीं हत्या की 86 कोशिशों में भी इस संगठन के लोग शामिल रहे हैं। वहीं सांप्रदायिक भावनाएं भड़काने के 125 मामले दर्ज हैं। केरल में पीएफआई की महिला विंग भी है। राजनीतिक दल सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया (एसडीपीआई) भी है। 2016 के विधानसभा चुनाव में एक फीसदी से कम वोट मिला था।

दी बांसवाडा सैन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि. बांसवाड़ा

को-ऑपरेटिव बैंक

के माध्यम से विभिन्न योजनाएँ

- अल्पकालीन फसली ऋण योजना क्षेत्र के कृषको को ब्याज मुक्त फसली ऋण की सुविधा सम्बन्धित ग्राम सेवा सहकारी समिति के माध्यम से लाभान्वित किया जाता है।
- ज्ञान सागर ऋण योजना
- पैक्स एज एमएससी
- उपज के विरूद्ध रहन ऋण
- स्वंय सहायता समूह ऋण योजना
- सहकार स्वरोजगार क्रेडिट कार्ड योजना
- वाहन ऋण योजना
- वेतनभोगी व व्यवसायिओं के लिये ऋण
- व्यक्तिगत ऋण योजना (पर्सनल लोन)
- व्यापारिक साख सीमा योजना
- अचल सम्पति के विरूद्ध ऋण योजना
- विकलांग वि वास योजना
- जन मंगल आवास ऋण योजना

सहकारी बैंक में अमानतों पर 6 प्रतिशत तक ब्याज दिया जा रहा है, वरिष्ठ नागरीकों को 0.50 प्रतिशत अतिरिक्त ब्याज देय है। राशि रू. 5.00 लाख तक की समस्त अमानतें भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बीमित की गयी है।

अधिक जानकारी के लिये निकटतम शाखा से सम्पर्क करें।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

हिमाचल-गुजरात में वापसी या विदाई?

भगवान प्रसाद गौड़

गुजरात और हिमाचल प्रदेश में इसी माह चुनाव होने हैं, हालांकि गुजरात चुनाव के कार्यक्रम की निर्वाचन आयोग द्वारा घोषणा शेष है। हिमाचल में 12 नवम्बर को चुनाव होने हैं, कांग्रेस भाजपा और आप सहित निर्दलीय प्रत्याशी रात-दिन चुनाव प्रचार कर रहे हैं। परिणाम 8 दिसम्बर को घोषित होगा। माना जा रहा है कि मुख्य चुनाव आयुक्त जल्दी ही गुजरात विधानसभा के चुनाव कार्यक्रम की घोषणा भी करेंगे, ताकि हिमाचल चुनाव निपटते ही गुजरात में मतदान करवा दिया जाए और दोनों राज्यों के परिणाम 8 दिसम्बर को एक साथ घोषित किए जाएं। 182 सदस्यीय गुजरात विधान सभा का कार्यकाल अगले वर्ष फरवरी मध्य में समाप्त होना है।

हिमाचल में चुनाव की जिम्मेदारी कांग्रेस की ओर से छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल को सौंपी गई है, जब कि गुजरात फतेह का जिम्मा राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत को दिया गया है। बघेल ने अपने खास मंत्रियों के लाव-लश्कर के साथ अपने राज्य के प्रशासनिक मॉडल और न्याय योजना को लेकर हिमाचल की वादियों में उपस्थिति दर्ज करा दी है। इस राज्य में विधानसभा की कुल 68 सीटे हैं। बघेल ने इस बार हिमाचल चुनाव में छत्तीसगढ़ की न्याय योजना को भी घोषणा पत्र में शामिल करवाया है। इसके साथ ही गुजरात चुनाव में भी छत्तीसगढ़ के कुछ प्रभावी मंत्रियों को लगाया गया है।

गुजरात चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन

वर्ष	भाजपा	कांग्रेस
1995	121	45
1998	117	53
2002	127	51
2007	117	59
2012	120	57
2017	99	77

गुजरात में गहलोत

कांग्रेस ने गुजरात विधानसभा के पिछले चुनाव में राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की बदौलत पूर्वापेक्षा अधिक सीटें हांसिल कर, भाजपा को थका दिया था। इस बार भी गहलोत को गुजरात की जिम्मेदारी दी गई। हालांकि बतौर प्रभारी राज्य के पूर्व मंत्री डॉ. रघु शर्मा वहां कई महिनों से जीत की जमीन तैयार कर रहे थे। कांग्रेस और भाजपा में कड़ी टक्कर जरूर होगी, लेकिन अब तक मतदाताओं का जो रूझान है, वह भाजपा की तरफ ही दिख रहा है और यही स्थिति हिमाचल में भी है। दोनों ही राज्यों में कमल के ही फिर से खिलने का अनुमान है।

भाजपा भी पीछे नहीं

गुजरात के चुनाव में प्रवासी राजस्थानियों के माध्यम से 43 विधानसभा क्षेत्रों में जीत की राह बनाने में राजस्थान की भाजपा बहुत पहले से जुटी है। बॉर्डर से सटे सात जिलों की प्रत्येक विधानसभा में 1 से 5 हजार तक प्रवासी राजस्थानी रहते हैं, जिनके वोट अपने खाते में डालने के लिए राजस्थान से सांसद-विधायकों सहित 107 नेताओं की टीम काम कर रही है। यह टीम प्रवासी राजस्थानियों से गुजरात भाजपा के कार्यकर्ताओं की मदद से सीधे संपर्क साध रही है। सामूहिक आयोजन कर उन्हें भाजपा की ओर रिझा रही है। चूंकि विधानसभा चुनावों में गुजरात ही नहीं देश की अधिकांश विधानसभाओं में 8 से 10 हजार के आसपास ही जीत रहती है, ऐसे में प्रवासी राजस्थानियों के वोटों की इस गणित को अहम माना जा रहा है। मोदी फेक्टर तो वहां अपना काम करेगा ही।

छत्तीसगढ़ से चुनाव प्रचार के लिए दोनों राज्यों में जा रहे प्रचारक न्याय योजना का जिक्र कर रहे हैं। साथ ही उसके फायदे भी गिना रहे हैं। छत्तीसगढ़ में न्याय योजना की वजह से लोगों की जिंदगी में खुशहाली का दावा किया जा रहा है।

क्या है न्याय योजना: छत्तीसगढ़ सरकार न्याय योजना के तहत किसानों से 2500रू.

प्रति क्विंटल धान खरीदती है। साथ ही उसने बिजली बिल आधा करने का वादा भी किया है। राजीव गांधी न्याय योजना के तहत मजदूर परिवारों को प्रति वर्ष 7000रू का भुगतान किया जाता है। साथ ही गोठानों से गोबर की खरीद की जा रही है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है। इन योजनाओं का प्रचार छत्तीसगढ़ के नेता दोनों राज्यों में कर रहे हैं।

इम्पैक्ट कम करने की कवायद

भाजपा के सांसदों-विधायकों सहित बड़े नेताओं की टीम की स्ट्रेटजी वहां सीएम अशोक गहलोत (सीनियर पर्यवेक्षक) और प्रदेश प्रभारी रघु शर्मा के इम्पेक्ट को कंट्रोल करने से भी जोड़कर देखा जा रहा है। गहलोत राजस्थान ही नहीं देश में कांग्रेस के बड़े चेहरे हैं। वे प्रवासी राजस्थानियों में खासा असर रखते हैं। ऐसे में कांग्रेस की ओर हो रहे प्रवासी राजस्थानियों के रूझान को कम करने के लिए टीम जी-जान से लगी है। रघु शर्मा वहां कई महीनों से डेरा डाले हुए हैं। वे भी अपने हिसाब से प्रवासी राजस्थानियों के वोटों के लिए प्लान लेकर गए हैं, और उस पर अलग से काम भी करवा रहे हैं।

'आप' की मुश्किल राह

हिमाचल से निराश आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल अब गुजरात में वोट की सेंधमारी करने की जुगाड़ में व्यस्त हो हैं। इससे भाजपा और कांग्रेस दोनों में ही थोड़ी बैचेनी नजर आ रही है। भाजपा अभी तक हिंदुत्व की पतवार लेकर राजनीति की वैतरणी पार कर लेती थी। उसी पतवार के राही बनकर केजरीवाल भी निकल पड़े हैं। लेकिन गुजरात में आम आदमी पार्टी की राह उतनी आसान नहीं है। आम आदमी पार्टी के नेताओं के प्रचार से लग रहा है कि वे भाजपा की उंगली पकड़कर चलना सीख रहे है। जिन राज्यों में कांग्रेस अस्तित्वहीन हो चुकी है और भाजपा के विकल्प की जरूरत है, वहां आम आदमी पार्टी अपना ठिकाना बनाने की पुरजोर कोशिश में है। लेकिन हिंदी प्रदेशों बिहार, यूपी, झारखंड तथा उत्तराखंड जैसे प्रदेशों में क्षेत्रीय दलों का वर्चस्व है, जिसके बीच आप का राजनीतिक भविष्य तलाश पाना रेगिस्तान में मृगमरीचिका दिखने पर पानी के लिए जमीन की खुदाई के बराबर ही है। हिमाचल में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सहित बड़े नेताओं के इस्तीफे से पार्टी को गहरा झटका लगा है।

HAPPY DEEPAVALI

LAXMI ENGINEERING WORKS

FEW OF OUR OTHER PRODUCT

✦ Jaw Crusher ✦ Bucket Elevator ✦ Belt Conveyor ✦ 3,4 Roller Mill
✦ Hammer Mill ✦ Ball Mill ✦ Whizzer Classifier ✦ Screw Conveyor
✦ Microzine Plant for 15 & 20 ✦ Microns ✦ Material Handling Equipments

OUR SPECIALTY : CUSTOM BUILT PLANTS & MACHINERY

E- 176, Road No. 5, Mewar Industrial Area, Madri, Udaipur - 313003 Tel. : 0294-2490060, 2490735
E-mail : info@laxmiengineering.com | govind@laxmiengineeering.com Website : www.laxmiengineering.com

जेब पर भारी नहीं अब ज़रूरी दवाएं

दवाओं की राष्ट्रीय सूची में संशोधन, अब मूल्य नियंत्रण कानून के दायरे में आएंगी

डॉ. अंजना गुर्जरगौड़

किसी भी बीमारी के उपचार में होने वाले खर्च का अधिकांश हिस्सा दवाओं पर ही खर्च होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इन दवाओं का बाजार में विक्रय के लिए जो मूल्य तय होता है, वह प्राय: लागत के मुकाबले बहुत ज्यादा होता है। नतीजतन ये दवाएं कई बार समाज के बड़े हिस्से की पहुंच से बाहर हो जाती हैं। इससे जहां गंभीर रोग के उपचार में लोगों के सामने मुश्किल पेश आती है, वहीं सरकार को भी इसका अतिरिक्त बोझ झेलना पड़ता है। यह किसी छिपा नहीं है कि समय-समय पर सरकार की ओर से कम दाम पर या सस्ती दवाएं जरूरतमंद तबकों तक पहुंचाने के लिए कदम उठाए जाते रहे हैं, मगर कुछ समय हालात पहले की तरह हो जाते हैं। परिणाम यह होता है कि बाजार में जीवनरक्षक अथवा बेहद जरूरी दवाएं ऊंची कीमतों पर मिल रही होती हैं और उन तक केवल आर्थिक रूप से सक्षम लोगों के हाथ ही पहुंच पाते हैं। पिछले सितम्बर माह में इस स्थिति पर चिंता के साथ केन्द्र सरकार ने आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची (एनएलईएम-2022) में 34 नई अतिरिक्त दवाओं को शामिल कर आम आदमी को गंभीर रोगों पर खर्च में बड़ी राहत दी है। सस्ते दाम पर मिलने वाली इन दवाओं की सूची में कैंसर रोधी दवाएं, एंटीबायोटिक्स और टीके भी शामिल किए गए हैं। जिनमें चार प्रमुख कैंसररोधी दवाएं- बेंडामुस्टाइन हाइड्रोक्लोराइड, इरिनोटेकन एचसीआइ ट्राइहाइड्रेट, लेनालेडोमाइड व ल्यूप्रोलाइड एसीटेट और मनोचिकित्सा संबंधी दवाओं-निकोटिन रिप्लेसमेंट थेरेपी और ब्यूप्रेनोर्फिन को भी सूची में जोड़ा गया है। हालांकि, 26 दवाओं जैसे कि रैनिटिडिन, सुक्रालफेट, वाइट पेट्रोलेटम, एटेनोलोल और मेथिल्डोपा को संशोधित सूची से हटा दिया गया है हृदय और रक्त नलिकाओं की देखभाल में उपयोग की जाने वाली दवा डाबिगट्रान और टेनेक्टेप्लेस के अलावा अन्य दवाओं ने भी सूची में जगह बनाई है। एनएलईएम में इवरमेक्टिन, मेरोपेनेम, सेफुरोक्साइम, एमिकासिन, बेडाक्विलाइन, डेलामेनिड, इट्राकोनाजोल एबीसी डोलटेग्रेविर जैसी दवाओं को जोड़ा गया है। पिछले साल भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के तहत एक विशेषज्ञ समिति द्वारा 399 'फार्मूलेशन' की संशोधित सूची प्रस्तुत की गई थी। इसके साथ ही आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची में अब ऐसी कुल दवाओं की संख्या 384 हो गई है। निश्चित रूप से आम जनता के लिए यह राहत की खबर है। अब उम्मीद की जानी चाहिए कि जिन दवाओं के दाम कम किए जाने की घोषणा हुई है, उन तक आम लोगों की पहुंच हो सकेगी और ऐसे लोगों का भी जीवन बचाया जा सकेगा, जिनकी इन अत्यावश्यक दवाओं केअभाव में नाहक मौत हो जाती है। लेकिन सरकार को इस पर निगरानी रखने वाली एजेन्सियों को भी सक्रिय करना होगा, जो प्राय: निष्क्रिय ही दिखाई देती हैं। यह

कैंसर-हार्ट अटैक रोकने वाली दवाएं और रोटा वायरस टीके किफायती होंगे

चार कैंसर रोधी नई दवाएं जोड़ीं

नई 34 दवाओं में ल्यूप्रोलाइड (प्रोस्टेट कैंसर), लेनिलेडोमाइड (कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि रोकने और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने), इरिनोटेकन (पैंक्रियाज कैंसर) और बेडामुस्टाइन (कीमोथैरैपी) शामिल हैं। कैंसर रोधी ये बेहद महंगी हैं। कोरोना के उपचार वाली दवा आइवरमैक्टिन भी नई सूची में है। रोटा वायरस टीका और निकोटिन रिप्लेसमेंट थेरेपी में शामिल दवाओं को भी इस सूची में जोड़ा गया है। तंबाकू-सिगरेट छोड़ने वालों को सस्ती दवाएं मिल पाएंगी।

अस्थमा रोगियों को लाभ

अस्थमा के उपचार की दवा मोंटेलुकास्ट, आईप्रेशर की दवा लौटानोप्रेस्ट, बच्चों को दी जाने वाली एंटीबायोटिक मेरोपेनम, खून के थक्के और हार्ट अटैक रोकने वाली दवाएं डैबिट्रान एवं टेनेक्लेप्लस भी नई सूची में शामिल की गई हैं।

इसलिए जरूरी है कि खुले बाजार में उपलब्ध दवाओं को कई-कई गुना ज्यादा कीमत पर बेचे जाने को लेकर अकसर सवाल उठते रहते हैं। सरकार कहती तो यह है कि उसके द्वारा निर्धारित दाम के बाद कोई भी दवा कम्पनी अपनी मर्जी से दाम नहीं बढ़ा सकेंगी, लेकिन यह छिपा नहीं है कि इसके बावजूद कम्पनियां कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेती हैं।

सरकार के स्पष्ट निर्देश हैं कि डॉक्टर रोगियों के इलाज के दौरान जेनेरिक दवाएं लेने की सलाह दें। लेकिन इस पर कितने डॉक्टर अमल करते हैं? कितने चिकित्सक अमल करते हैं? जन औषधि केंद्र जैसी व्यवस्था के तहत सरकार अपने नियंत्रण वाली दुकानों में जेनेरिक और सस्ती दवाएं उपलब्ध कराने का दावा तो करती हैं, मगर कई बार मरीजों को वहां जीवन रक्षक दवा भी नहीं मिल पाती। मजबूरन खुले बाजार में निजी दुकानों से उन्हें ऊंची कीमत पर दवा लेना पड़ता है या फिर उसकी कीमत अदा कर पाने में वे सक्षम नहीं होते। जरूरत इस बात की है कि सरकार जनता को सस्ती दवाएं उपलब्ध कराने की केवल घोषणा नहीं करे, बल्कि एक सुगठित तंत्र भी बनाए जो इस पर अमल सुनिश्चित करे और इसकी स्थिति पर निगरानी रखे। साथ ही, वह तंत्र इन निर्देशों को लागू करने में लापरवाही की पड़ताल करे और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई भी करे।

34 नई दवाएं जोड़ी गई हैं सूची में

26 को स्वास्थ्य मंत्रालय ने हटाया

इसलिए लिया फैसला

दवाओं पर स्थायी राष्ट्रीय समिति के उपाध्यक्ष डॉ. वाई के गुप्ता ने कहा कि 26 दवाओं को सूची से हटाने के पीछे कई कारण हैं, जैसे दवाओं का प्रभाव कम होना, उसके खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता पैदा होना, बेहतर विकल्प होना, दुष्प्रभाव सामने आना आदि।

''आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची-2022 में 27 श्रेणियों में 384 दवाएं शामिल की गई हैं। इससे कई एंटीबायोटिक, टीके, कैंसर रोधी समेत कई अन्य जरूरी दवाएं और सस्ती हो जाएंगी जिससे रोगोपचार का खर्च घटेगा।''

मनसुख मंडाविया,
स्वास्थ्य मंत्री

असली नकली का भी, अब चलेगा पता

नकली और घटिया दवाओं का इस्तेमाल रोकने के लिए भी अब केंद्र सरकार ट्रैक एंड ट्रैस सिस्टम शुरू करने की योजना बना रही है। इसके पहले चरण में सबसे ज्यादा बिकने वाली 300 से ज्यादा दवाइयों की पैकेजिंग पर बारकोड या क्यूआर कोड प्रिंट किया जाएगा। बाद में दूसरी दवाइयों पर भी इन्हें अनिवार्य किया जाएगा। पहले चरण में ऐसी दवाओं के लिए यह व्यवस्था की जा सकती है, जिनकी कीमत 100 रूपए से अधिक है। इनमें एंटीबायोटिक, कार्डियक, पेन रिलीफ पिल्स, एंटी एलर्जिक दवाएं शामिल हैं। इस योजना पर एक दशक पहले भी विचार हुआ, लेकिन अमली जामा नहीं पहनाया जा सका था। ग्राहक अब स्मार्टफोन से बारकोड स्कैन कर असली-नकली दवा का पता लगा सकेगा।

हरिवल्लभ जी त्रिवेदी
संस्थापक

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

त्रिवेदी उपाहार गृह

सन् 1947 से आपकी सेवा में

देशी घी की जलेबी
उड़द के गौंद सौंठ के लड्डू
ड्राई फ्रूट के लड्डू

पता : सूरजपोल बाहर, उदयपुर, मोबाइल: 94140-33558

राजस्थानी भाषा को लौटाएं उसका सम्मान

डॉ. शिवदानसिंह जोलावास

आदिम सभ्यता के बाद जैसे ही मनुष्य गुफाओं से बाहर निकला सामाजिक संरचना का विकास हुआ। वह अपने भाव प्रकट करने के लिए संकेत काम में लेता था लेकिन कालांतर में वह संवाद प्रक्रिया में विकसित हुई और दुनिया के अलग अलग क्षेत्रों में सभी ने अपनी जुबान/भाषा व लिपि का विकास किया। सभ्यता और संस्कृति के विकास क्रम में भाषाएं उसका प्राण हैं जो समुद्र की गहराई तक मनुष्य के अंतर्मन में बैठी हुई हैं। दुनिया की किसी भी भाषा में एकरूपता नहीं मिलेगी लेकिन मनुष्य के विकास के साथ भाषाओं ने अपने शब्दों का आदान प्रदान किया है, इसलिए राजस्थानी जैसी भाषा के शब्द फ्रेंच और अरब के साथ रूस की कई घुमंतू जातियों तक पहुंचे। राजस्थान विश्व के समक्ष वह अनूठा प्रदेश है जो वीरता का पर्याय माना गया। यहां की संस्कृति शौर्य, साहित्य और कला का केंद्र है। देश धर्म की रक्षा के लिए गौरवपूर्ण आहूति देने वाले युवाओं की जन्मभूमि, अनगिनत नारियों के शौर्य से सिंचित इस तीर्थ को विदेशी लेखक थर्मोपोली की संज्ञा देते हैं। राजस्थान के आठ करोड़ प्रदेश वासियों की अपनी भाषा है जिसका विकास वैदिक काल से हुआ है।

आईएएस को 2 साल के अंदर उस प्रदेश की भाषा सीखनी होती है

भारत के कई राज्यों में प्राथमिक शिक्षा बच्चों की मातृभाषा में दी जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसी की पालना के लिए कहती है, इसलिए रोजगार की संभावनाएं बढ़ती जाती है। तेलुगु सम्मेलन के उद्घाटन में मातृभाषा पर गर्व करते हुए पूर्व उपराष्ट्रपति ने रोजगार के लिए तेलुगु अनिवार्य करने का सुझाव दिया। वहीं पंजाब में और महाराष्ट्र में साईन बोर्ड से लेकर नौकरी भी स्थानीय भाषाओं में रोजगार सर्जन कर रही है। तमिलनाडु सरकार राज्य की सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम में तमिल भाषा की अनिवार्यता पर बल देती है। राजस्थान प्रदेश में किसी भी राज्य का अभ्यर्थी परीक्षा दे रोजगार ले सकता है। यहां की भाषा संस्कृति और ज्ञान की किसी प्रकार की आवश्यकता महसूस नहीं की जा रही है। संघ लोक सेवा आयोग की सेवा में भी आईएएस को 2 साल के अंदर उस प्रदेश की भाषा सीखनी होती है तभी उसे फील्ड पोस्टिंग दी जाती है, लेकिन राजस्थान में इसका अभाव है। राजस्थानी बोली के साथ यहां की संस्कृति अनूठी पहचान रखती है। 1936 से 1955 तक राजभाषा आयोग बना, तत्पश्चात हिंदी के प्रवेश के साथ राजस्थानी को चतुराई से बाहर कर दिया गया।

राजस्थानी साहित्य के लेखकों को पद्मश्री जैसा पुरस्कार दिया जाता है, लेकिन रोजगार के नाम पर कोई विशेष आरक्षण नहीं। राजस्थान का लोक संगीत घूमर संसार के 10 बड़े नृत्य में चौथे स्थान पर है। यहां का कालबेलिया नृत्य विश्व विरासत की सूची में है। ढाई लाख से अधिक शब्दों वाला शब्दकोश पद्मश्री सीताराम लालस द्वारा बनाया गया। अमेरिका की लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस की 13 समृद्ध भाषाओं में

विशिष्ट प्रयास की जरूरत

व्यक्ति की मातृभाषा में शिक्षा नहीं देना उसके साथ छल है व उसके मौलिक अधिकारों का हनन भी है। राजस्थानी भाषा के व्याकरण में विशेषकर मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाडौती, वागड़ी, ढूंढाड़ी, शेखावटी, मालवी, मेवाती, बृज आदि बोलियां है इन सब से मिलकर राजस्थानी भाषा बनी है। राजस्थानी भाषा की पुरानी लिपि मुड़िया नाम से पहचानी जाती थी जिस के अन्य नाम मोड़की, महाजनी और वाणीयावटी है। इस लिपि के विकास का डॉ मोती लाल मेनारिया अकबर के दरबारी कवि टोडरमल को श्रेय देते हैं। इस लिपि में अक्षर के ऊपर बिना मात्रा लगाएं लिखा जाता है। आधुनिक काल के साथ राजस्थानी के रचनाकार देवनागरी लिपि में साहित्य सृजन करने लगे हैं। आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं में से 9 भाषाएं देवनागरी में लिखी जा रही हैं। राजस्थानी वर्णमाला की अपनी विशेषता होने से इसका व्याकरण अपना वजूद रखता है। इसकी स्वर और व्यंजन की पृथक पृथक ध्वनियां हैं, जिसका व्याकरण बहुत गहरा है । राजस्थानी भाषा के सम्मान और मान्यता की लड़ाई देश की आजादी के पहले से चल रही है। दुनिया के प्रमुख उद्योगपति प्रवासी मारवाड़ी /राजस्थानी है। सन 1950 से लेकर 80 के दशक तक सिनेमा के गीत राजस्थानी में देखने–सुनने को आते हैं। राजस्थानी यहां के रोजगार की भाषा बने यह बहुत आवश्यक है। यूनेस्को की विलुप्त होने वाली सूची में इसे बचाने के लिए जिस तरह अरुणाचल प्रदेश की वांचो भाषा और बवंग लोसू नाम से नई लिपि की रचना कर दी गई, उत्तराखंड में ग वाली को रोजगार से जो ने के प्रयास किए गए, वहीं मणिपुर में स्थानीय भाषा कोक–बोरोक के विकास के लिए विशिष्ट प्रयास किए गए शासकीय कर्मचारी, विशिष्ट अधिकारी और जनप्रतिनिधियों की स्थानीय भाषा में शिक्षण हेतु कक्षा लगाई गई ऐसी ही जरूरत राजस्थानी के साथ लगती है।

राजस्थानी भाषा का विकास

राजस्थानी भाषा के विकास क्रम में इसका नाम मरू भाषा था, सन् 778 वि.संवत 835 में रचित कुवलयमाल ग्रंथ की रचना जैन संत उद्दतन सूरी ने कर तत्कालीन प्रचलित 18 भाषाओं के नाम भी उसमें उद्धृत किए। भाषा विज्ञानी जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक लिंग्विस्टिक ऑफ सर्वे ऑफ इंडिया में राजस्थान प्रांत की भाषाओं का नाम राजस्थानी दिया। भारतीय भाषा परिवार में राजस्थानी का छठा और दुनिया में सोलहवां स्थान है। यूनेस्को की एटलस ऑफ वर्ल्ड लैंग्वेज इन डेंजर के हिसाब से विश्व की 230 भाषाएं समाप्त हो गई हैं। भारत की 197 भाषाओं के साथ 2064 भाषाएं अपने पतन की और बढ़ रही हैं, समय पर इनका संरक्षण नहीं किया गया तो यह लुप्त हो जाएंगी। विद्वान लोग इसका सबसे ब ा कारण भाषा को रोजगार की भाषा नहीं बनाना बताते हैं। इन भाषाओं में विशिष्ट पुरस्कार भी है, एक समृद्ध साहित्य लिखा जा रहा है, लेकिन रोजगार का अभाव है। चीन, जापान, कोरिया जैसे कई देश ने निरंतर तरक्की कर अपनी मातृभाषा के साथ शिक्षा, तकनीक और रोजगार का प्रबंधन किया है।

राजस्थानी का स्थान है। 2011 की जनगणना में 4 करोड़ 50 लाख से अधिक लोगों ने अपनी मातृभाषा राजस्थानी लिखवाई। राजस्थानी भाषा में यूजीसी नेट की परीक्षाएं होती है, फेलोशिप दी जाती है नेपाल और मॉरीशस देश में जिसे मान्यता दे रखी है, तथा साहित्य अकादमी के पुरस्कार दिए जाते रहे हैं।

राजस्थानी भाषा का विगसाव

विस्तृत फलक पर देखा जाए तो दिल्ली का धौळा कुआं, उत्तराखंड की नैनी ताळ और हरियाणा की पीळी भींत शब्दों ने राजस्थानी के विस्तार की यात्रा को स्वत: प्रमाणित किया है, यह राजस्थानी के देशज शब्द हैं लेकिन इतनी दूर इनका स्थायित्व राजस्थानी भाषा का विगसाव है। 25 अगस्त 2003 से जिसकी मान्यता के संबंध में राज्य सरकार द्वारा सर्व सम्मत प्रस्ताव केंद्र में भिजवा रखा है। राजस्थानी भाषा की अकूत साहित्य संपदा है, उसे संवैधानिक दर्जे के अभाव में राजस्थान का नौजवान पिछड़ता जा रहा है। राजस्थानी की कोई लिपि नहीं होना बताकर भ्रम पैदा किया जा रहा है, जबकि देश प्रदेश के कई संग्रहालय में लाखों बहिया और पांडुलिपियां राजस्थानी की मौजूद है जिसे पढ़ने वाले और समझने वाले नहीं हैं। राजस्थानी की मान्यता के साथ रोजगार के दरवाजे खुलेंगे। राजस्थानी नाटक, लोक कला की परंपराओं, रंगमंच, रेडियो उद्घोषक, पत्रकार, लेखक, सिनेमा उद्योग, कहानीकार, निर्देशक आदि के लिए रोजगार के अवसर मिलेंगे। पर्यटन विभाग राजस्थानी के कार्यक्रम से लोक कला और संगीत का प्रचार-प्रसार कर देश में पर्यटन को बढ़ावा दे सकेगा। आधुनिक तकनीक के साथ अनुवाद का सॉफ्टवेयर भी तैयार किया जा सकता है। राजस्थानी के अखबार, टीवी चैनल आदि के साथ-साथ विद्यालय महाविद्यालय में अध्यापक प्राध्यापक के पदों की भर्ती के अवसर मिलेंगे। 21 फरवरी अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की सार्थकता तभी रहेगी जब 8 करोड़ लोगों को उसकी मातृ भाषा का सम्मान मिलेगा।

यथोचित सम्मान लौटाएं

राजस्थानी के लिए 156 विधायकों ने अपनी भावना से मुख्यमंत्री को अवगत कराया है। इस संबंध में 2022 के बजट सत्र में इस विषय पर श्री बिहारीलाल बिश्नोई ने लंबी तर्कसंगत बहस विधानसभा में प्रस्तुत की। इससे पहले शीतकालीन सत्र में भी विधायक जोगेश्वर गर्ग ने पुख्ता प्रमाण के साथ राजस्थानी पर अपनी बात रखी लेकिन राज्य सरकार ने इस विषय को युवाओं के रोजगार से नहीं जोड़ा। अन्य राज्यों की भांति राजस्थानी को प्रदेश की राजभाषा बनाकर यहां के नौजवानों के लिए रोजगार के अधिक अवसर विकसित किए जा सकते हैं, जैसा कि झारखंड में 18 भाषाओं को प्रदेश की राजभाषा बनाया गया है। केंद्र सरकार में भेजा गया प्रस्ताव लंबे समय से अनुत्तरित है। इस विषय पर गंभीरता नहीं दिखाने से लाखों प्रवासी राजस्थानी के श्रम और शक्ति को सम्मान नहीं मिल पा रहा है। प्रवासी राजस्थानी भाषा के राजदूत के साथ विदेशों में आर्थिक मजबूती प्रदान कर रहे हैं। वे सफल उद्यमी के रूप में तो है ही परंतु अपनी मातृभाषा से भी उतना ही प्रेम करते हैं। प्रत्येक राजस्थानी अपनी मायड़ भाषा का सम्मान चाहता है, वह देश की रक्षा पंक्ति में अग्रणी स्थान पर बना हुआ है। महावीर और परमवीर चक्र की सूची में उसका सर्वोच्च स्थान है। अपनी कला और संस्कृति के साथ वह राजस्थानी भाषा में शिक्षा का विकल्प तलाश रहा है। सरकारों को चाहिए अति शीघ्र राजस्थान के लोक कला, संगीत, सिनेमा के लिए विशेष प्रबंधन करते हुए प्रदेश के नौजवानों हेतु शिक्षा और रोजगार में विशेष आरक्षण की व्यवस्था देवे, राजस्थानी को आठवीं अनुसूची में जोड़ें। राजस्थानी प्रदेश की राजभाषा बने, प्राथमिक शिक्षा में उसे लागू किया जाए और तृतीय भाषा के रूप में प्रदेश में अध्ययन अध्यापन कराया जाए जिससे भावी पीढ़ी को अपने सांस्कृतिक गौरव का आभास होगा। संसद के मानसून सत्र 2022 में राजसमंद सांसद दीया कुमारी द्वारा लाया गया निजी विधेयक इसी बात को बल देता है कि अति शीघ्र जन भावनाओं का सम्मान करते हुए गणतंत्र में जनता की मांग को प्रखरता से स्थान दिया जावे यदि समय रहते इन सभी पहलुओं पर उचित कदम नहीं उठाए गए तो भविष्य में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला एवं राज्यसभा सभापति जगदीप धनकड के योगदान पर भावी पीढ़ी प्रश्नचिह्न लगाएगी। देश के सर्वोच्च सदन में उनके जनप्रतिनिधि अपने लोगों की जन भावनाओं को सम्मान नहीं दे सके। विशेषकर सदन की कार्यवाही में भाग लेने वाले सांसद भी राजस्थानी में अपनी बात पटल पर नहीं रख पाएंगे इससे बढ़ा दुर्भाग्यपूर्ण कुछ नहीं हो सकता। यह आम राजस्थानी की अस्मिता उसके श्रम कल्याण और सांस्कृतिक गौरव की बात है। राजस्थानी को रेडियो टीवी, विश्वविद्यालय आदि राजकीय संस्थाओं में गरिमा पूर्ण रूप से प्रयोग में लिया जा रहा है उच्च कक्षाओं में अध्ययन कराया जा रहा है। पद्मश्री कन्हैया लाल सेठिया, पद्मश्री सीताराम लालस, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष एवं लोकसभा सांसद पद्मश्री रानी लक्ष्मी कुमारी चुंडावत, के सृजन एवं लेखन को सम्मान नहीं मिलना एक प्रदेश के प्रदेशवासियों के मानवाधिकार का हनन है और भावी पीढ़ी की जड़ें काटने का जतन है। अपेक्षा है सरकार इन सभी बिंदुओं पर गंभीरता से विचार कर राजस्थानी भाषा को उसका यथोचित सम्मान लौटाएगी।

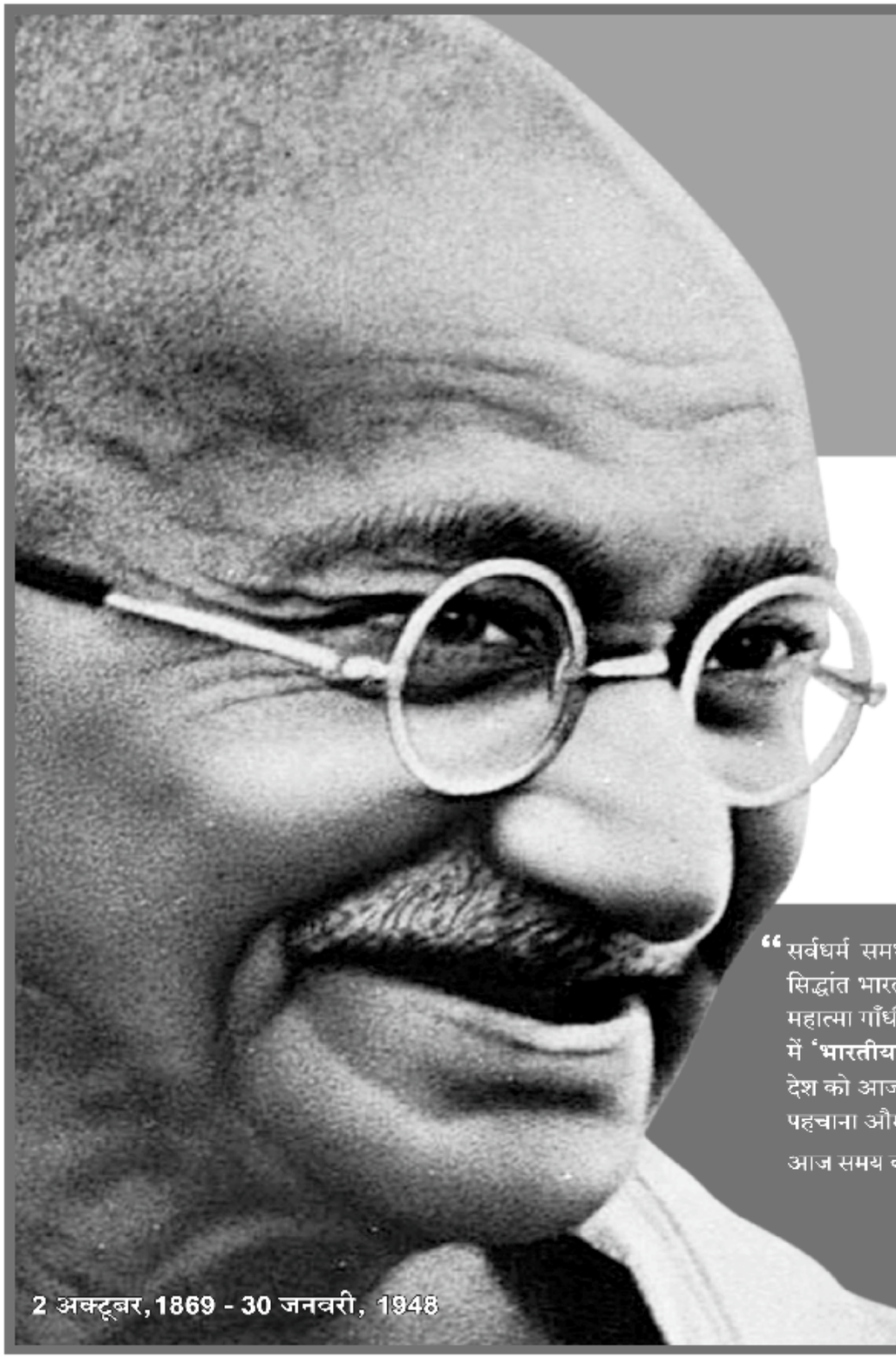

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

जिनका जीवन ही संदेश है

अहिंसा के पुजारी, आज़ादी के महानायक
राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी
की जयन्ती पर शत शत नमन

"सर्वधर्म समभाव, अहिंसा, अपरिग्रह, सत्य, मानवीय मूल्य, वसुधैव कुटुम्बकम ये सभी सिद्धांत भारतीयता के प्रतीक हैं। हमारे देश की विचारधारा इन्हीं सिद्धांतों की परिचायक है। महात्मा गाँधी, जीवन पर्यन्त इन सिद्धांतों पर चले। उनका जीवन एक संदेश था। वे सही मायने में **'भारतीयता'** के प्रतीक और महापुरुष थे। उन्होंने अहिंसा में छिपी आवाज को समझा और देश को आजादी दिलाई। उनके जीवन चरित्र से आज समूचे विश्व ने भारत की विचारधारा को पहचाना और संबोधित किया।

आज समय की मांग है कि अमन-चैन के साथ बापू के हर सपने को साकार करने में जुट जायें।"

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

भारत की सरजमीं पर फिर दौड़ेगा रफ़्तार का 'राजा'

विष्णु शर्मा हितैषी

भारत की सरजमीं पर चीतों को देखने का इंतजार सात दशक बाद खत्म हो गया। नामीबिया से आठ चीते विशेष विमान से 17 सितम्बर 22 को ग्वालियर पहुंचे। फिर चिनूक हेलीकॉप्टर से मध्यप्रदेश के श्योपुर स्थित कूनो राष्ट्रीय उद्यान ले जाए गए, जहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बॉक्स खोलकर इन्हें क्वारंटीन बाड़े में छोड़ा। प्रधानमंत्री ने कहा, 'कूनो में चीता फिर से दौड़ेगा तो यहां जैव विविधता बढ़ेगी।'

कूनो राष्ट्रीय उद्यान में आठों चीते अपने-अपने बाड़े में उछल-कूद करते मस्ती में हैं। वे परोसे गए भोजन को भी चाव से खा रहे हैं। फ्रेडी और एल्टन दोनो भाई अपने पृथकवास बाड़े में खुश हैं। सावन्नाह और साशा बहनें भी अब सहमी सी नहीं दिखती। चार अन्य चीते ओबान, आशा, सिबली और सैसा भी नए वातावरण का आनंद ले रहे हैं। इन पांच मादा और तीन नए चीतों का भारतीय नामकरण किया जाना है। जिनकी उम्र 30 से 66 माह के बीच है।

प्राकृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन के अद्वितीय स्थलों को समेटे मध्यप्रदेश के श्योपुर जिले के कूनो नेशनल पार्क में इन अफ्रीकी चीतों ने पर्यटन का नया द्वार खोल दिया है। इन्हें निहारने के लिए पर्यटकों में उत्सुकता नजर आ रही है, इसकी बानगी हैं, वो फोन कॉल्स और ई-मेल जो पार्क प्रबंधन के पास लगातार आ रहे हैं। जिसमें वे जानना चाहते हैं कि इस चीता समूह के दीदार कब होंगे। चीतों ने थोड़े समय पहले ही क्वारंटीन की अवधि पूरी की है। लेकिन यह तय नहीं हो पाया है कि इन्हें पर्यटकों के सामने कब लाया जाएगा। कूनो में 80 हजार से अधिक वन्यजीवों का कुनबा है, लेकिन आने वाले समय में चीते यहां का मुख्य आकर्षण होंगे। द. अफ्रीका से 12 और चीतों को इसी साल के अंत अथवा अगले वर्ष के प्रारंभिक महीनों में कूनों लाने की योजना पर भी काम हो रहा है। द. अफ्रीका का प्रतिनिधि मंडल कूनो पार्क में चीतों के आवास के विशेष बाड़ों और मौसम आदि से पूरी तरह संतुष्ट है। द. अफ्रीका सरकार को इसकी रिपोर्ट पेश भी कर दी गई है। मध्यप्रदेश के मुख्य वन सचिव अशोक बर्नवाल ने भी संकेत दिए हैं कि और चीतों को लाने के लिए द. अफ्रीका और भारत सरकार के बीच एमओयू पर बातचीत शुरुआती चरण में है।

चीता एक मात्र बड़ा मांसाहारी पशु है, जो भारत से पूरी तरह विलुप्त हो चुका है। साल 1952 में भारत सरकार ने आधिकारिक रूप से देश से चीतों के लुप्त होने की घोषणा की थी। जो चीज हम गंवा देते हैं वह फिर बहुत मुश्किल से मिलती है। लगभग 13 वर्षों के ठोस वैश्विक प्रयासों के बाद 17 सितम्बर 2022 को चीते का देश की धरती पर पुनः पदार्पण हुआ। चीते का आवास उसी मध्यप्रदेश में बनाया गया है, जो बाघों के लिए सबसे सुरक्षित सिद्ध हुआ है। मध्यप्रदेश में बाघों की संख्या सर्वाधिक 526 है। अब वहां का कूनो उद्यान नामीबिया से आए आठ चीतों का भी घर हो गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने जन्मदिन पर विशेष विमान से लाए गए इन आठों चीतों को उद्यान में छोड़ा। भारत में चीतों को बसाने और बचाने का यह विशेष अभियान है। इसे दुनिया गौर से देख रही है। यह नाकाम नहीं हो, इस विशेष ध्यान देना होगा।

टाइगर रिजर्व की शुरुआत पचास साल पहले तब हुई थी, जब बाघों की तादाद घटकर 1800 के करीब पहुंच गई थी। उससे पहले 1947 में लगभग 40,000 बाघों का अनुमान लगाया गया था। मतलब आजादी के बाद भी बाघों का कायरता के साथ खूब शिकार किया गया। वैसे, टाइगर रिजर्व से फायदा यह हुआ कि बाघों की तादाद पिछली सदी के आखिरी दशक में 3,500 के करीब पहुंच गई, लेकिन फिर ढिलाई शुरू हो गई, तो साल 2006 मे बाघों की

संख्या लगभग वहीं पहुंच गई, जहां टाइगर रिजर्व से पहले थी। आज देश में टाइगर रिजर्व की संख्या नौ से बढ़कर 52 हो गई है। शिकारियों को रोका गया है, देखभाल बढ़ी है, तो देश में बाघों की संख्या बढ़कर 2,900 के करीब पहुंच गई है। हालांकिन इनमें से भी 1,900 के करीब बाघ ही टाइगर रिजर्व में निवास करते हैं। बाघ संरक्षण में हम बीच में ढीले पड़ गए थे, लेकिन चीता के मामले में अगर हम ढीले पड़े और उनकी संख्या फिर घटी, तो बाहर से हमें चीता देने को कोई फिर तैयार नहीं होगा। अफसोस है कि कभी भारत देश में लाखों की तादाद में चीते थे, लेकिन आज दुनिया भर में महज 7,100 चीते ही बचे हैं। एशिया में केवल ईरान में 12 से 40 के बीच चीते बचे हैं। चीते ज्यादातर पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका में बचे हैं। लगभग चार हजार चीते अंगोला, बोत्सवाना, मोजाम्बिक, नामीबिया, दक्षिण अफ्रीका और जाम्बिया में निवास करते हैं। केन्या और तंजानिया में लगभग एक हजार चीते हैं।

हमारे देश में कई वन्यजीवों का जीवन खतरे में है। अनेक प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं और कई विलुप्ति की कगार पर हैं। इसकी वजहें अभयारण्यों के रख-रखाव में लापरवाही और बाहरी लोगों की गतिविधियां बढ़ने से वहां के वन्यजीवों का स्वाभाविक जीवन प्रभावित होना है। मौसम का बदलता मिजाज भी कई जीवों को रास नहीं आता। चीता संवेदनशील प्राणी है। वन्यप्राणी विशेषज्ञों के अनुसार अगर उसे स्वाभाविक रहन-सहन नहीं मिल पाता, तो उसकी प्रजनन क्षमता पर असर पड़ता है। उसके खान-पान की आदतें बदल जाती हैं, चिड़चिड़ा होकर कई बार वह आदमखोर हो जाता है। आजकल अभयारण्यों और राष्ट्रीय उद्यानों को पर्यटन के विकास का एक साधन माना जाता है। इस तरह उद्यानों के आसपास अनेक व्यावसायिक गतिविधियां शुरू हो जाती हैं। सैर-सपाटा करने आए लोग वन्यजीवों के जीवन में बाधा उत्पन्न करते हैं। फिर उनके भोजन-पानी की माकूल व्यवस्था न हो पाना भी आम शिकायतों में एक है। इसलिए कूनो राष्ट्रीय उद्यान के चीतों का जीवन इस बात पर निर्भर करेगा कि उनके संरक्षण को लेकर कितनी संजीदगी दिखाई जाती है।

मिशन 'लाइफ' की ओर कदम

युगों से भारत प्रकृति रक्षति रक्षिता पर विश्वास करता आया है। हम आबादी के आकार और विकास संबंधी जरूरतों के बावजूद बाघ, शेर, एशियाई हाथी, घड़ियाल और एक सींग वाले गैंडे सहित कई महत्वपूर्ण प्रजातियों व उनके पारिस्थितिक तंत्रों को संरक्षत करने में सक्षम रहे हैं। बीते कुछ वर्षों में भारत प्रोजेक्ट टाइगर, प्रोजेक्ट लायन और प्रोजेक्ट एलिफेंट के साथ बेहद महत्वपूर्ण प्रजातियों की तादाद बढ़ाने में समर्थ रहा है। जहां एक ओर बाघ, वन प्रणालियों की एक प्रमुख अग्रणी प्रजाति का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं चीता खुले जंगलों, घास के मैदानों और चारागाहों के शून्य को भर देगा। चीते की वापसी धरती के टिकाऊ पर्यावरण के निर्माण की दिशा में एक महत्वाकांक्षी कदम है, क्योंकि एक शीर्ष परभक्षी की वापसी ऐतिहासिक विकासवादी संतुलन को बहाली और शिकार के आधार पर संरक्षण पर व्यापक प्रभाव डालती है। चीता उस विकासवादी स्वाभाविक चयन प्रक्रिया का हिस्सा रहा है जिसके कारण हिरण और चिंकारा जैसे प्रजातियों में उच्च गति से अनुकूलन हुआ है। चीते की वापसी लुप्तप्राय प्रजातियों और खुले वन पारिस्थितिकी तंत्र सहित उसके शिकार-आधार की सुरक्षा को सुनिश्चित करेगी, जो कि कुछ हिस्सों में विलुप्त होने के कगार पर पहुंच चुकी हैं।

-भूपेन्द्र यादव
केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री

Prateek Khicha
Director

KPL

KHICHA PHOSCHEM LTD.

(Manufaeturer & Supplier of Minerals & Organic Fertilizer)

204, Vinayak Business Centre, Fatehpura, Pulla Road, Udaipur - 313001 (Raj.)
Phone : 0294-2452151 (O) 9829062804, 7737572626
E-mail : khichaphoschem@rediffmail.com, Website : www.khichaphoschem.com

आधुनिक भारत के निर्माता पं. नेहरू

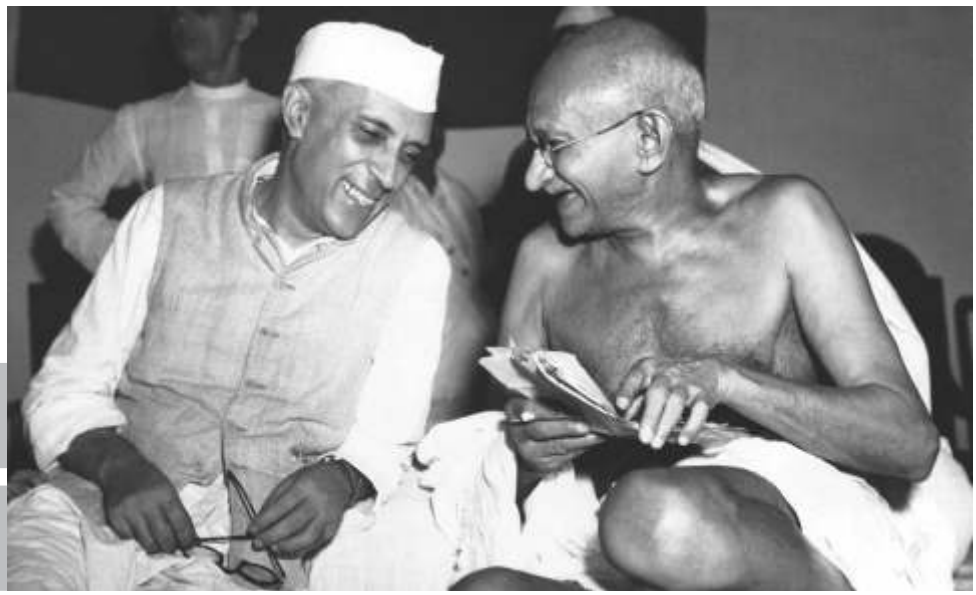

जन्म
14 नवम्बर 1889

निधन
27 मई 1964

डॉ. सत्यनारायण सिंह

महात्मा गांधी की हत्या के बाद पं. नेहरू ने आत्म विश्वास के साथ स्वतंत्र भारत के भविष्य का ध्वज थामा। मज़दूरों तथा बच्चों के कल्याण व सुधार सम्बंधी महत्वपूर्ण प्रयास किए। बच्चों से उन्हें बेहद प्यार था। उनमें वे भारत का स्वर्णिम भविष्य तलाशा करते थे। बच्चे भी उन्हें 'चाचा नेहरू' कहते थे। सन् 1948 में नई औद्योगिक नीति का निर्माण कर नए भारत के निर्माण की आधारशिला रखी। जवाहर लाल नेहरू ने पूरे विश्व को राष्ट्रभक्ति, ज्ञान, विश्व बंधुत्व, सह अस्तित्व तथा मानवतावादी सिद्धान्तों के प्रकाश से आलोकित किया। उन्होंने भारतीय इतिहास के गहन अध्ययन और प्रकाशन के साथ-साथ विश्व के इतिहास को भी नई दृष्टि से देखा, परखा और अनुशीलन किया। उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में योगदान के साथ प्रेम और शांति का संदेश दिया, आम जनता के कल्याण को महत्व दिया। उन्होंने 1935 में स्पष्ट कर दिया था कि हम जनता की सच्ची हुकूमत चाहते हैं जो जनता द्वारा और जनता के हक में हो और जिससे आम आदमी की गरीबी और मुसीबतें दूर हो जाएं। स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। महात्मा गांधी का उन पर पूरा भरोसा था। उन्होंने ही राष्ट्रीय राजनीति में नेहरू को नेतृत्व की बागडोर प्रदान की। प्राचीनता से नवीनता की ओर ले जाने वाले नेहरू के विचारों और उसके अनुरूप उठाए गए कदमों से यह देश सदैव उनका आभारी रहेगा। 26 जनवरी 1950 को भारत को जो विधान दिया गया वह विश्व का सबसे अधिक प्रगतिशील, मानवतावादी राजनीतिक दस्तावेज है। जिस के अनुसार नागरिकों की शैक्षणिक, सामाजिक व आर्थिक जरूरतों की पूर्ति, निरंकुश शासन पर रोक, समानता,समता, मानवाधिकारों की गारंटी दी गई है। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। नेहरू ने कहा था जब तक एक व्यक्ति भी देश में भूखा या नंगा रहेगा, स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। भारत में प्रजातंत्र को सफलता मिली है फिर भी प्रजातंत्र गुणवत्ता अधिक चाहता है, उसे अनुशासन, योग्यता, सहयोग व लगन की आवश्यकता है। जवाहर लाल नेहरू हर कार्य योजनाबद्ध तरीके से करते थे, बिना योजना के कार्य उनके सिद्धान्तों के विरूद्ध था। उन्होंने नियोजित विकास व मिश्रित अर्थव्यवस्था के आधार पर विकास कार्य प्रारंभ किए। योजना आयोग की 1950 में स्थापना कर देश के चहुंमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त किया। देश में जमींदारी प्रथा समाप्त हुई, किसान जमीन का स्वामी बना, ग्रामीण विकास हेतु सामुदायिक योजनाएं प्रारंभ हुईं जिससे ग्रामीण विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हुई, खेती-बाड़ी में सुधार हुआ। सिंचाई परियोजनाओं के तहत भाखड़ा नांगल, हीरा कुण्ड, नागार्जुन आदि बड़े बांध व नहरों का निर्माण किया। पंचायत राज व्यवस्था प्रारंभ कर ग्रामीणों की शासन व्यवस्था में भूमिका बढ़ाई। बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना व इस्पात व भारी मशीनों का उत्पादन शुरू हुआ। दुर्गापुर, भिलाई, राउरकेला में लोहे के प्लांट स्थापित किए गए। नेहरू विज्ञान व तकनीकी विकास के पक्षधर थे, वैज्ञानिक प्रयोगशालाएं व विज्ञान की उच्च शिक्षा का प्रबंध किया। आज भारत में प्रतिभाशाली छात्रों, श्रेष्ठ वैज्ञानिकों तथा प्रोद्योगिक विशेषज्ञों की कमी नहीं है। मीट्रिक प्रणाली का प्रचलन प्रारंभ किया गया दशमलव पद्धति प्रारंभ की गई। देश में अणुशक्ति का विकास हुआ। नेहरू ने जल्दी से जल्दी देश को एक आधुनिक राष्ट्र बनाने की नींव रखी। उन्होंने विश्व शांति के लिए अथक प्रयत्न किया, धर्म निरपेक्षता, निर्गुट आंदोलन, पंचशील की नीतियों के अंतर्गत अफ्रीकी देशों व कोरिया, स्वेजनहर, इण्डोनेशिया, न्यूगिनी, साईप्रस, कांगों आदि राष्ट्रों में शांति स्थापना व आर्थिक व तकनीकी दृष्टिकोण के बदलाव को प्रोत्साहन मिला। जिस अंग्रेजी साम्राज्य ने दो सौ वर्ष तक भारत पर राज किया, अत्याचार किए उसे भी तटस्थता, विश्व शांति, बंधुत्व व मानवता का पाठ पढ़ाया, संबंधों में सुधार किया। संयुक्त राष्ट्र संघ को मजबूती दी व नि:शस्त्रीकरण की मांग की जोरदार ढंग से पहल की। पण्डित नेहरू ने विश्व शांति के लिए जो प्रयास किए। उन्हें दुनिया भुला नहीं पाएगी।

सरस
भीलवाड़ा डेयरी
धनतेरस एवं दीपावली पर्व की
हार्दिक शुभकामनाऐं
Celebrating
50 Years
ANNIVERSARY
रामलाल जाट
राजस्व मंत्री, राजस्थान सरकार
पूर्व अध्यक्ष, भीलवाड़ा दुग्ध संघ
मावा
पनीर
दही
घी
KESAR PISTA
-: संचालक मण्डल सदस्य :-
निम्बाराम गुर्जर
गोपाल कुमावत
सुशीला मीणा
भैरूलाल जाट
मानवेन्द्रसिंह
केवलचंद जाट
इन्द्रादेवी गुर्जर
केदार शर्मा
नानालाल जाट
मैना माली
हेमराज गुर्जर
सरस
भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड़
5, कि.मी. अजमेर रोड़, भीलवाड़ा (राज.) -311001 फोन नं. -01482-324731
(ISO 9001 & 2200 EMS & GMP Certified Organisation)
सरस

हर तरफ आदमी का शिकार आदमी

वेदव्यास

जिस तरह झील और तालाब के पानी को जलकुंभी भी प्रदूषित करती है उसी तरह साहित्य और समाज में भी अंधकार, स्वार्थ, आत्ममुग्धता और गिरोह बंदी की 'जलकुंभी' आज सबसे बड़ी चुनौती है। मुझे लगता है कि हम सब कहीं न कहीं समय के अंधेरे बंद कमरे में कैद हैं। हमें अपने पर भी विश्वास नहीं है तो अपने शब्दों पर भी कोई आस्था नहीं है। ऊपर से नीचे तक साहित्य में भी यही हरि कीर्तन चल रहा है कि तुम हमें पहचान दो, नहीं तो हम तुम्हें जी भर कर कोसेंगे। तुम हमें सुनों, नहीं तो हम तुम्हारे चेहरे पर कालिख पोत देंगे। इसके साथ ही कुछ लोग साहित्य में ऐसी '' मनुस्मृति'' लागू करने का भी सुनियोजित प्रयास करते हैं कि जैसे कविता तो केवल अपनी बपौती है, कहानी पर केवल उनका ही अधिकार है। तो आलोचना में केवल मेरे गुरुजी का ही परिवार है भला पंडितों के चौके में अछूतों की घुसपैठ कैसे हो सकती है। ये लोग फरमाते हैं कि बच्चों के लिए लिखने वाला, अनुवाद करने वाला और शोध अनुसंधान करने वाला भी भला कोई साहित्यकार होता है ?

साहित्य के इस समाजशास्त्र में प्राय: पाठ्यक्रम समितियों के संचालक, संस्थान-प्रतिष्ठानों के प्रतिपालक, लघुपत्रकारों के आत्मचालक, जाति बिरादरी के प्रकाशक, समाचार पत्रों के साहित्यनुमा संपादक, धनपतियों के लखटकिया पुरस्कार और सम्मान प्रायोजित करने वाले संयोजक, पुस्तकों को क्रय-विक्रय करने वाले बड़े अहलकार, आंदोलनों को तोड़ने वाले व्यक्तिवादी दस्ते, वादों की संकीर्णता से ओत-प्रोत गुट और हजार-पांच सौ रुपए का कार्यक्रम बांटकर दूरदर्शन और आकाशवाणी से साहित्य की राजनीति करने वाले स्वयंभुओं से विचार और शब्द का यह बाजार भरा पड़ा है।

ऐसे साहित्यिक जीव, भले ही सलमान रुश्दी को मौत के घाट उतार दिया जाए, इंतजार हुसैन को मार दिया जाए और तसलीमा नसरीन को कत्ल कर दिया जाए, तब भी चुप रहेंगे और हरिशंकर परसाई के हाथ पैर तोड़ दिए जाएं, भीष्म साहनी की कथा फिल्म 'तमस' को जला

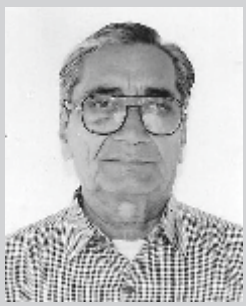

दिया जाए और जगदीश चतुर्वेदी को नौकरी से निकाल दिया जाए, तब भी चुप रहेंगे। इन्हें केवल चिंता है क्योंकि यह गणेशलाल व्यास ''उस्ताद'', मनुज देपावत, मदन डागा, प्रकाश जैन, ईश्वरचंद्र, चंद्रदेव शर्मा, रांगेय राघव, डॉ. सुधीन्द्र, कवि हरनाथ, मन्नालाल परदेशी, सुमनेश जोशी, जयनारायण व्यास, हरीश जोशी, जमना प्रसाद ठाडा 'राही', गोवर्द्धन हेड़ाऊ, गणेशचन्द्र जोशी 'मन्वन्तर,' रामनाथ व्यास 'परिकर', विजयसिंह पथिक, हरिभाऊ उपाध्याय, आनंद कुरैशी जैसे अपने अनगिनत शब्द सहकर्मियों की परम्परा से, विरासत से और उनके परिवार से अपना कोई रिश्ता-नाता नहीं जानते। मनुष्य और लोक कल्याण की रक्षा में तैनात यह फर्जी शब्द सैनिक अपने प्रदर्शन में इतने आत्ममुग्ध हैं कि न तो ये दंगों की आग में चलते हैं, न ये अराजकता की बर्फ में गलते हैं और न ही ये किसी व्यवस्था की आजन्म चाकरी से बाहर निकलते हैं। इन पर केवल एक ही भूत सवार रहता है कि आपस में एक दूसरे की उपेक्षा करो, चरित्र हनन करो, जिसके घर में घुसो उसी पर कविता, उपन्यास उतार दो और जहां से भी तन, मन, धन का रास्ता आता हो वहां पर बिना विवेक और विचार के पसर जाओ।

साहित्य के इसी समय में जब लेखक की नजर केवल अपने पर ही केन्द्रित हैं तब भला उसे समय, मनुष्य, समाज और साहित्य के लोक कल्याण पर चर्चा करना महज एक आत्मप्रवंचना जान पड़ती है। हम इस बात से हैरान हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन के बाद हमारे समाज में साहित्य एक लोकशक्ति और लोकनिर्माण की आधारभूत सामग्री क्यों नहीं बन पा रहा है। वह पीढ़ी और शब्द यात्री आज वहां लुप्त हो गए है जो वह घट के भीतर रहकर भी घट के बाहर को जीते थे।

आज साहित्य के सरोकार को ऐसी ही अनेक जलकुम्भियों ने आच्छादित कर दिया है और लेखक कुछ ऐसा अकड़ में ढीला पड़ता जा रहा है कि जो हमें नहीं पढ़ता वह समय के श्रेष्ठ सृजन से वंचित हो रहा है और यदि कोई कालिदास और मम्मट को नहीं समझता तो इससे इनका महत्व कम नहीं हो जाता। संवाद और सम्प्रेषण के इस अभाव में कविता के पाठक नहीं है। पुस्तकों के ग्राहक नहीं है, अच्छी रचना के प्रकाशक नहीं है तो साहित्य के कोई संवाहक नहीं है। लेकिन लेखक और साहित्य के इस समाजशास्त्र और मनुष्य और समाज के इस व्यवहार ज्ञान को यह आत्मज्ञानी समझना भी नहीं चाहता। बस अपने अहंकार के टापू का एकछत्र सुल्तान बनकर वह सारी बातें तो करता है लेकिन शब्द और कर्म की दूरी को पहचानने को कोई प्रयास नहीं करता।

स्थिति इतनी बदतर है कि कवि से कहानी पर, कहानीकार से कविता पर, निबंधकार से बाल साहित्य पर और इसी तरह एक भाषा के लेखक से दूसरी भाषा के साहित्य सृजन पर अब कोई संवाद करना ही नितांत असंभव हो गया है। जो पुस्तक खरीदता नहीं वही सबसे ज्यादा चिल्लाता है कि आजकल पुस्तकें बिकती ही नहीं है और जो घर में टी.वी., फ्रीज, सोफा सेट पर बैठा है वही सबसे अधिक हल्ला मचाता है कि किताबों के दाम बढ़ गए हैं। जो प्रकाशकों के यहां दण्ड बैठक लगाता है सारे प्रतिष्ठानों के गलियारों में घुड़दौड़ लगाता है वही सबसे पहले साहित्य में ऐलान करता है साहित्यकारों को कोई पूछता ही नहीं है।

फिर जो लोग साहित्य में विचार और विवेक की इस अकाल संध्या पर सोवियत संघ के विभाजन से अपनी सात पीढ़ियों को कोसते समाजवादी दर्शन का घर छोड़कर भाग रहे हैं, जो लोग साहित्य में समग्रता और समन्वय की इस गरुड़ वेला पर जीवन भर जन आंदोलन और जन अभियान का बिगुल बजाते-बजाते अब निजी और वैयक्तिक पैंतरों तथा पत्रिकाओं

में सिमट रहे हैं, जो लोग साहित्य में मनुष्य और लोक मंगल की इस काली घटा पर सारी उम्र भूख, प्यास, अन्याय तथा अनाचार के खिलाफ लिखते-लिखते अब तस्करों, सियासतदानों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के दरवाजे पर मान-सम्मान के लिए बिछे पड़े हैं-भला उनसे साहित्य और समय का क्या भला होने वाला है। विवेकान्द की यह बात हमें लगातार इसीलिए आदर्श लगती है कि यहां शब्द के कुएं में एक छोटा मेंढ़क या तो दूसरों बड़े मेंढ़क को दुनिया का रहस्य समझा रहा है या फिर कवीन्द्र रवीन्द्र की विराटता को अपनी सुविधा के दंभ से ''एकला चालो रे'' में बदल रहा है।

आज इस साहित्यशीलता के बीच जो लोग साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता का अंतर नहीं मानते, उपनिवेशवाद और दलितवाद का भेद नहीं पहचानते तथा अधिनायकवाद और लोकतंत्र का फासला नहीं जानते उन्हें अब विनम्रता से केवल यही कहा जा सकता कि-

'' अबकी हम बिछुड़े तो शायद कभी ख्वाबों में मिलें, जैसे कुछ सूखे हुए फूल किताबों में मिलें।'' (अहमद फराज)

क्या हम नहीं जानते कि दुनिया अब केवल एक टांग पर ठहरी हुई है। क्या हम नहीं समझते कि दुनिया अब वंशानुगत जाति और नस्लों की लड़ाई में फंस गई है, क्या हम नहीं मानते कि दुनिया अब विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में केन्द्रित आर्थिक प्रभुसत्ताओं में सिमटती जा रही है और कभी हम यह भी नहीं देखते कि दुनिया अब एक मुद्रा और मंडी में बदल गई है। भावना, संवेदना, मनुष्यता, सच्चाई और अहिंसा का स्थान अब आतंकवाद, साम्प्रदायिक उन्माद, राजनीतिक अपराधीकरण और जात-बिरादरी की भीषण मारकाट ने ले लिया है। हे कवि मन! हे साहित्य देवता!! हे शाश्वत के रचयिता!!! क्या तुझे मनुष्य के इर्द-गिर्द घटता हुआ यह सब नहीं दिख रहा है? क्या तू इतना निस्तेज और अकेला हो गया हैं कि तुझे अपने से लड़ना ही सबसे आसान लगने लगा है- और क्या तू भी केवल शब्दों का व्यापारी और निजी कुंठाओं का अंहकारी हो गया है जो तेरे भीतर अपने राग-द्वेष के अलावा कोई दूसरा कथानक बोलता ही नहीं है? क्या हम अपने आपसे और अपनी कविता से कभी यह नहीं पूछ सकते कि मनुष्य का यह अमानवीयकरण, यंत्रीकरण, संचारी करण और आत्मनिर्वासन इस क्षण शब्द ब्रह्मा की साधना से भला कैसे रोका जा सकता है?

हर तरफ हर जगह बेशुमार आदमी
फिर भी तन्हाइयों का शिकार आदमी,
हर तरफ भागते दौड़ते रास्ते
हर तरफ आदमी का शिकार आदमी। (निदा फाजली)

बहरहाल यह मंजर एक बहुत बड़ी चुनौती है और यह सफर बेहद एकाकी है। लेकिन मेरा यह संवाद अब केवल साहित्य शास्त्र के प्राचार्यों तक सीमित नहीं है अपितु शब्द के सम्पूर्ण समाजशास्त्र और चेतना के विराट मनोविज्ञान पर केन्द्रित है।

हमारे सवाल-मेरे समय में गर्भ से पैदा होते हैं अत: इनका उत्तर भी हमें कहीं अपनी परंपरा की उस उज्जवल धारा में ही ढूंढना होगा।

यदि इस समय का कोई भी दर्द आपको नहीं सताता तो फिर आप क्यों अपने शब्दों और ऋचाओं की दुहाई दे रहे हैं। शब्द को पकड़ने से पहले कृपया उसकी तासीर तो समझ लें ताकि हम तत्काल के सुख और चिरन्तन के दु:ख को अपने शब्द संघर्ष में साक्षात कर सकें। मन और विचार के बीच फैली यही 'जलकुंभी' हमारे साहित्य समाज और समय को सबसे अधिक तिलमिलाकर खा रही है क्योंकि हम केवल अंहकार और आत्ममुग्धता में आकंठ डूबे हैं और निजीकरण के जंगल में हिंदू-मुस्लिम धर्मोन्माद को चकित नेत्रों से देख भर रहे हैं।

(लेखक की पुस्तक' अब नहीं तो कब बोलोगे' से साभार)

दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएं

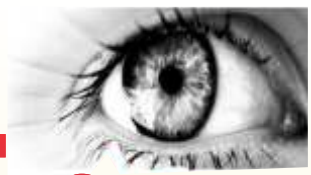

निःशुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

सोमवार से शनिवार

तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में निःशुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,
नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली),
उदयपुर-313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

'नेताजी' लिख गए मध्यमार्गी राजनीति की नई इबारत

राजनीति में कदम रखने से पूर्व मुलायमसिंह यादव ने कुश्ती के क्षेत्र में प्रसिद्धि हासिल की। अखाड़े में विरोधियों को धूल चटाने वाले पहलवान यादव राजनीति के अखाड़े में भी मंझे हुए खिलाड़ी साबित हुए। उनके द्वारा लिए कुछ निर्णयों ने तो राजनीति की धारा को ही बदल दिया।

उमेश शर्मा

करीब साढ़े पांच दशक तक राजनीतिक दांव-पेच के पुरोधा बनकर अपने फैसलों से राजनीति की धारा को बदल देने वाले समाजवादी पार्टी (सपा) के संस्थापक मुलायमसिंह यादव (82) का 10 अक्टूबर को निधन हो गया। उन्होंने गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में अंतिम सांस ली। अगले दिन उनके गृह नगर सैफई में राजकीय सम्मान से उनका अंतिम संस्कार हुआ। कभी कुश्ती के अखाड़े के महारथी रहे मुलायम सिंह यादव बाद के वर्षों में सियासी अखाड़े के भी माहिर पहलवान साबित हुए। वे अपने समर्थकों के बीच हमेशा 'नेताजी' के नाम से मशहूर रहे।

राम मंदिर आंदोलन के चरम के दौरान वर्ष 1992 में समाजवादी पार्टी का गठन करने वाले यादव को देश के हिंदी हृदय स्थल में धर्म निरपेक्ष सियासत के केन्द्र बिंदु के तौर पर देखा गया। संघर्षशील और जुझारू नेता के तौर पर अपनी पहचान बनाने वाले मुलायम उत्तरप्रदेश के इटावा जिले के सैफई गांव में एक किसान परिवार में 22 नवम्बर 1939 को जन्मे। वे 1996 से 98 तक देश के रक्षा मंत्री भी रहे। एक समय उन्हें प्रधानमंत्री पद के दावेदार के तौर पर भी देखा गया था। यादव दशकों तक राष्ट्रीय नेता रहे, लेकिन उत्तरप्रदेश ही ज्यादातर उनका राजनीतिक अखाड़ा रहा। समाजवाद के प्रणेता राम मनोहर लोहिया से प्रभावित होकर सियासी सफर शुरू करने वाले यादव ने उत्तरप्रदेश में ही अपनी राजनीति निखारी और तीन बार प्रदेश के सत्ता शिखर तक पहुंचे।

वर्ष 2017 में समाजवादी पार्टी की बागडोर अखिलेश यादव के हाथ में आने के बाद भी मुलायम सिंह यादव पार्टी समर्थकों के लिए 'नेताजी' बने रहे और मंच पर उनकी मौजूदगी समाजवादी कुनबे को जोड़े रखने की उम्मीद बंधाती थी। यादव समय-समय पर अनेक दलों से जुड़े रहे। इनमें राम मनोहर लोहिया की संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी और चरणसिंह का भारतीय क्रांति दल, भारतीय लोकदल और समाजवादी जनता पार्टी भी शामिल है। उसके बाद 1992 में उन्होंने समाजवादी पार्टी का गठन किया।

बाबरी विवाद के दौरान 1993 में मुख्यमंत्री के रूप में कार सेवकों पर लिए गए फैसले पर उन्होंने कहा था कि उनके लिए यह फैसला कठिन था। यादव ने उत्तर प्रदेश में अपनी सरकार बनाने या बचाने के लिए जरूरत पड़ने पर बहुजन समाज पार्टी, कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी से भी समझौते किए। वर्ष 2019 में संसद में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सत्ता में दोबारा वापसी का आशीर्वाद देकर उन्होंने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने यह बयान तब दिया जब भारतीय जनता पार्टी को उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी का मुख्य प्रतिद्वंद्वी दल माना जा रहा

समाजवादी राजनीति की त्रिमूर्ति: लालू प्रसाद, मुलायमसिंह व एचडी देवेगौड़ा

तीन बार मुख्यमंत्री

पहली बार : 1989-1991
दूसरी बार: 1993-1995
तीसरी बार: 2003-2007

आठ बार विधायक

1967, 1974, 1977, 1985, 1989, 1991, 1993, 1996

लोकसभा में पहुंचे सात बार

1996, 1998, 1999, 2004, 2009, 2014, 2019

सफरनामा

1939: उत्तरप्रदेश के इटावा जिले के सैफई गांव में जन्म

1967: राम मनोहर लोहिया की संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी से पहली बार उत्तरप्रदेश विधानसभा में प्रवेश किया।

1968: चौधरी चरणसिंह के भारतीय क्रांति दल में शामिल हुए। इस पार्टी का संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी में विलय हो गया और भारतीय लोक दल का गठन हुआ। आपातकाल (1975-77) के बाद भारतीय लोक दल का जनता दल में विलय हो गया।

1977: पहली बार मंत्री बने।

1982-87: जनता दल के प्रदेश अध्यक्ष बने।

1989-1991: पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने।

1996: उत्तरप्रदेश के मैनपुरी से पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ा, रक्षा मंत्री बने।

1998: संभल से फिर से लोकसभा सदस्य बने।

1999: संभल से फिर से सांसद चुने गए।

2003: तीसरी बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। पत्नी मालती देवी का निधन। साधना गुप्ता से विवाह किया।

2004: मैनपुरी से सांसद चुने गए।

2007: उत्तर प्रदेश विधानसभा में विपक्ष के नेता बने।

2009, 2014 और 2019 में सांसद बने।

था।

मुलायमसिंह यादव राजनीति के ऐसे मंझे खिलाड़ी थे कि जब तक विरोधी कुछ समझ पाएं वह अपने दांव से उन्हें मात दे चुके होते थे। एक ऐसा ही दांव नेताजी ने साल 2003 में चला। जब भाजपा से निकाले गए कल्याणसिंह के साथ मुलायम ने हाथ मिलाया। हालांकि इससे पहले साल 1999 में कल्याणसिंह ने अपनी अलग पार्टी भी बनाई। साल 2002 में हुए उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनाव में सिर्फ चार सीट जीत पाई। मुलायम ने कल्याणसिंह के साथ गठबंधन में सरकार बनाई और उनके बेटे राजवीर सिंह को सरकार में महत्वपूर्ण पद देकर दोस्ती निभाने से भी नहीं चूके। एक साल बाद कल्याणसिंह फिर से भाजपा में शामिल हुए, लेकिन 2009 में कल्याणसिंह ने फिर मुलायम का हाथ थामा। करीब 23 साल पहले उन्होंने अपने इसी तरह के सियासी दांव से कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के प्रधानमंत्री बनने की उम्मीदों को झटका दिया था और इसमें राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पंवार की भी भूमिका थी।

मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी ने 2012 के यूपी विधानसभा चुनाव में विरोधियों को चित्त किया और 403 में से 223 सीटों पर जीत हासिल की। उस वक्त भी माना जा रहा था कि मुलायम चौथी बार प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद संभालेंगे लेकिन, तभी उन्होंने एक और राजनीतिक दांव चला और अपने बेटे अखिलेश के नाम पर सीएम पद की मुहर लगा दी। मुलायम ने सियासी विरासत सौंपकर अखिलेश के राजनीतिक जीवन को राह दिखाई। किसी ने भी अखिलेश के नाम पर आपत्ति नहीं जताई। हालांकि, यह और बात है कि बाद में अखिलेश के नेतृत्व पर सवाल उठाकर चाचा शिवपाल यादव ने अलग राह पकड़ी। कुछ वक्त बाद मुलायम सिंह को भी साइडलाइन करके अखिलेश पार्टी प्रमुख बन गए। उन्हें अब पिता की छाया के बिना राजनीति के तपते मार्ग पर अकेले चलना होगा, क्योंकि परिवार में आत्मिक जुड़ाव अब शायद पहले जैसा न हो।

धरती पुत्र मुलायम सिंह जी यादव जमीन से जुड़े दिग्गज नेता थे। उनका सम्मान सभी दलों के लोग करते थे। उनके परिवार व समर्थकों के प्रति मेरी गहन शोक–संवेदनाएं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

मेरा मुलायम सिंह जी से कई बार संवाद हुआ। यह करीबी रिश्ता जारी रहा और मैं हमेशा उनके विचारों को सुनने के लिए उत्सुक रहता था। उनके निधन से मुझे पीड़ा हुई है। उनके परिवार और लाखों समर्थकों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

मुलायम सिंह जी यादव के निधन की खबर सुनकर दुखी हूं। समाजवादी विचारों की एक मुखर आवाज आज मौन हो गई। देश के रक्षा मंत्री और उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में मुलायमसिंह जी का योगदान सदा अविस्मरणीय रहेगा।

सोनिया गांधी

II Jai Shree Krishna II

Happy Diwali

K.L. Madhwani
Mob.: 9352743663

Amul
The Taste of India

Amul
ICE CREAM

SHRINATH
SWEETS CATERERS

Authorised Distributors of Amul Ice-Cream

Booking in : Marriage & Party for Amul Ice-Cream Parlour

E-mail: shreenathsweetscaterers@yahoo.com, amitmadhwani@yahoo.com

College Road, Outside Surajpole, Udaipur-313001 (Raj.)

मुस्लिमों की मुश्किलें ही बढ़ाएंगे पीएफआइ जैसे संगठन

शुजाअत अली कादरी

पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया पर आखिरकार प्रतिबंध लग ही गया। इसी महीने देश में लगातार दो बड़ी कार्रवाइयों के बाद यह लगभग स्पष्ट था। सरकार ने न सिर्फ पीएफआइ बल्कि इसके सहयोगी संगइनों को भी प्रतिबंधित कर दिया है। संगठन के सैकड़ों कार्यकर्ता जेल पहुंच गए हैं। पीएफआइ अपने गठन के 16 सालों में ही पतन के गर्त में समा गया। इस पर आतंकी संगठनों से संबंध रखने, हत्या, हेट कैम्पेन चलाने, दंगे भड़काने समेत कई गंभीर आरोप लगे। यह बात सिर्फ केन्द्र की भाजपा नीत सरकार ही नहीं बल्कि केरल की वामपंथी सरकार भी मानती है। हाल ही में हुई कार्रवाई के बाद पीएफआई को इसी के राजनीतिक संगठन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया और दूसरे इक्का-दुक्का राजनीतिक दलों से ही हमदर्दी मिली है।

केरल हाईकोर्ट को वर्ष 2012 में केरल की सरकार ने हलफनामे के साथ बताया था कि पीएफआइ के कार्यकर्ता अब तक 27 हत्याओं में संलिप्त हैं, जिनमें मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं की हत्या भी शामिल है। केरल सरकार ने 2014 में भी एक हलफनामे के साथ दोहराया कि 27 हत्याओं के अतिरिक्त पीएफआइ व इसके साथी संगठन के लोग हत्या के प्रयास के 86 मुकदमों और दंगों/साम्प्रदायिक तनाव की 106 घटनाओं के लिए भी दोषी हैं। वर्ष 2003 में केरल के कोच्चि में मराड नामक जगह पर दंगे हुए, जिनमें एक ही समुदाय के आठ लोग मारे गए थे। इस हत्याकांड का मुख्य आरोपी मुहम्मद अशकर को बताया गया जिसकी मौत एक सड़क हादसे में हो गई। अशकर का संबंध एनडीएफ से था और पीएफआइ पहले नेशनल डवलपमेंट फ्रंट (एनडीएफ) नाम से ही जाना जाता था। केरल के ही कून्नर में 2012 में एबीवीपी के कार्यकर्ता सचिन गोपाल और एक अन्य छात्र नेता विशाल की हत्या का आरोप भी पीएफआइ के छात्र संगठन कैम्पस फ्रंट ऑफ इंडिया यानी पीएफआइ पर है। केरल में ही अगस्त 2019 में रामलिंगम नामक व्यक्ति की हत्या के आरोप में दो साल से फरार चल रहे पीएफआइ के कार्यकर्ता रहमान सादिक को गिरफ्तार किया गया। पीएफआइ में पूर्व में प्रतिबंधित स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया यानी सिमी के कई कार्यकर्ता पाए गए हैं। इसका अध्यक्ष ओएमए अब्दुल सलाम (मशहूर नाम ओमा) सिमी का पूर्व राष्ट्रीय सचिव है। इसी तरह पीएफआइ का केरल राज्य सचिव अब्दुल हमीद सिमी का केरल राज्य सचिव रह चुका है। साल 2012 में केरल की सरकार के हलफनामे में यह भी कहा गया कि पीएफआइ के सिमी के कार्यकर्ता काम कर रहे हैं।

पीएफआई का चिट्ठा बहुत बड़ा है। सभी घटनाओं का जिक्र संभव नहीं पर यह बात जरूर की जानी चाहिए कि पीएफआइ ने कैसे देश में इतनी बड़ी संख्या में मुस्लिम युवाओं को जोड़ा और भनक भी नहीं लगने दी। भारत के सांस्कृतिक परिवेश में पीएफआई जैसे संगठन सफल तो नहीं हो पाएंगे, अलबत्ता पहले से परेशान मुस्लिम समुदाय को और परेशान करेंगे। शिक्षा, रोजगार और शांति इस समुदाय की प्राथमिकता में होना चाहिए।

जुलाई 2010 में केरल पुलिस ने पीएफआई के दफ्तर से देसी बम, हथियार, सीडी और कई कागजात बरामद किए थे, जिनमें तालिबान और अल-कायदा की प्रचार सामग्री भी थी। अप्रेल 2013 में केरल पुलिस ने पीएफआइ पर छापेमारी की। इनके कार्यालय से हथियार, विदेशी मुद्रा, मानव शूटिंग टारगेट के पुतले, बम, महंगा कच्चा माल, गन पाउडर और तलवारें मिली। जनवरी 2016 में एनआई कोर्ट में पीएफआइ के एक कार्यकर्ता को सात साल और पांच सदस्यों को पांच-पांच साल की कैद की सजा दी। नवम्बर 2017 में केरल की ही पुलिस ने ऐसे छह लड़कों की पहचान की जो पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया से जुडे थे और बाद में सीरिया में इस्लामिक स्टेट से जा मिले थे। पीएफआइ का चिट्ठा बहुत बड़ा है। इसमें सभी घटनाओं का जिक्र नहीं किया जा सकता, लेकिन यह बात जरूर की जानी चाहिए कि पीएफआई ने किस तरह देश में इतनी बड़ी संख्या में मुस्लिम नौजवानों को अपने साथ जोड़ा और भनक भी नहीं लगने दी। दरअसल, पीएफआइ मुस्लिम ब्रदरहुड की नीतियों और विचारधारा पर काम करती है। मुस्लिम ब्रदरहुड एक पॉलिटिकल इस्लाम पर आधारित संगठन है, जिसने पूरी दुनिया में मुस्लिम अवाम के बीच यह प्रचारित कर रखा है कि एक दिन राष्ट्र नामक संस्थाओं को मिटाकर वह खिलाफत की स्थापना कर देगा। यह सपना दिखाकर वह मुस्लिम युवाओं को कट्टर बनाता है। भारत में मुस्लिम समाज अपनी मूलभूत सुविधाओं की समस्याओं को लेकर सबसे अधिक परेशान है। शिक्षा, रोजगार और शांति इस समुदाय की प्राथमिकताओं में है। अपराध और नशे से मुक्ति, महिला अधिकारों की सुरक्षा, बच्चों को बेहतर तालीम और बेहतर जीवन स्तर भारत के मुसलमानों की घोर आवश्यकता है। पर नशा सिर्फ रसायनों और तम्बाकू से ही नहीं होता। विचार का भी एक नशा होता है जो पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया ने भारत के मुस्लिम युवाओं को पिलाने की कोशिश की। भारत के सांस्कृतिक परिवेश में पीएफआइ जैसे संगठन सफल तो नहीं हो पाएंगे, अलबत्ता पहले से परेशान मुस्लिम समुदाय को और परेशान जरूर करेंगे। जिन करोड़ों लोगों को अशिक्षा, भुखमरी, नशा और अमानवीयता से लड़ना है, उन्हें अपनी प्राथमिकताएं तय करने के लिए अगर पीएफआई की तरफ देखना पड़े, तो यह निश्चित ही समाज की वैचारिक हार है।

(लेखक मुस्लिम स्टूडेंट्स ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इंडिया के चैयरमैन हैं)

डालचंद
9414233577
9828433577

''श्री गणेशाय नमः''

Happy Diwali

'''जय बजरंग बली'

किशन
9414737272

एक बेहतरीन सेवा

डालचंद हलवाई

खाना बनानें, केटरर्स एवं बर्तन की सुविधा

लोककला मण्डल के पास, ख्वाजा कॉम्पलेक्स,
चेटक सर्कल, उदयपुर (राज.)

Dal Chand
9414233577
9828433577

Kishan
9414737272

Special Service

Dalchand Halwai

All Type Catering Facility

Near Lokkala Mandal, Khwaja Complex,
Chetak Circle, Udaipur (Raj.)

22 वर्ष बाद सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस के चुनाव

मल्लिकार्जुन के हाथ बागडोर

पंकज कुमार शर्मा

कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए 22 वर्ष बाद हुए चुनाव में पार्टी के वरिष्ठ नेता मल्लिकार्जुन खरगे निर्वाचित हुए हैं। उन्होंने पूर्वानुमानों के अनुरूप ही अपने एक मात्र प्रतिद्वंद्वी शशि थरूर को भारी अंतर से पराजित किया। मतदान में कुल 9385 वोट पड़े। जिनमें 416 को अवैध घोषित किया गया। खरगे सीताराम केसरी के बाद नेहरू-गांधी परिवार के बाहर से पहले व्यक्ति हैं जो कांग्रेस के अध्यक्ष बने हैं। करीब ढाई दशक बाद पार्टी में गांधी-नेहरू परिवार से बाहर का कोई व्यक्ति कांग्रेस का नेतृत्व करने जा रहा है लेकिन माना जा रहा है कि कर्नाटक के पुराने नेता खरगे कांग्रेस के प्रथम परिवार के विश्वास पात्र हैं और वह उनके साथ तालमेल बिठाकर ही पार्टी को आगे बढ़ाएंगे। 26 अक्टूबर को पदभार संभालने वाले खरगे के सामने पहली अग्नि परीक्षा हिमाचल और गुजरात में नवम्बर-दिसम्बर में होने वाले विधान चुनाव हैं, क्यों कि देश की सबसे पुरानी यह पार्टी जीत के लिए लगातार तरस रही है। देश के मात्र दो राज्यों राजस्थान व छत्तीसगढ़ में उसकी सरकार है। खरगे के लिए हिमाचल व गुजरात में सत्ता में वापसी पहली चुनौती है। साल 2024 के आम चुनाव से पहले स्वयं के गृह राज्य कर्नाटक समेत कुल 11 राज्यों के विधानसभा चुनाव होने हैं। एक तरह से अगला पूरा साल चुनाव का होगा। इनमें जीत हासिल कर पार्टी में नया जोश भरना और मोदी-शाह के मुकाबले 'कांग्रेस के डूबती नाव' होने की अवधारणा को तोड़ना खरगे के लिए मुश्किल भरा काम जरूर है, लेकिन उनका अनुभव, रणनीतिक कौशल और निष्ठा इसे आसान बनाने में मददगार होंगे। खरगे को यूपीए-दो के बाद बिखरे कुनबे को दुबारा एक छत के नीचे लाने में खासी मेहनत करनी होगी। इससे उनका पार्टी के हर छोटे बड़े नेता को सहयोग करना होगा। खरगे के सामने पार्टी के संगठनात्मक ढांचे में सुधार भी मामूली चुनौती नहीं है। इसकी शुरूआत सबसे पहले कांग्रेस वर्किंग कमेटी को लेकर ही होगी। पहला सवाल यह सामने आएगा कि क्या वे कांग्रेस संविधान के मुताबिक 25 में से 12 सदस्यों के चुनाव करवा पाएंगे। हालांकि उनके पहले गांधी परिवार के बाहर के अध्यक्ष रहे पीवी नरसिंहाराव व सीताराम केसरी ने क्रमशः 1992 व 1997 में वर्किंग कमेटी का चुनाव करवाया था। इसके अलावा संसदीय बोर्ड व केंद्रीय चुनाव समिति का गठन भी बड़ी चुनौती होगी। चुनाव जीतने के बाद निवर्तमान अध्यक्ष सोनिया गांधी अपनी पुत्री व पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा के साथ खरगे के आवास पर गई और बधाई दी, हालांकि खरगे उनके आवास पर जाने ही वाले थे कि सोनिया गांधी ने उनके घर पहुंच कर पार्टी कार्यकर्ताओं को यह संदेश देने की कोशिश की है कि वे भी उनकी तरह ही अब एक सामान्य कार्यकर्ता हैं और नए अध्यक्ष के फैसलों का सम्मान करेंगी। खरगे के घर पहुंचने वाले नेताओं में सबसे पहले शशि थरूर थे। भाजपा के वरिष्ठ नेता और प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी फोन पर उन्हें बधाई दी और सफलता की कामना की।

> मैं लोकतंत्र की मजबूती के लिए संसद से सड़क तक संघर्ष करूंगा। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जो भरोसा जताया है उस पर खरा उतरूंगा। देश को एक तानाशाह की सनक की भेंट नहीं चढाया जा सकता, इसलिए सभी को मिलकर इन ताकतों के खिलाफ लड़ना पड़ेगा। कांग्रेस ने जो भरोसा कर गरीब परिवार में जन्में मुझ सामान्य कार्यकर्ता को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया है, इसके लिए आभार व्यक्त करता हूं।
>
> *–मल्लिकार्जुन खरगे*

खरगे तय करेंगे मेरी भूमिका

मैं कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में काम करता रहूंगा। पार्टी में मेरी क्या भूमिका होगी, ये नए अध्यक्ष तय करेंगे।

– राहुल गांधी

युवाओं की 50 फीसद भागीदारी

मल्लिकार्जुन खरगे ने पद संभालते ही जो महत्वपूर्ण फैसले किए, उनमें सीडब्ल्यूसी भंग कर उसकी जगह संचालन समिति का गठन और पार्टी में उदयपुर नवसंकल्प के तहत संगठन में 50 फिसदी भागीदारी युवाओं को देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि युवा ही कांग्रेस की उम्मीद हैं। कांग्रेस मुख्यालय में निवर्तमान अध्यक्ष सोनिया गांधी व पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, चुनाव अधिकारी मधुसूदन मिस्त्री, केसी वेणुगोपाल, डॉ. गिरिजा व्यास, रघुवीरसिंह मीणा सहित सभी दिग्गज नेताओं की मौजूदगी में खरगे को अध्यक्ष पद पर चुनाव जीतने का प्रमाण पत्र सौंपा गया। नई संचालन समिति में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका वाड्रा गांधी सहित 47 सदस्य शामिल किए गए हैं। इनमें अध्यक्ष पद के चुनाव में खरगे के प्रतिद्वंद्वी शशि थरूर का नाम नहीं है। यह कमेटी पार्टी के महत्वपूर्ण फैसलों में सहायक होगी। इससे पूर्व पार्टी के सभी महासचिवों, प्रदेश प्रभारियों और सीडब्ल्यूसी सदस्यों ने अपने इस्तीफे नवनिर्वाचित अध्यक्ष को सौंपे।

सोनिया का भावुक भाषण

सोनिया गांधी ने खरगे को कार्यभार सौंपने के बाद अपने अत्यन्त भावुक भाषण में जब यह कहा कि 'वे आज काफी राहत महसूस कर रही हैं,' तभी खरगे उनसे मुखातिब होते हुए बोले- 'अभी राहत नहीं मिलने वाली है।' सोनिया गांधी ने कहा कि सन्तोष इस बात का है कि जिन्हें अध्यक्ष चुना गया है, वे एक अनुभवी और जमीन से जुड़े नेता हैं। इतने वर्षों तक मुझे पार्टी और देश की जनता से जो प्यार व सम्मान मिला, वह गौरव की बात है। इसका एहसास मुझे जीवन की आखिरी सांस तक रहेगा। उन्होने कहा कि लोकतांत्रिक मूल्य आज संकट में हैं, हमें एक चुनौती मानकर उन्हें बचाना है।

संचालन समिति

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे द्वारा गठित संचालन समिति में सोनिया गांधी, डॉ. मनमोहन सिंह, राहुल गांधी, एके एंटनी, डॉ.अभिषेक मनु सिंघवी, अजय माकन, अंबिका सोनी, आनंद शर्मा, अविनाश पांडेय. गाएखांगम, हरीश रावत, जयराम रमेश, जितेन्द्र सिंह, कुमारी शैलजा, केसी वेणुगोपाल, लालथनवाला, मुकुल वासनिक, ओमेन चैंडी, प्रियंका गांधी, पी चिदंबरम, रणदीप सिंह सुरजेवाला, रघुवीर सिंह मीणा, तारिक अनवर, डॉ.ए चेल्ला कुमार, डॉ. अजोय कुमार, अधीर रंजन चौधरी, भक्त चरण दास, देवेंद्र यादव, दिग्विजय सिंह, दिनेश गुंडु राव, हरीश चौधरी, एचके पाटिल, जय प्रकाश अग्रवाल, केएच मुनियप्पा, बी मानिकम टैगोर, मनीष चतरथ, मीरा कुमार, पीएल पुनिया, पवन कुमार बंसल, प्रमोद तिवारी, रजनी पाटिल, डॉ.रघु शर्मा, राजीव शुक्ला, सलमान खुर्शीद, शक्तिसिंह गोहिल, टी सुब्बिरामी रेड्डी व तारिक हामिद कारा को शामिल किया गया है।

थरूर को 11.4 फीसदी वोट

पिछले तीन चुनावों में तुलना करें तो पराजित प्रत्याशियों में थरूर को सबसे ज्यादा वोट मिले।

2022 चुनाव के नतीजे	2000 चुनाव के नतीजे	1997 चुनाव नतीजे
7,897 मल्लिकार्जुन खरगे	7,448 सोनिया गांधी	सीताराम केसरी 6,224
1,072 शशि थरूर	94 जितेन्द्र प्रसाद	शरद पंवार 882
		राजेश पायलट 354

गैर गांधी परिवार के अध्यक्ष

पट्टाभि सीतारमैया	1948–1949
पुरूषोत्तम दास टंडन	1950–1951
यूएन ढेबर	1955–1959
एन संजीवा रेड्डी	1959–1962
के.कामराज	1964–1967
एस. निजलिंगप्पा	1968–1969
जगजीवन राम	1970–1971
शंकरदयाल शर्मा	1972–1974
देवकांत बरूआ	1975–1977
ब्रह्मानंद रेड्डी	1977–1978
पीवी नरसिम्हा राव	1992–1996
सीताराम केसरी	1996–1998
मल्लिकार्जुन खरगे	26.10.2022 से

नेहरू-गांधी परिवार से अध्यक्ष

जवाहर लाल नेहरू
1951–1954
इंदिरा गांधी
1959,1978 से 1984 तक
राजीव गांधी
1985–1991
सोनिया गांधी
1998–2017, 2019 से 26 अक्टूबर 2022
राहुल गांधी
2017–2019

अंतिम सांस तक प्रदेश की सेवा: गहलोत

प्रत्यूष ब्यूरो/जयपुर

मैं कहीं रहूं, किसी पद पर रहूं। मैं राजस्थान का हूं, मारवाड़ का हूं। जोधपुर का हूं। महामंदिर का हूं जहां मैं पैदा हुआ। मैं उससे कैसे दूर हो सकता हूं। जिन्दगी की अंतिम सांस तक मैं कहीं रहूं, राजस्थान के लोगों की सेवा करता रहूंगा। मैं बार-बार जब यही बात कहता हूं तो उसके कुछ मायने हैं। राजस्थान में कांग्रेस सरकार पांच साल का कार्यकाल पूरा करेगी। बजट वे ही पेश करेंगे। वह बजट छात्रों व युवाओं के लिए होगा। युवाओं, छात्रों व प्रदेशवासियों से अनुरोध है कि वे बजट सम्बंधी सुझाव सीधे मुझे भेजें।

भाजपा के मंसूबे नहीं होंगे पूरे

राजस्थान में कांग्रेस की सरकार गिराने के भाजपा के मन्सूबे कभी पूरे नहीं होने दिये जाएंगे। वह बार-बार प्रयास करती है कि सरकार किसी तरह पांच साल पूरे नहीं करे। होर्स ट्रेडिंग की पूरी कोशिश की गई। कांग्रेस के लोग मजबूत रहे। हिले नहीं। सरकार पहले भी बच गई थी। अब भी मजबूत है। पांच साल का कार्यकाल हम पूरा करेंगे। इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए।

एक और मौका दीजिए

मैं जनता से अपील करता हूं। बार-बार सरकार बदल देते हो। मेरे अच्छे काम होते हैं तब भी आप हवा में बह जाते हो। एक बार कर्मचारियों के विरोध की हवा में बह गए। एक बार मोदी जी की हवा बना दी। एक बार कर्मचारियों को हम ढंग से टेकल नहीं कर पाए थे। मैं लोगों से अपील कर रहा हूं आप हमें एक और मौका दीजिए। आज प्रदेश में रिफायनरी बन रही है। ईआरसीपी के लिए मोदी जी से संघर्ष कर रहा हूं। प्रदेश में कोई भूखा ना सोए इसके लिए योजनाएं शुरू की हैं। मोदी, शाह और बीजेपी के लोग मेरे पीछे पड़े हैं। मोदीजी को मालूम है कि अशोक गहलोत की छवि राजस्थान में हम्बल व्यक्ति की है। राजस्थान के मुकाबले को जीतने के लिए मोदी मुझसे अधिक हम्बल दिखना चाहते हैं। आबू रोड के कार्यक्रम में तीन बार दंडवत करके मोदी क्या बताना-दिखाना चाहते हैं जबकि मैं उनसे कई बार आग्रह कर चुका हूं कि वे देश में बढ़ती हिंसा की घटनाओं को रोकने के लिये भाईचारे का, प्यार का, मोहब्बत का संदेश दें, लेकिन वे ऐसा करने से बच रहे हैं, क्यों?

(बीकानेर, हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर में जन संवाद के दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा व्यक्त विचारों के संम्पादित अंश)

छः विभूतियों को 'राजस्थान रत्न' सम्मान

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इन्वेस्ट राजस्थान समिट में असाधारण कार्यों से देश-विदेश में राजस्थान को गौरवान्वित करने वाली 6 विभूतियों को 'राजस्थान रत्न' सम्मान से सम्मानित किया। इन सभी को प्रशस्ति पत्र, शॉल, मोमेन्टो और एक लाख रूपए की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया। न्याय के क्षेत्र में अन्तराष्ट्रीय न्यायालय में नियुक्त न्यायाधीश दलवीर भंडारी, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश आरएम लोढ़ा, उद्योग के क्षेत्र से वेदान्ता ग्रुप के चेयरमैन अनिल, अग्रवाल, आर्सेनल मित्तल के चेयरमैन एलएन मित्तल, कला के क्षेत्र में केसी मालू और प्रसिद्ध उर्दू शायर शीन काफ निजाम को 'राजस्थान रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. संगम लंदन में सम्मानित

उदयपुर। सेंट्रल एकेडमी ग्रुप ऑफ स्कूल्स के चेयमैन डॉ. संगम मिश्र ने 27 व 28 सितम्बर को इंडो-यूके लीडरशिप समिट में ब्रिटिश पार्लियामेंट में व्याख्यान दिया। डॉ. मिश्र ने कहा कि भारतीय अपनी प्रतिभा एवं परिश्रम के बल पर वसुधैव कुटुंबकम की भावना को जागृत करते हुए पूरे विश्व में अपना योगदान दे रहे हैं। इस अवसर पर उन्हें भारत में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान एवं सराहनीय नेतृत्व के लिए ब्रिटिश पार्लियामेंट में सांसद वीरेन्द्र शर्मा ने वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स से सम्मानित किया।

एसबीएमजी के सदस्य बने गुप्ता

उदयपुर। प्रदेश के पूर्व स्वच्छता ब्रांड एम्बेसेडर के.के.गुप्ता को केन्द्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण (एसबीएमजी) के द्वितीय चरण में राष्ट्रीय योजना स्वीकृति समिति का सदस्य बनाया है। समिति में देश से दो गैर सरकारी सदस्य बनाए गए हैं जिसमें गुप्ता भी शामिल हैं। एक अन्य सदस्य तिरूचिल्लापल्ली (तमिलनाडु) निवासी एस. दामोदरन हैं।

नवीनतम ओपीडी का शुभारम्भ

उदयपुर। मेडिकल चिकित्सा के क्षेत्र में लगातार उपलब्धियां हासिल कर रहे उदयपुर के पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में स्किन एवं मनोचिकित्सा विभाग के नवीनतम ओपीडी परिसर का उद्घाटन हुआ। सभी हाईटेक सुविधाओं से सुसज्जित इस ओपीडी परिसर का विधिवत उद्घाटन पीएमसीएच के चेयरमैन राहुल अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, राजकुमार अग्रवाल, सुलोचना अग्रवाल,रविन्द्र सुलेखा, पेसिफिक के वाइस चॉलसर डॉ.ए.पी.गुप्ता एवं पीएमसीएच के प्रिंसिपल डॉ.एम.एम. मंगल ने किया।

रघुपति सिंघानिया को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

नई दिल्ली। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. के चेयरमैन एवं एमडी डॉ. रघुपति सिंघानिया को पीएचडीसीसीआई के 117वें वार्षिक सत्र में 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 2022' से सम्मानित किया गया है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने उनको पुरस्कार प्रदान किया। कार्यक्रम में उद्योग जगत के उन दिग्गजों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने समाज में बदलाव किया है। सिंघानिया ने इनोवेशन पर जोर देने के साथ ही उच्च तकनीक पर फोकस किया है।

गरिमा नागदा बनी सीए

उदयपुर। नागदा विप्र समाज ने लखावली निवासी गरिमा नागदा के सीए बनने पर हर्ष व्यक्त किया है। पिछले दिनों उन्होंने डिग्री हासिल करने के साथ ही बैंगलुरू की एक कम्पनी को ज्वाइन किया। गरिमा अपनी सफलता का श्रेय नान-नानी स्व. वैद्य भगवान लाल शर्मा-कमला शर्मा तथा माता-पिता गायत्री-चुन्नीलाल नागदा को देती हैं। बहिन भूमिका व भाई अविनाश के सहयोग के लिए भी गरिमा उनका आभार जताती हैं।

विजय चौहान का राज्य स्तर पर सम्मान

उदयपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की ओर से वरिष्ठ नागरिक दिवस पर जयपुर में हुए कार्यक्रम में तारा संस्थान के निदेशक विजय सिंह चौहान को राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया। चौहान को वृद्ध कल्याण, सांस्कृतिक, कला, सामाजिक एवं साहित्य के क्षेत्र में हिंदी आशुलिपि विषय पर लिखी गई 11 पुस्तकों के लिए पुरस्कार मिला। पुरस्कार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली ने दिया।

सुरेश सुथार बने सदस्य

उदयपुर। राजस्थान राज्य में गठित राज्य स्तरीय जन अभियोग निराकरण समिति के अध्यक्ष पुखराज पाराशर ने उदयपुर के सुरेश सुथार को सदस्य मनोनीत किया है।

Happy Diwali

Royal Fabricators

...a house of metal craft

Deal in :

- Redisential and comercial Metal work.
- CNC machine Job Work.
- Authorised Dealer of TATA PRAVESH Door.
- Aluminum and Stainless steel railings.

Ramakant Ajaria: 9414162895
Tushar Ajaria: 9828148574
Raghvendra Ajaria: 9602226582
Rajveer Ajaria: 9799119320

36 ,kala ji Gora ji Lake Palace Road Udaipur :Office
7,Ekilingpura chouraha Udaipur : Factory
TATA PRAVESH Door Sec.4 Opp Swagat Vatika : Gallery

www.royalimaginations.com | tusharajaria@gmail.com

इन्दिरा गांधीः नतीजों की परवाह किए बिना जोखिम उठाया

विजय सांघवी

इन्दिराजी ने वही विकल्प चुना, जो उन्हें उपलब्ध था। उन्हें किसी भी कीमत पर देश की एकता और अखंडता को कायम रखना था। जून 1984 में जब उन्होंने अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में सेना भेजने का फैसला किया, तो वे देश के इतिहास से गैरवाकिफ नहीं थीं। जब उनके सुरक्षा तंत्र ने उन्हे आगाह किया कि वे अपने आवास पर तैनात दो गार्डों को बदल दें तो उन्होंने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि इससे एक गलत संदेश जाएगा। उन्होंने नतीजों की परवाह किए बिना जोखिम उठाया था।

वर्ष 1957 में कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद 27 वर्ष लंबे अपने राजनीतिक कॅरियर में इंदिरा गांधी ने देश के लिए बहुत कुछ किया। इंदिरा गांधी ने हरित क्रांति के जरिए गांवों में कृषि का आधुनिकीकरण करते हुए सामाजिक विकास का पथ प्रशस्त किया था। वे चाहती थीं, अन्न उत्पादन के मामले में भारत आत्मनिर्भर बने और उसे विकसित देशों के सामने झोली फैलाने को मजबूर न होना पड़े। उन्होंने आर्थिक संस्थाओं को समावेशी बनाया, ताकि किसानों को उत्पादन के लिए प्रोत्साहन मिलता रहे। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि गरीबों को दो जून की रोटी पाने का अधिकार है। 'गरीबी हटाओ' के उनके नारे को कइयों ने चुनावी चोंचला कहकर खारिज कर दिया था, जबकि वह गरीबों के सशक्तीकरण की मुहिम थी।

वर्ष 1971 में 14 दिनों तक चले बांग्लादेश युद्ध में पाकिस्तान पर निर्णायक जीत हासिल करने के बाद वे एक बहादुर और मजबूत नेता के रूप में उभरीं, जबकि इससे पहले वे पार्टी के पुराने नेताओं पर निर्भर थीं। जनवरी 1966 में चार क्षेत्रीय क्षत्रपों और नौ मुख्यमंत्रियों ने उन्हें प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बिठाया था। इंदिरा गांधी ने सफलतापूर्वक उनसे संघर्ष किया और अंततः उन्हें हाशिए पर धकेल दिया। जून 1975 में जब उन्होंने देश में आपातकाल लगाया तो उन पर कुर्सी बचाने के लिए संविधान के दुरुपयोग का आरोप लगा। इसे भारतीय लोकतंत्र पर भी एक आघात निरूपित किया गया। अनेक लोगों का कहना था कि दुनिया की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक पार्टी के प्रमुख के मुलम्मे में इंदिरा गांधी द्वारा तानाशाही प्रवृत्तियों का प्रदर्शन किया जा रहा है। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपने बेटे संजय गांधी और उनके साथियों के इन प्रयासों को ठुकरा दिया कि नया संविधान लागू करते हुए नेहरू-गांधी परिवार के अनवरत शासन पर पुख्ता मुहर लगा दी जाए। उन्होंने संजय गांधी के तमाम विरोधों को दरकिनार करते हुए 1977 में चुनावों का सामना करने का भी फैसला किया।

अप्रैल 1977 में इंदिरा गांधी से आमने-सामने की एक बातचीत में मैंने पूछा था कि उन्होंने चुनावों का सामना करने का निर्णय क्यों लिया, जबकि वे चाहतीं तो एक साल और रुककर अपनी स्थिति को मजबूत कर सकती थीं? उन्होंने जवाब दिया :'तुम परिस्थितियों को दूरबीन के दूसरे छोर से क्यों देख रहे हो? तुम्हें लगता है कि मैंने आपातकाल लगाया, इसलिए मैं लोकतांत्रिक नहीं हूं?' वे सही थीं, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सवालिया निशानों के बावजूद उनके सामने ऐसी कोई बाध्यता नहीं थी कि वे चुनावी मैदान में उतरें, क्योंकि देश में उनकी स्थिति डावांडोल थी। 1977 के चुनावों में मतदान से चंद रोज पहले पटना हवाई अड्डे पर उन्होंने संकेत दिया था कि वे जानती हैं, वे यह बाजी हार चुकी हैं। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि उनकी पार्टी के सदस्य यह कहकर उनसे झूठ बोल रहे हैं कि कांग्रेस बिहार में 54 में से 48 सीटें जीतेगीं, क्योंकि वे जानती हैं कांग्रेस इस राज्य में तीन सीटें भी नहीं जीतने वाली। उन्होंने कहा, मुझे यह बात इसलिए पता है, क्योंकि मुझे अपने श्रोताओं की देहभाषा पढ़ना बखूबी आता है।

यदि इंदिरा गांधी के कटु आलोचकों की मानें तो वे कुछ समय के लिए लोकतंत्र को

तानाशाही के करीब ले गई थीं। लेकिन विपक्ष उन पर यह दबाव बनाने की स्थिति में नहीं था कि वे निर्धारित समय से एक साल पूर्व चुनावों की घोषणा कर दें। इसके बावजूद लगभग पराजय को देखते हुए उन्होंने जनता की अदालत में जाने का फैसला अगर किया, तो इससे यही साबित होता हैकि वे तानाशाह नहीं थीं। यदि होतीं तो उपराष्ट्रपति बीडी जत्ती को कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करते हुए चुनाव रद्द करवाने को कह देतीं। हालात के मद्देनजर जत्ती कैबिनेट के फैसले को ही मंजूरी देते। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

प्रधानमन्त्री के रूप में इंदिरा गांधी के पहले कार्यकाल के दौरान यानी वर्ष 1966 से 1977 तक उनकी कैबिनेट में बहुत मेधावी मंत्री थे और उन्हें देश के सर्वश्रेष्ठ अधिकारियों का भी सहयोग मिला। लेकिन अपने दूसरे कार्यकाल में उन्हें सत्ता का कांटोंभरा ताज अकेले ही पहनना पड़ा। तब देश के सामने भी अनेक तरह की चुनौतियां मुंह बाएं खड़ी थीं । असम और कश्मीर में सांप्रदायिक तनाव था। पंजाब अलगाववाद की आग में झुलस रहा था और पड़ोसी मुल्क द्वारा पंजाब के उग्रवादी तत्वों की मदद की जा रही थी। ऐसे हालात में इंदिरा गांधी की मदद करने वाला कोई नहीं था। कोई उन्हें यह बताने की स्थिति में ही नहीं था कि वे जो कर रही हैं, वह सही है या गलत ! किसी में इतना साहस न था। वास्तव में इंदिरा गांधी ने वही विकल्प चुना, जो उन्हें उपलब्ध था। उन्हें किसी भी कीमत पर देश की एकता और अखंडता को कायम रखना था। जून 1984 में जब उन्होंने अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में सेना भेजने का फैसला किया, तो वे देश के इतिहास से गैरवाकिफ नहीं थीं। जब उनके सुरक्षा तंत्र ने उन्हें आगाह किया कि वे अपने आवास पर तैनात दो गार्डों को बदल दें तो उन्होंने यह कहते हुए इससे इन्कार कर दिया कि इससे एक गलत संदेश जाएगा। उन्होंने नतीजों की परवाह किए बिना जोखिम उठाया था। इन्ही दो सिख गार्डों ने उन्हे आवास से ऑफिस जाने के दौरान 31 अक्टूबर 1984 को गोलियों से छलनी कर दिया।

कविता

भ्रम

जल्द से जल्द
ऊपर उठने के फेर में
तमाम संस्कारों, मूल्यों
और मानवीय गांभीर्य को
परे धकेल
वे
हल्के बहुत हल्के
हो जाते हैं,
बदचलन हवाओं
के चक्कर में पड़
आत्मनियंत्रण खो चुके ये
ताजिंदगी
उड़ते ही रहते हैं
इधर से उधर
अपनी
पंकिल मानसिकता के साथ

डॉ. दीपक आचार्य

मौसमी बीमारियों के घरेलू उपाय

मौसम बदलते ही ज्यादातर लोग प्रायः खांसी-जुकाम की चपेट में आ जाते हैं। सर्दी बढ़ने के साथ ही यह समस्या और बढ़ जाती है। खांसी, जुकाम, फ्लू और गले में दर्द की शिकायत रहती है। ये समस्याएं बैक्टीरियल और वायरल इन्फेक्शन, एलर्जी या साइनस के कारण होती हैं। इससे बच्चे या वे लोग ज्यादा परेशान रहते हैं,जिनकी प्रतिरोधी (इम्युनिटी) क्षमता कम होती है। इससे बचने के लिए अपने घर में ही उपाय मौजूद हैं।

विष्णुदत्त भट्ट मेवाड़ा

अदरक वाली चाय

सर्दी के मौसम में चाय की चुस्की का अपना ही मजा है। वहीं सर्दी व खांसी होने पर चाय में अदरक, तुलसी और काली मिर्च मिला कर पीने से बहुत आराम मिलता है। इसके अलावा अदरक के टुकड़े को पानी में उबाल कर पीना भी अच्छा होता है। कई शोध इस बात को प्रमाणित करते हैं कि अदरक शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाता है, जिसे आप कम बीमार पड़ते हैं।

गुनगुने पानी का सेवन

सर्दी में पीने के लिए गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें। अगर गर्म पानी से आपकी प्यास नहीं मिटती तो पानी को गर्म कर ठंडा कर पीएं। गर्म पानी से सर्दी में आराम मिलता है वहीं उसका एक बड़ा फायदा यह है कि इससे आपकी अतिरिक्त चर्बी कम होती है।

दूध में तुलसी

एक गिलास दूध में एक चम्मच चीनी, तुलसी की कुछ पत्तियां, अदरक और हल्दी डालकर अच्छी तरह पकाएं। जब दूध एक गिलास से एक कप हो जाए तो उसे चाय की तरह चुस्की लेकर पीएं। इससे कफ ढीला होता है जिससे गले में दर्द और खरास में आराम पहुंचता है।।

शहद और सितोपलादि चूर्ण

शहद खांसी दूर करने में काफी सहायक है। शहद में एंटीबैक्टिरियल और एंटीमाइक्रोबाइल गुण मौजूद होता है। अगर आप कई दिनों से खांसी और सर्दी से परेशान हैं तो एक चम्मच शहद में दो चम्मच सितोपलादि चूर्ण मिलाकर सुबह-शाम लें। शहद में अदरक का अर्क मिलाकर खाने से भी खांसी में आराम मिलता है।

तुलसी और लौंग

खांसी में तुलसी की पांच से छह पत्तियों के साथ दो लौंग, एक इलाइची, शहद या गुड़ को मिलाकर खाने से खांसी में राहत मिलती है। इतना ही नहीं सुबह के समय तुलसी के तीन-चार पत्ते खाने से शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ती है। अगर खांसी के साथ बलगम भी है तो आधा चम्मच काली मिर्च को देसी घी के साथ मिलाकर खाएं। इससे खांसी में राहत मिलती है।

हल्दी वाला दूध

हल्दी वाला दूध सर्दी-जुकाम में फायदेमंद है। हल्दी में एंटी बैक्टीरियल और एंटी वायरल गुण होते हैं, जो संक्रमण से लड़ते हैं। रात में सोने से पहले एक गिलास दूध में हल्दी मिलाकर पीने से आराम मिलता है। हल्दी मिले दूध से खांसी और जुकाम के कारण होने वाले बदन दर्द में भी आराम पहुंचता है।

गर्म पानी के गरारे

खांसी या गले में खराश होने पर गर्म पानी में चुटकी भर नमक मिला कर गरारे करने से गले को आराम मिलता है। गले में दर्द या खराश होने पर गुनगुना पानी पीने से भी गले में जमा कफ खुलता है और अच्छा महसूस करने लगते हैं। दिनभर में कम से कम तीन बार गरारे अवश्य करें।

अदरक और तुलसी

अदरक के रस या अदरक को तुलसी की पत्तियों के साथ सेवन करें, आप चाहे तो इसमें शहद भी मिला सकते है। अगर आपको सुरसुरी खांसी हैं या फिर खांसी रूकने का नाम ही नहीं ले रही है तो अदरक के छोटे से टुकड़े को मुंह में दबा कर रखें, ऐसा करने से खांसी रूक जाती है।

भाप लेना

कफ़ से गला और नाक बंद होने पर भाप या स्टीम जरूर लें। इससे सर्दी-जुकाम एवं खांसी में तुरंत राहत मिलती है। भाप लेने के लिए एक पतीली में पानी खूब गर्म करें फिर उसमें विक्स डालें और अपने चेहरे को पतीले से एक निश्चित दूरी पर रखते हुए तौलिया ओढ़कर अंदर की ओर सांस लें। दिन में दो से तीन स्टीम लें।

विटामिन सी का सेवन

विटामिन सी रोग प्रतिरोधकता बढ़ाती है, इसलिए इस मौसम में विटामिन सी युक्त फल जैसे कि संतरा, नींबू, ब्रोकली और किवी खाना चाहिए।

1300 वर्ष पहले डूबा जहाज मिला

येरूशलम । इजरायल के तट के पास 1300 साल पुराने एक जहाज के अवशेष मिले हैं। खास बात यह है कि जहाज के मलबे से पूरी तरह से संरक्षित कई प्राचीन घड़े भी मिले हैं। इनमें मेडिटेरियन इलाकों के खाने के सामान जैसे- मछली की चटनी, अलग-अलग तरह के जैतून, खजूर और अंजीर रखे हुए थे। मलबे से रस्सियां, कंघी और कुछ जानवरों के भी अवशेष मिले हैं। खोजकर्ताओं के अनुसार यह जहाज इस बात का सबूत है कि 7वीं सदी में इस्लामिक साम्राज्य की स्थापना के बाद भी पश्चिमी देशों से लोग व्यापार के लिए यहां आते रहते थे। जहाज के डूबने के कारणों का पता नहीं चला है। यह जहाज मौजूदा इजरायली कोस्टल कम्युनिटी मागन माइकल से मिला है। जहाज उस समय का है जब पूर्वी मेडिटेरियन इलाकों से क्रिश्चियन बीजान्टिन साम्राज्य सिमटता जा रहा था और इन इलाकों में इस्लामिक शासकों की पकड़ मजबूत हो रही थी। पुरातत्वविद् डेबोरा सिविकेल ने बताया-यह जहाज 7वीं या 8वीं शताब्दी का होगा। इसे मिस्त्र या तुर्की का बताया जा रहा है।

बिहारी पुरस्कार

माधव हाड़ा का चयन

वर्ष 2022 के 'बिहारी पुरस्कार' के लिए डॉ. माधव हाड़ा की आलोचना कृति 'पचरंग चोला पहर सखी री' का चयन किया गया है। यह पुस्तक मध्ययुगीन भक्त कवयित्री मीरा के जीवन साहित्य और समाज पर केन्द्रित है। इस कृति में हाड़ा ने मीरा के छवि निर्माण की प्रक्रियाओं को समझने के साथ ही विभिन्न स्रोतों में उपलब्ध उसके अपने अनुभव और संघर्ष के संकेतों की पहचान का प्रयास भी किया है। मीरा के साहित्य का स्वर, उसके अपने मध्यकालीन गतिशील समाज का स्वर भी है, जो मीरा को एक श्रेष्ठ कवयित्री होने के लिए जगह देता है। माधव हाड़ा ने मीरा के जीवन संघर्ष और सृजन तीनों पर विश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की। मीरा के विषय पर अनेक संकलन छपे हैं, जिसमें मीरा की सिर्फ एक भक्त की छवि उभरती है। मीरा की इस छवि से अलग ठोस एवं अनुसंधानपरक तथ्यों के साथ उपस्थित है, यह किताब। को जन्मे हाड़ा ने साहित्य, मीडिया, संस्कृति और इतिहास पर विस्तार से लिखा है। वह साहित्य अकादमी की सामान्य परिषद और हिंदी सलाहकार बोर्ड के सदस्य रह चुके हैं। मीडिया अध्ययन के लिए उन्हें भारतेन्दु हरीशचन्द पुरस्कार और साहित्यिक आलोचना के लिए देवराज उपाध्याय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

G.L. Kumawat
Director

Reg.No. 366/SH/32(2)

ROYAL
INSTITUTE UDAIPUR

Sonika Jat
Sikar
ICAR-2022

Kishan Bhakar
Nagaur
JET-2022

2022 Result
परीक्षा चाहे कोई भी हो
टॉपर्स हमेशा रॉयल से!

Nikita meel
Nagaur
PrePG-2022

Sakshi Paliwal
Rajsamand
CUET-2022

सोनिका रही आईसीएआर में देश में टॉपर

उदयपुर. कालका माता रोड स्थित रॉयल इंस्टीट्यूट ने इस वर्ष आयोजित जेईटी, आईसीएआर और सीयूईटी प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रथम रैंक अर्जित की है। संस्थान की सोनिका जाट ने आईसीएआर-2022 एबीसी वर्ग में 100 परसेंटाइल अर्जित करते हुए प्रथम रैंक हासिल की है व 30 से अधिक विद्यार्थियों ने 99 परसेंटाइल अर्जित किए। संस्था निदेशक जी.एल. कुमावत ने बताया कि रॉयल संस्थान हर वर्ष अपने ही रिकॉर्ड तोड़ रहा है। सम्पूर्ण भारत में प्रथम रैंक हासिल कर मेवाड़ का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राजस्थान का नाम रोशन किया है। इस मौके पर सभी चयनित विद्यार्थियों को मिठाई खिलाकर व माला पहनाकर सम्मानित किया गया।

Head Office: 57, New Arihant Nagar, Nr. Kalka Mata Mandir, Bekni Pulia, University Road, Udaipur - 313 001
91664-18244, 94137-72939, 70731-11096 E-mail: royaldefence@gmail.com www.rgeudaipur.in

सजेगा जनकपुर, होगा श्रीराम-जानकी विवाह

नंदकिशोर शर्मा

प्राचीन काल में जनकपुर मिथिला की राजधानी था। राज्य के संस्थापक निमि के वंश में महाराजा सिरध्वज जनक हुए, जो अयोध्या पति राजा दशरथ के समकालीन थे। राजकुमारी सीता मिथिलेश जनक की पुत्री थी। जनकपुर से सात कोस दक्षिण में महाराजा जनक का महल था। वर्तमान में जनकपुर पड़ोसी राष्ट्र नेपाल के अंचल धनुषा में स्थित है। यहां की प्रमुख भाषाएं मैथिली, हिन्दी और नेपाली है। राजा जनक बहुत ही विद्वान एवं धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे। शिव के प्रति इनकी अगाध श्रद्धा थी। महर्षि परशुराम भी शिव के अनन्य भक्त थे। विश्वकर्मा ने दो धनुष तैयार किए थे, जिनमें से एक शार्ङ्ग भगवान विष्णु के अवतार और ऋषि ऋचिक के पौत्र परशुराम के पास था। जिसे बाद में परशुराम ने शिव भक्त व अपने परम शिष्य राजा जनक को सुरक्षित रखने के लिए दे दिया। यह धनुष अत्यंत भारी था। जहां यह धनुष प्रतिष्ठित था। उस कक्ष की पूजा से पूर्व नियमित साफ-सफाई राजकुमारी सीता किया करती थी। एक दिन जब जनक धनुष की पूजा के लिये उस कक्ष में आए तो यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि सीता एक हाथ में उस भारी भरकम धनुष को उठाये वहां सफाई कर रही है। तभी उन्होंने यह संकल्प किया कि सीता का विवाह मैं उसी के साथ करूंगा जो इस शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढा देगा। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार जनक ने सीता स्वयंबर का आयोजन किया। जिसमें सभी राज्यों के राजा, महाराजा, राजकुमार तथा वीर पुरूषों को आमंत्रित किया गया। इस समारोह में अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र रामचंद्र और लक्ष्मण भी अपने गुरू विश्वामित्र के साथ अतिथि रूप में उपस्थित थे। जब धनुष पर प्रत्यंचा चढाने की बारी आई तो वहां महाबलशाली रावण सहित किसी भी व्यक्ति से प्रत्यंचा तो दूर धनुष अपने स्थान से हिला तक नहीं। इस स्थिति और अपनी प्रतिज्ञा को लेकर जनक बहुत ही दुखी: हुये। वे बोले-'लगता है यह धरती वीर पुरूषों से खाली हो गई है, मेरी पुत्री के भाग्य में कवांरा ही रहना लिखा है।' राजा जनक की इस चुनौती को सुनते ही लक्ष्मण तमतमा उठे। उन्होंने गुरू विश्वामित्र की ओर देखा, जिन्होंने बाद में मुस्कुराते हुये श्रीराम को संकेत में प्रत्यंचा चढाने की आज्ञा दी। श्रीराम ने ज्यों ही शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढाई, धनुष टुकड़ो में विभक्त हो गया। सभी राजा, महाराजाओं व राजकुमारों का सिर शर्म से झुक गया। सभागार हर्षोल्लास से गूंज उठा और राजकुमारी सीता का दशरथ पुत्र राम के साथ जनकपुर में विवाह सम्पन्न हो गया। यह विवाह मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि के दिन हुआ था,(इस वर्ष यह तिथि 28 नवम्बर को है) इस दिन को श्रीराम पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। राम जानकी विवाह जनकपुर में हुआ था जो वर्तमान में नेपाल में स्थित है। यहां हर साल धूमधाम से राम-जानकी विवाहोत्सव मनाया जाता है। यहां नेपाल और भारत के अलावा अन्य देशों से भी भक्त दर्शन करने आते हैं। भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या से हर साल राम बारात जनकपुर में आती है। पूरा जनकपुर दीपों से जगमगता हैं।

राम-सीता विवाह मंडप

जहां राम और सीता जी का विवाह संपन्न हुआ। वहां पंचमी के दिन राम सीता के भव्य मंदिर में हज़ारों भक्त आकर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। यह मंडप प्राचीनकाल की वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है। इसके अलावा जनकपुर से करीब 107 किमी दूर स्थित है भीम को समर्पित दो लखा मंदिर। छतविहीन इस मंदिर में भीम के अलावा मां भगवती, भगवान शिव की प्रतिमा भी स्थापित है। यहां लुंबिनी में एक और दर्शनीय स्थान रत्नसागर मंदिर है, जो भगवान श्रीराम और माता सीता को समर्पित है। लुंबिनी असल में गौतम बुद्ध की जन्मस्थली होने से बौद्ध अनुयायियों का प्रमुख तीर्थ स्थल भी है।

JK SUPER CEMENT BUILD SAFE
JK SUPER STRONG BUILD SAFE
JKcement
Happy Diwali
JK SUPER CEMENT BUILD SAFE
Weather Shield
JK SUPER STRONG
BUILD SAFE
Weather Shield
JK SUPER STRONG
Weather Shield

दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड से सम्मानित आशा पारेख

'सफलता के श्रेय की हकदार मेरी मां'

विवेक अग्रवाल

अपने जमाने की बोल्ड, बिन्दास और अपनी शर्तों पर जीने वाली दिग्गज अभिनेत्री आशा पारेख (80) को इस वर्ष 2022 का सर्वोच्च राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार पिछले दिनों राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू द्वारा समारोहपूर्वक प्रदान किया गया। आशा पारेख ने फिल्म जगत में बेबी आशा के नाम से 1952 में प्रवेश किया था। आशा का जन्म 2 अक्टूबर 1942 को गुजरात में सुधा देवी (सलमा बोहरा)-बच्चुभाई पारेख के घर हुआ। आशा पारेख के दादा फिल्म प्रायोजक थे। पिता सीमेंट व्यवसायी थे। बचपन में ही आशा को फिल्मी गीतों पर थिरकता देख मां ने उन्हें कथक और भरत नाट्यम की विधिवत शिक्षा पं. बंशीलाल भारती सहित अन्य निष्णात शिक्षकों से दिलवायी। एक स्कूल के कार्यक्रम में 10 वर्ष की आशा पर प्रसिद्ध फिल्म निर्माता-निर्देशक बिमल रॉय की नजर पड़ी। उन्होंने छोटी सी आशा के सिर पर हाथ फेरते हुए सम्मानित किया और पूछा फिल्म में काम करोगी ? आशा ने फौरन हां कर दिया। उन्हें रॉय ने अपनी पहली फिल्म मां (1952) में लिया और फिर उन्हें बाप-बेटी (1954) में दोहराया। आशा पारेख ने सोचा ही नहीं था कि वे फिल्मों में हीरोइन बन जाएंगी। वह तो डॉक्टर बनना चाहती थीं। पर दिल के किसी कोने में यह बात जमी थी कि उन्हें रूपहले पर्दे पर नाचना और अभिनय करना है। 16 वर्ष की उम्र में मां उन्हें चर्चित निर्देशक विजय भट्ट से मिलवाने ले गई। आशा को देखते ही भट्ट तपाक से बोले- इस लड़की में हीरोइन मटेरियल है ही नहीं। किशोरवय आशा के दिल को यह वाक्य गहरे तक आघात दे गया। तब उनकी मां ने उन्हें समझाया कि यह शुरूआत है। अगर तुम अभी से हार जाओगी, तो आगे नहीं जा पाओगी। इसके कुछ ही दिनों बाद आशा की किस्मत ने करवट ली। निर्देशक सुबोध मुखर्जी ने उन्हें फिल्म 'दिल देकर देखो' में बतौर हीरोइन साइन किया। 1959 की इस फिल्म ने तहलका मचा दिया। आशा-शम्मी कपूर की यह फिल्म सुपरहिट रही। इसके बाद इस अविवाहित अभिनेत्री ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। नासिर हुसैन की प्रोडक्शन कम्पनी ने उनसे एक साथ छह फिल्मों का अनुबंध किया। अब वह समय था जो अभिनेत्रियों में आशा पारेख को सर्वाधिक पारिश्रमिक भुगतान कर रहा था। नासिर हुसैन के निर्देशन में आशा पारेख की सफल फिल्में थीं- जब प्यार किसी से होता है (1961), फिर वही दिल लाया हूं (1963), तीसरी मंजिल (1966), बहारों के सपने (1967), प्यार का मौसम (1969) और कारवां (1971)। उन्होंने उनकी फिल्म 'मंजिल' (1984) में एक कैमियों भी किया। आशा पारेख अधिकांश फिल्मों में ग्लेमर गर्ल/उत्कृष्ट नर्तकी के रूप में सामने आईं। निर्देशक राज खोसला ने उन्हें इस छवि से बाहर निकाला, अपनी तीन फिल्मों- दो बदन (1966), चिराग (1969) और मैं तुलसी तेरे आंगन की (1978) से।

निर्देशक शक्ति सामंत ने उन्हें अपनी अगली फिल्मों- पगला कहीं का (1970) और कटी पतंग (1970) में अधिक नाटकीय भूमिकाएं दी। बाद वाली इन फिल्मों ने उन्हें पुरस्कार भी दिलवाया। भारत सरकार ने 1992 में फिल्मों में उनके महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए पद्मश्री से सम्मानित किया। हिन्दुस्तानी फिल्मों के पितामह कहे जाने वाले दादा साहब फालके की स्मृति में 1969 से दिया जाने वाला फिल्म जगत का सर्वोच्च पुरस्कार पाने वाली आशा पारेख सातवीं महिला हैं। उनसे पहले देविका रानी, सुलोचना, काननदेवी, दुर्गा खोटे, लता मंगेशकर और आशा भोसलें यह पुरस्कार पा चुकी हैं। आशा पारेख इस समय मुम्बई में एक नृत्य अकादमी का संचालन करती हैं। उनके नाम पर मुम्बई में एक अस्पताल भी है।

नामांकन व पुरस्कार

- आशा पारेख को 2002 में फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड मिला
- 2004 में कलाकार पुरस्कार
- 2006 में अंतर्राष्ट्रीय भारतीय फिल्म अकादमी पुरस्कार
- 2007 में पुणे अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह पुरस्कार और न्यूयार्क में 2007 में नौंवा वार्षिक बॉलीवुड पुरस्कार लॉग आइलैंड और फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री से लिविंग लीजेंड अवार्ड
- अखंड सौभाग्यवती के लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का गुजरात राज्य पुरस्कार (1963)
- फिल्म फेयर पुरस्कार 'चिराग' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का नामांकन (1969)
- फिल्म फेयर सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार 'कटी पतंग' के लिए (1971)
- फिल्म फेयर पुरस्कार 'उधार का सिंदूर' के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के रूप में नामांकन (1976)
- फिल्म फेयर पुरस्कार 'मैं तुलसी तेरे आंगन की' के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के रूप में नामांकन (1978)

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

दीपावली

के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

SELECTED Superbrand INDIA 2009 10 CONSUMER VALIDATED

भारतीय महिला क्रिकेट टीम की स्टार खिलाड़ी झूलन गोस्वामी ने लंदन में यादगार जीत के साथ विदाई ली। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम के दिग्गज बल्लेबाज सुरेश रैना ने भी क्रिकेट के सभी प्रारूपों को कहा अलविदा।

'चकदा एक्सप्रेस' का विराम

प्रिशा शर्मा

लार्ड्स (लंदन) के मैदान में आखिरी पारी 24 सितम्बर 2022, इग्लैंड का ऐतिहासिक 'क्लीन स्वीप' और करियर के आखिरी दो मेडन ओवर। भारत की दिग्गज गेंदबाज झूलन गोस्वामी के लिए इससे बेहतरीन विदाई नहीं हो सकती थी। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने इंग्लैंड के खिलाफ अंतिम वनडे मुकाबला 16 रन से जीत लिया। भारतीय महिला टीम ने पहली बार इंग्लैंड में शृंखला 3-0 से अपने नाम कर झूलन गोस्वामी को यादगार विदाई दी। महिला क्रिकेट की सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में से एक के सन्यास के साथ ही एक युग का अंत हो गया। झूलन ने 355 विकेट के साथ अपने करियर को विराम दिया। विदाई के दौरान लार्ड्स मैदान पर इंग्लैंड की खिलाड़ियों ने उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

आखिरी मैचः दो विकेट

झूलन ने करियर के आखिरी मुकाबले में 30 रन देकर दो विकेट लिए। आखिरी विकेट के रूप में उन्होंने केट क्रास को बोल्ड किया। इसी के साथ उनके 255 वनडे विकेट हो गए जो दुनिया की किसी भी महिला क्रिकेटर से अधिक है। तीन भारतीय खिलाड़ी हैं, जिन्होंने 20 साल से ज्यादा इंटरनेशनल क्रिकेट खेला। सचिन, मिताली राज, और झूलन के नाम यह रिकॉर्ड है। झूलन 2005 व 2017 का एक दिवसीय विश्व कप टूर्नामेंट में भारतीय टीम में शामिल थी। दोनों ही बार टीम उपविजेता रही। उन्हें विश्व कप खिताब न जीत पाने का मलाल रहेगा। टीम की कप्तान हरमनप्रीत झूलन की विदाई के दौरान देर तक उनसे लिपट कर रोती रही। यह भी इत्तेफाक रहा कि महिला क्रिकेट की सबसे सफल गेंदबाज झूलन का सफर चेन्नई में इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज जीत से शुरू हुआ था और इंग्लैंड के विरूद्ध ही सीरीज जीत से ही खत्म हुआ। चकदा एक्सप्रेस के नाम से मशहूर 41वर्षीय झूलन ने मैच से पहले कहा, बीसीसीआई और बंगाल क्रिकेट संघ, मेरे परिवार, कोच, कप्तान सभी को धन्यवाद। हर लम्हे के साथ काफी भावनाएं जुड़ी हैं। 2017 विश्व कप में हमने वापसी की और कड़ी चुनौती पेश की।

शानदार उपलब्धियां

25 वनडे मैच में कप्तानी की, 12 जीते और 13 हारे

56 विकेट पगबाधा से वनडे में लेने का रिकॉर्ड

1000 रन, 50 विकेट और 50 कैच वनडे में लेने वाली एक मात्र क्रिकेटर

ईडन गार्डन में दिखेगा नाम

बंगाल क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष अभिषेक डालमिया ने कहा कि ईडन गार्डन में एक स्टैंड झूलन गोस्वामी के नाम समर्पित किया जाएगा। इस मौके पर उनका विशेष सम्मान भी होगा।

विदाई मैच में टॉस के लिए पहुंची

भारतीय कप्तान हरमनप्रीत 24 सितम्बर को लार्ड्स पर इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे वनडे में झूलन को टॉस के लिए साथ लेकर गई। यह कदम दिल छूने वाला था। हरमनप्रीत की आंखों में आंसू थे।

दूसरा सबसे लंबा करियर

झूलन का 20 साल 262 दिन का वनडे करियर दूसरा सबसे लम्बा रहा। रिकॉर्ड मिताली राज (22 साल 274 दिन) के नाम है। मिताली ने 232 और झूलन ने 204 मैच खेले।

विशेषज्ञ टिप्पणी

बल्लेबाज को अविश्वसनीय गेंद से बीट करने के बाद हल्की मुस्कान बिखेरने वाली झूलन दिलों में रहेंगी। ऐतिहासिक लार्ड्स मैदान पर यादगार विदाई ने झूलन के करियर को पूर्णता प्रदान की। झूलन जैसी खिलाड़ी सदी में एक बार ही आती हैं। मुझे याद नहीं इससे पहले किसी भारतीय महिला क्रिकेटर को मैदान से इस तरह की ऐतिहासिक विदाई मिली हो। मैंने उनके साथ बहुत मैच खेले और उन्हें बहुत करीब से देखा और जाना। बिना अनुशासन, लगन और खेल के प्रति जुनून के कोई इतना लम्बा करियर नहीं जी सकता। खेल के प्रति उनका लगाव और लगन बेजोड़ रही। जिस ऊर्जा के साथ वह अपने पहले मुकाबले में उतरी थीं, वही ऊर्जा उनके अंतिम मुकाबले में भी देखने को मिली।

अंजुम चोपड़ा, पूर्व कप्तान

मुश्किल वक्त की साथी

जब अच्छा समय था, तब कई लोग मेरे संग खड़े थे। पर जब मुश्किल वक्त आया, तब झूलन उन लोगों में से थीं, जिन्होंने मेरा साथ दिया। उन्होंने हमेशा मेरा मार्गदर्शन किया। आपको शायद ही कोई ऐसी गेंदबाज दिखे जो उनकी तरह नेट पर कड़ी मेहनत करता हो। क्रिकेट के प्रति उनमें जिस तरह का जुनून है, वह किसी में नहीं। मैंने 2009 में पाकिस्तान के खिलाफ उन्हीं की कप्तानी में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया था।

हरमनप्रीत, कप्तान

रैना भी बोले अलविदा!

सुरेश रैना (35) ने भी 6 सितम्बर को क्रिकेट के सभी प्रारूपों को अलविदा कह दिया था। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से तो 15 अगस्त 2020 को महेन्द्र सिंह धोनी के सन्यास लेने की घोषणा के बाद वे अलग हो ही चुके थे, मगर आईपीएल से उन्होंने नाता जोड़ रखा था। भले ही यह कोई अप्रत्याशित घटना नहीं हो, क्योंकि हरेक खिलाड़ी के करियर में यह मुकाम आता ही है। उनकी विदाई और सम्मान में जिस तरह के आयोजन की उम्मीद थी, वैसा नहीं हो पाया, इसकी रैना को भले ही न हो, क्रिकेट प्रेमियों के मन में तो टीस रही ही। दमखम वाले इस खिलाड़ी ने आईपीएल में 5,500 रन का इतिहास रचा। चेन्नई सुपर किंग्स जिसकी ओर से वे हर आईपीएल सीजन में खेलते रहे, उसने भी इस साल उन्हें न तो टीम शामिल किया और न ही किसी अन्य फ्रेंचाइजी ने उन पर दांव लगाया। बावजूद इसके भारतीय क्रिकेट का इतिहास सुरेश रैना को नजर अंदाज नहीं कर सकेगा, क्योंकि वह न केवल इस खेल विधा के सभी प्रारूपों में लम्बे अरसे तक चमकते सितारे रहे, बल्कि उनके खेल कौशल ने करोड़ों दिलों में उन्हें स्थापित कर दिया।

न सिर्फ बल्लेबाज के रूप में रैना ने टेस्ट, एक दिवसीय व ट्वंटी -20 में शतक जड़े, बल्कि लाजवाब क्षेत्ररक्षण के लिए तो उनको दुनिया के दिग्गज क्षेत्ररक्षकों जोंटी रोड्स, रिकी पोंटिंग, पॉल कॉलिंगवुड के साथ खड़ा किया जाता रहा, और एक अच्छा क्रिकेटर जितने रन बनाता है, उतना ही क्षेत्ररण से बचाता भी है। यह बात गेंदबाजों पर भी लागू होती है। रैना ने अपना आखिरी प्रतिस्पर्धी मैच अक्टूबर 2021 में चेन्नई की तरफ से राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अबू धाबी में खेला था। रैना ने 18 टेस्ट मैचों में एक शतक की बदौलत 768 रन बनाए। मध्यक्रम के इस बल्लेबाज ने टीम इंडिया के लिए 266 वनडे इंटरनेशनल मैचों में भाग लिया। इस दौरान रैना ने 5615 रन बनाए, जिसमें पांच शतक शामिल रहे। वहीं 78 टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में रैना के नाम 1605 रन दर्ज है। वे 2011 में विश्वकप जीतने वाली टीम के सदस्य थे। रैना देश के सबसे बड़े सूबे उत्तरप्रदेश से ताल्लुक रखते हैं। साल 2003 में वह उत्तरप्रदेश रणजी टीम के सदस्य बने थे और उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। एक समय था, जब मोहम्मद कैफ, आरपी सिंह जैसे खिलाड़ियों के उदय ने यह उम्मीद जताई थी कि क्रिकेट की दुनिया में उत्तरप्रदेश एक बड़ी लकीर खींचने जा रहा है, मगर आईपीएल जैसे बड़े प्लेटफार्म की उपस्थिति के बावजूद अब तक ऐसा संभव नहीं हो सका है। इसलिए रैना जैसे बड़े खिलाड़ियों से यह अपेक्षा की जाएगी कि क्रिकेटरों की नई पौध खड़ी करके वे देश-प्रदेश के प्रति अपनी कृतज्ञता जताएं।

- मोहम्मद अबरार

दक्षिणी अफ्रीकी लीग में खेलना संभव

भारत या घरेलू स्तर पर क्रिकेट खिलाड़ी विदेशी लीग में भाग नहीं ले सकते हैं। ऐसे में रैना के लिए विश्व भर की टी-20 लीग में खेलने के लिए सन्यास लेना जरूरी था। उन्हें अगले साल दक्षिण अफ्रीका की नई टी-20 लीग में खेलते देखा जा सकता है।

राजवीर व सनत जोशी का आत्महत्या व सड़क हादसों में मरने वालों की बढ़ती तादाद पर अक्टूबर अंक में आलेख 'खुदकशी की दर नए रिकार्ड पर' समाज और सरकार के लिए चेतावनी भी है और चुनौती भी। सरकारें अपने नागरिकों के प्रति इतनी लापरवाह कैसे हो सकती हैं ? इस दिशा में केन्द्र व राज्य सरकारों को फौरन कारगर निर्णय लेने चाहिए। स्थानीय निकाय, यातायात और पुलिस विभाग इन बढ़ते आंकड़े के लिए जिम्मेदार कहे जा सकते हैं।

शैलेन्द्र कुमार पांडे, प्रेसिडेंट,
बांसवाड़ा सिन्टेक्स लि. बांसवाड़ा

प्रत्यूष केअक्टूबर अंक में डॉ. दीपक आचार्य का 'मानवीय मूल्यों के पतन से ही समस्याओं की उपज' तथा जाने-माने लेखक वेदव्यास का साहित्यकारों से प्रश्न करता 'पूछिए स्वयं से आपका लेखन कितना प्रासंगिक' आलेख और सम्पादकीय जिन हालातों की ओर संकेत करते हैं, वास्तव में वे काफी निराशा जनक हैं। युवा व प्रबुद्ध वर्ग को आगे आना ही होगा।

के.जी. गुप्ता, महाप्रबंधक,
लिपि डेटा सिस्टम्स्, उदयपुर

'प्रत्यूष' का अक्टूबर-22 का अंक मिला। इसका सम्पादकीय आंखे खोलने वाला था। राजनीतिक दल किस तरह एक व्यापार में तब्दील होकर देश की अस्मिता और चेतना की प्राण वायु लोकतंत्र को दूषित करने पर आमादा हो चुके हैं, यह भारी चिंता का विषय है। सरकार, चुनाव आयोग और खुद राजनैतिक दलों को कहीं तो लक्ष्मण रेखा खींचनी होगी। चुनाव सुधारों पर तत्काल कदम उठाने होंगे।

प्रो. आई.वी. त्रिवेदी, कुलपति, श्री गोविंद गुरु
जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा

'प्रत्यूष' का मेरे परिवार को बेसब्री से इन्तज़ार रहता है, चूंकि इसमें हर आयु व रूचि वर्ग के लिए स्तरीय पठनीय सामग्री होती है। अक्टूबर के अंक के प्राय: सभी आलेख अच्छे थे। डॉ. कमलेश शर्मा ने सूचना केन्द्र के जिन 52 वर्षीय महानुभाव के ज़ज्बे का जिक्र किया है, वे बधाई के पात्र हैं। उनके साथ ही 10 वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले उनके बेटे-बेटी को भी शुभकामनाएं। यह एक आदर्श परिवार का उदाहरण है।

देवेन्द्रसिंह गहलोत,
कांट्रेक्टर, उदयपुर

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

With Best Compliments
Lalit Sahlot
Director
PERFECT PLANNER

Acrhitectural Consultant
❖ Drawings
❖ Super Vision
❖ Design
❖ Vastu
❖ 3D View

77-Chetak Circle, Opp. HDFC Bank, Udaipur
Ph. : 0294-2429184, Mob. : 94142 39001

MAHILA SAMRIDHI BANK

हमारा ध्येय - आपकी समृद्धि

उत्तर भारत का सर्वश्रेष्ठ महिला बैंक

PROUDLY CO-OPERATIVE BANK

- Blue Ribbon Banco Award 2019
- Best North Based Bank Award-2019
- Best Mobile Banking App Award-2019
- Best Data Security Award-2019

SAMRIDHI BANK APP

RuPay

BHIM UPI

RTGS/NEFT

IMPS
IMMEDIATE PAYMENT SERVICE

BHARAT BILLPAY
BHARAT BILL PAYMENT SYSTEM
ANYTIME ANYWHERE BILL PAYMENT

Vidhyakiran Agrawal	Sunita Mandawat	Vinod Chaplot
Chairperson	Vice Chairperson	Chief Executive Officer

THE UDAIPUR MAHILA SAMRIDHI URBAN CO-OP BANK LTD.

H.O. : "Samridhi" 2/7, 1st Floor 100 Ft. Road, Sec-14, Goverdhan Vilas, Udaipur (Raj.) 313002
Tel . : +91 -294-2641003, 2640704, Fax : +91-294-2641003
web : www.samridhibank.com | email : ho@samridhibank.com

स्वादिष्ट नाश्ता: जब चाहें तब खाएं

जरूरी नहीं है कि रेडीमेड नाश्ता बाजार से ही लाया जाए, इन्हें आप घर पर भी तैयार कर जब चाहें स्वादिष्ट नाश्ते के रूप में उपयोग में ले सकते हैं. पुराने समय में दादी मां नमकीन-मीठे के कुछ ऐसे स्वाद बना कर रख लेती थीं, जो कई दिनों तक चलते थे और नाश्ते के तौर पर कभी भी परोसे जा सकते थे, बस इन्हें बना कर रख लीजिए और जब मन आए तब खाएं-खिलाएं।

गायत्री पटेल

मसाला खाकरा

मात्रा: 4 नग बनेंगे

सामग्री: 1/2 कप गेहूं का आटा, 1 टी स्पून बेसन, 1/4 टी स्पून जीरा, 1/8 टी स्पून पिसी मिर्च, चुटकी भर हल्दी, चुटकी भर हींग, 4 टे. स्पून कम वसा युक्त दूध, 1 टी स्पून तेल, नमक स्वाद के अनुसार. विधि: सारी सामग्री मिला कर मुलायम आटा गूंथ लें, फिर इसे चार बराबर भागों में बांट प्रत्येक भाग को छह इंच व्यास में बेल लें। इसके बाद प्रत्येक खाखरा को गर्म तवे पर दोनों तरफ हल्का सुनहरा होने तक भूनें व कपड़े की मदद से दबाते हुए उन्हें कुरकुरा करें, फिर हवाबंद डिब्बे में रख लें और जब मर्जी हो तब खाएं।

मेथी की मठरी

मात्रा: 8 नग बनेंगी

सामग्री: 1 कप बारीक कटी मेथी, 1/3 कप गेहूं का आटा, 1/3 कप बेसन, 1/2 टी स्पून अदरक-हरी मिर्च पेस्ट, 1 टी स्पून चीनी, 1 टी स्पून नींबू का रस, 1/4 टी स्पून हल्दी, 1/4 टी स्पून गर्म मसाला, 1 टी स्पून तेल, नमक स्वादानुसार, विधि: एक बर्तन में सारी सामग्री डाल पानी की मदद से मुलायम आटा गूंथ लें। आटे को आठ बराबर भागों में बांट, प्रत्येक को बराबर-बराबर बेल दोनों हथेलियों से चिपका लें. चिकनाई लगी बेकिंग ट्रे पर रख पहले से 200 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान पर गर्म ओवन में सात से आठ मिनट तक बेक करें. उसे हवाबंद डिब्बे में रख कुछ दिन तक चलाएं।

चिवड़ा

मात्रा: 4 व्यक्तियों के लिए

सामग्री: 1 कप पोहा, 1 टी स्पून क%ची मूंगफली, 1/4 टी स्पून राई, 2 बीच से सीधी कटी हरी मिर्च, 4 से 5 करी पत्ती, 1 टे. स्पून भुना दलिया, चुटकी भर हींग, चुटकी भर पिसी हल्दी, 1 टी स्पून पिसी चीनी, 1 टी स्पून तेल, नमक स्वाद के अनुसार. विधि: पोहा और मूंगफली को एक नॉन स्टिक बर्तन में तब तक भूनें जब तक वह कुरकुरे न हो जाएं। एक नॉन स्टिक बर्तन में तेल गर्म कर राई, हरी मिर्च, करी पत्ता और भुना दलिया डाल चलाते हुए भूनें। जब राई चटखने लगे तब हींग व पिसी हल्दी डाल मिलाएं। भुना पोहा, मूंगफली, चीनी और नमक डाल अच्छे से मिलाएं। ठंडा कर हवाबंद डिब्बे में रखें और जब चाहें तब खाएं।

प्रत्यूष
समाज में समरसता और भातृत्व भाव की पोषक पत्रिका
प्रत्यूष *(बहुरंगी हिन्दी मासिक)*
के आज ही सदस्य बनें। मात्र 600 रुपए वार्षिक
पता: 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

यह माह आपके लिए उत्साहजनक नहीं है। शिथिलता घेरे रहेगी, आलस्य त्यागकर कार्यक्षेत्र की ओर ध्यान देना होगा। किसी भी तरह के लेन–देन में गलतफहमी न पालें, सावधानी आवश्यक है। यात्राओं को टालना श्रेयस्कर रहेगा। स्वास्थ्य में नरमी एवं खिन्नता रहेगी।

वृषभ

कानूनी मामलों की परेशानियां दूर होंगी, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल होंगे। रोगों का शमन होगा, माह के मध्य से लेकर अंत तक वाणी पर नियंत्रण रखें अन्यथा अनावश्यक वाद–विवाद एवं रिश्तों में कटुता संभव। पैसों के लेन–देन में भी सावधानी परम आवश्यक है।

मिथुन

माह की शुरुआत संघर्षपूर्ण रहेगी, बेवजह राज्याधिकारियों से वाद–विवाद की स्थिति आ सकती है। माह के मध्य में सफलता एवं धन–लाभ की स्थिति बनेगी, बुद्धि विवेक से लाभ के प्रतिशत में वृद्धि की जा सकती है। माह का अंत सुखद रहेगा, जो मानसिक शांति भी प्रदान करेगा।

कर्क

माह के प्रारंभ से मध्य तक ग्रह गोचर विपरीत परिस्थितयां उत्पन्न कर रहे हैं। अतः अनावश्यक वाद–विवाद से दूरी रखें। किसी के प्रति दोषारोपण न करें। माह के मध्य के पश्चात अनुकूल समय पर ही नए कार्य की शुरुआत करें, अध्यात्म में रूचि, दान–पुण्य से मन को शांति मिलेगी।

सिंह

माह का पूर्वार्द्ध विशेष शुभ प्रतीत होता है, हर क्षेत्र में लाभ के प्रबल योग हैं। मान–सम्मान एवं सफलता के भी संकेत हैं। माह के मध्य से विशेष सावधानी बरतने की आवश्यता है, स्थान परिवर्तन संभव है। शत्रु पक्ष द्वारा मान–मर्दन एवं अनैतिक परिस्थिति में उलझने की आशंका है।

कन्या

माह के आरंभ में अनजान भय से ग्रस्त रहेंगे। कोई आपका अपना धोखा देने का प्रयास कर सकता है। सर्तक रहें, माह के मध्य से परिस्थितियां अनुकूल होने लगेंगी, अचानक धन लाभ भाग्योन्नति, मांगलिक कार्य, आरोग्य एवं विजय की प्राप्ति होगी, विद्यार्थियों के लिए समय कड़ी मेहनत का है।

तुला

यह माह संघर्षपूर्ण रहेगा, आय के स्रोतों में गिरावट आएगी। मां के स्वास्थ्य के प्रति चिंता रहेगी। जीवन साथी के निर्णय को महत्व देवें। आध्यात्मिक शक्ति का सहारा लेने से आत्मबल मिलेगा। नौकरी में पदोन्नति, स्थानांतरण एवं आजीविका में वृद्धि के प्रयास आंशिक रूप से सफलता दिलाएंगे।

इस माह के पर्व/त्योहार

1 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल अष्टमी	गोपाष्टमी
4 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल एकादशी	तुलसी विवाह
7 नवम्बर	कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी	कार्तिक व्रतोद्यापन
8 नवम्बर	कार्तिक शक्ल पूर्णिमा	देवदीपावली/गुरू नानक जयंती/निम्बाई जयंती
11 नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्णा तृतीया	सौभाग्य सुंदरी व्रत
14 नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्णा षष्ठी	पं. नेहरू जयंती
16 नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्णा अष्टमी	काल भैरवाष्टमी
19 नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी	इंदिरा गांधी जयंती

अबूझ सावा

4/11/2022	देव प्रबोधनी एकादशी	कार्तिक शुक्ल एकादशी
8/11/2022	देव दीपावली	कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा

वृश्चिक

यह माह मिश्रित फलदायी प्रतीत होता है, आर्थिक स्थिति कुछ ठीक नहीं रहेगी, शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह माह परेशान कर सकता है। अचानक खर्च में वृद्धि एवं मानसिक अशांति भी हो सकती है। कर्ज लेने से बचें, संतान के प्रति चिंता रहेगी, चल–अचल संपत्ति में वृद्धि संभव।

धनु

माह के प्रारंभ से ही लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। अवश्य लाभ उठाएं। भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी। सामाजिक खर्च मन को अशांत बना सकता है, शत्रु पक्ष पूरी ताकत से हावी होने की कोशिश करेगा। संयमित होकर सामना करें। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

मकर

भौतिक सुख एवं मान–सम्मान में वृद्धि होगी, विद्यार्थी वर्ग को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, नौकरी एवं व्यवसाय के प्रयत्न सफल रहेंगे, राजकीय मामलों से जुड़े कार्य निर्विघ्न संपन्न होंगे, शत्रु कमजोर होंगे, वरिष्ठजनों का परामर्श सार्थक सिद्ध होगा।

कुम्भ

माह का प्रारंभ ही भाग्य में अवरोध पैदा करेगा। माह के अंत तक सर्वकार्य सिद्ध होते रहेंगे। प्रगति के अनेक अवसर दिखाई देंगे। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें, खान–पान एवं दैनिक दिनचर्या नियमित रखें अन्यथा स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां बढ़ सकती हैं। उत्तरार्द्ध धन–धान्य से परिपूर्ण होगा।

मीन

इस माह स्वास्थ्य से संबंधित पूर्ण रूप से सावधानी बरतनी होगी, छोटी–मोटी बीमारियां आपको परेशान कर सकती हैं। वाहन चलाते समय सचेत रहें, निजी जीवन सामान्य होगा, इस माह न तो कर्ज लें व न देंवे। आत्मबल को बनाए रखेंगे तो भाग्योदय अवश्य ही होगा। धार्मिक यात्रा के योग हैं।

निराश्रित बच्चों ने हर्षोल्लास से मनाई दिवाली

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की पहल पर जिला प्रशासन के साथ 21 अक्टूबर को बड़ी स्थित सेवा महातीर्थ में सैकड़ों निराश्रित बच्चों व वृद्धाश्रमों में आवासित वृद्धजनों के साथ दिवाली मनाई। जिले के जनप्रतिनिधियों व प्रशासनिक अधिकारियों के सानिध्य में गणेश पूजन के बाद प्रतीक रूप में दीप जलाए, पटाखे चलाए और स्नेह भोज किया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि बच्चों को वैदिक शिक्षा व संस्कार देने के लिए 'नारायण गुरूकुल' का मुख्य अतिथि वल्लभनगर विधायक प्रीति गजेन्द्र सिंह शक्तावत,जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा व संस्थान संस्थापक कैलाश मानव ने

उद्घाटन भी किया। कार्यक्रम को एसडीएम गिर्वा सलोनी खेमका, एसडीएम बड़गांव मोनिका झाखड़, ब्रांड एम्बेसडर सेव द गर्ल दिव्यानी कटारा, पूर्व विधायक त्रिलोक पूर्बिया, एडीजे कुलदीप शर्मा, राज्य बाल कल्याण आयोग के पूर्व सदस्य डॉ शैलेंद्र पण्ड्या, कांग्रेस नेता गोपाल कृष्ण शर्मा, विवेक कटारा,पंकज कुमार शर्मा व सामाजिक न्याय एवं अधिकारिकता विभाग के उपनिदेशक मानधाता सिंह ने भी संबोधित किया। संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल के निर्देशन में बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। ट्रस्टी देवेन्द्र चौबीसा ने संचालन व धन्यवाद ज्ञापन जगदीश आर्य ने किया। कार्यक्रम में बालकल्याण समिति के ध्रुव कविया, के.के. चंद्रवंशी, मीना शर्मा, राजीव कुमार, विष्णु शर्मा हितैषी, भगवान गौड़, दिनेश वैष्णव, राकेश शर्मा, रजत गौड़,मनीष परिहार, नरेन्द्र सिंह भी उपस्थित थे।

डॉ. अरविंदर की राज्यपाल से भेंट

उदयपुर। अर्थ ग्रुप के सीएमडी व सीईओ डॉ. अरविंदर सिंह ने गत दिनों राज्यपाल कलराज मिश्र से राजभवन में भेंट की। राज्यपाल ने डॉ. सिंह को उनके 123 डिग्री के लिए वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने पर बधाई दी तथा मेडिकल के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए सराहना की। डॉ. सिंह ने भारत का पहला क्वालिटी प्रमाणित स्किन व फिटनेस सेंटर स्थापित किया है और अर्थ डायग्नोस्टिक को एनएबीएच व एनबीएल दिलाकर राजस्थान का प्रथम व एकमात्र ऐसा डायग्नोस्टिक सेंटर बनाया जो दोनों क्वालिटी प्रमाणपत्र से सर्टिफाइड है। डॉ. सिंह ने राज्यपाल को दिव्यांगों की रोजमर्रा की चुनौतियों से अवगत कराया और सरकार द्वारा घोषित दिव्यांगों के लिए नीतियों के क्रियान्वन का अनुरोध किया।

डॉ. सेठिया रेफकब निदेशक मनोनीत

चित्तौड़गढ़। चित्तौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड के अध्यक्ष डॉ. आई.एम.सेठिया को राजस्थान अरबन को-ऑपरेटिव बैंक्स फेडरेशन लि. की जयपुर में रेफकब अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत की अध्यक्षता में आयोजित निदेशक मंडल की बैठक में रेफकब का निदेशक मनोनीत किया गया। पूर्व में भी डॉ. सेठिया (2005-2007) निदेशक रह चुके हैं। उनके मनोनयन पर निवर्तमान चेयरपर्सन एडवोकेट विमला सेठिया, बैंक उपाध्यक्ष शिवनारायण मानधना, निदेशक सीए दिनेश सिसोदिया, राधेश्याम आमेरिया, रणजीत सिंह नाहर, वृद्धिचन्द कोठारी, हरीश आहूजा, बालकिशन धूत, बाबरमल मीणा, सीए दीप्ती सेठिया, राजेश काबरा, कल्याणी दीक्षित, हेमन्त शर्मा, सीए नीतेश सेठिया एवं प्रबन्ध निदेशक वन्दना वजीरानी ने हर्ष व्यक्त किया है।

नंदिता को इंटरनेशनल एयरपोर्ट प्रोफेशनल अवार्ड

उदयपुर। महाराणा प्रताप एयरपोर्ट डबोक की डायरेक्टर नंदिता भट्ट को इंटरनेशनल एयरपोर्ट प्रोफेशनल (आइएपी) ऑफ द ईयर अवार्ड से नवाजा गया है। नंदिता को यह पुरस्कार इंटरनेशनल सिविल एविएशन ऑर्गेनाइजेशन द्वारा दिया गया है। वे डबोक एयरपोर्ट की पहली महिला डायरेक्टर हैं।

जीबीएच में जटिल रोग का उपचार

उदयपुर। जीबीएच हॉस्पिटल में गंभीर मरीज का सफल उपचार किया गया। बिगड़े मलेरिया के कारण पीलिया हुआ जो रोगी के दिमाग तब पहुंच गया। साथ ही इससे मरीज के गुर्दे भी खराब हो चुके थे। सिरोही निवासी प्रभुलाल (21) को दोनों ही तरह के मलेरिया प्लाज्मोडियम फेल्सीफेरम और प्लाज्मेडियम बायोवेक्स ने चपेट में लिया था। जब मरीज की स्थिति गंभीर हुई तो उसे बेड़वास स्थित जीबीएच जनरल हॉस्पिटल लाया गया। इस पर डॉ. जीतेश अग्रवाल, आईसीयू इंटेंसिविस्ट डॉ. पीयूष गर्ग, गुर्दा रोग विशेषज्ञ डॉ. अनुराग जैन की टीम ने इलाज करते हुए मरीज की जान बचाई।

सिंघवी संरक्षक मनोनीत

उदयपुर। दिगंबर जैन बीसा नरसिंहपुरा तेरापंथ आमनाय समाज में श्याम एस सिंघवी को संरक्षक, रमेश अखावत को कार्यालय मंत्री व नीलेश भदावत को सोशल मीडिया प्रभारी मनोनीत किया गया।

लक्ष्यराज सिंह को पर्यटन पुरस्कार

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउंडेशन के ट्रस्टी लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ और केंद्रीय पर्यटन मंत्री किशन रेड्डी ने गत दिनों विश्व पर्यटन दिवस पर दिल्ली में राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार-2018-19 पुरस्कार से नवाजा। लक्ष्यराज सिंह को यह पुरस्कार एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स की 17 से ज्यादा होटलों में जीवंत विरासत के संरक्षण, संवर्धन और उत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के साथ-साथ शिकारवाड़ी और शिवनिवास पैलेस होटल के हैरिटेज होटल की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया है।

जिला वक्फ कमेटी अध्यक्ष बने सलीम शेख

उदयपुर। राजस्थान वक्फ बोर्ड के चेयरमेन खानु खान बधुवाली ने जिला कमेटियों की घोषणा की। इसमें उदयपुर जिला वक्फ बोर्ड अध्यक्ष मो. सलीम शेख, सचिव शफीक भारती, निसार अहमद शेख कोषाध्यक्ष एवं अब्बास अली रिजवी को प्रवक्ता नियुक्त किया।

लोकेश पालीवाल को पीएच.डी की उपाधि

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने शिक्षा संकाय के अंतर्गत शोधार्थी लोकेश पालीवाल को 'भाषा शिक्षकों की भाषा शिक्षण संबंधी धारणाएं और उनके कक्षा शिक्षण के मध्य संबंध, प्रभाव और निहितार्थ' विषय पर पीएच.डी की उपाधि प्रदान की। शोधकर्ता ने यह शोध कार्य डॉ. ए.के पालीवाल के निर्देशन में पूर्ण किया।

भंवर सेठ सम्मानित

उदयपुर। हेल्पेज इंडिया द्वारा अंतरराष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस की पूर्व संध्या पर वरिष्ठ नागरिक संस्थान के प्रदेश अध्यक्ष भंवर सेठ को राष्ट्रीय स्तर पर वरिष्ठ नागरिकों की सेवा एवं अधिकारों हेतु संघर्ष के लिए सम्मानित किया गया। समारोह सीडी देशमुख ऑडिटोरियम इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली में आयोजित हुआ।

राव बने प्रदेशाध्यक्ष

उदयपुर। प्रदेश यूनाइटेड कांट्रेक्टर्स एसोसिएशन की बैठक पीडब्ल्यूडी कार्यालय जयपुर में हुई, इसमें उदयपुर के भोपालसिंह राव को प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मनोनीत किया गया। राव के नेतृत्व में बनी नई कार्यकारिणी ने विभिन्न मांगों को लेकर मुख्यमंत्री, मुख्य अभियंता व अतिरिक्त सचिव को ज्ञापन दिया। बैठक में जयपुर, कोटा, बीकानेर, भरतपुर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर संभाग के सदस्य मौजूद थे।

रूमा देवी से महिला सशक्तिकरण पर चर्चा

उदयपुर। फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एंड इंडस्ट्री (फोर्टी) शाखाओं एवं फिल्म उद्योग व्यापार संघ राजस्थान चेयरमैन प्रवीण सुथार ने राजिविका की ब्रांड एंबेसडर रूमादेवी के उदयपुर दौरे के दौरान उनसे शिष्टाचार मुलाकात की। चर्चा के दौरान आगामी दिनों में राजस्थानी कला संस्कृति के संवर्धन हेतु थार हेरिटेज सप्ताह समारोह के आयोजन पर चर्चा हुई। इस दौरान फोर्टी उदयपुर संभागीय अध्यक्ष निशांत शर्मा, फिल्म उद्योग एवं व्यापार संघ राजस्थान के बोर्ड सदस्य मनीष हिंगड़, चार्टर्ड अकाउंटेट महावीर चपलोत, आर्किटेक्ट कपिल जैन आदि मौजूद रहे।

नेक्सा की ग्रैंड विटारा लॉन्च

उदयपुर। मारूति सुजूकी की प्रीमियम एसयूवी ग्रांड विटारा को उदयपुर में नेक्सा टेकनॉय मोटर्स, गोवर्धन विलास पर लॉन्च किया गया। लॉन्चिग समारोह में मुख्य अतिथि आइएमए के अध्यक्ष डॉ. आनंद गुप्ता, प्रादेशिक परिवहन अधिकारी पीएल बामणिया एवं एडिशनल एसपी सीआईडी विक्रम सिंह थे। इस मौके पर टेक्नॉय मोटर्स के महाप्रबंधक नरेश शर्मा, निदेशक दिनेश जैन, संपत जैन एवं मनीष, योगेश मौजूद थे। इसी तरह नवनीत मोटर्स पर न्यू एसयूवी ग्रान्ड विटारा को संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने लॉन्च किया। इस अवसर पर नवनीत मोटर्स के मैनेजिंग डायरेक्टर एल.एन. माथुर, डायरेक्टर प्रियांक माथुर व पूरी टीम उपस्थित थी।

व्याख्याता रजनी का अभिनंदन

उदयपुर। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की वरिष्ठ व्याख्याता श्रीमती रजनी नागदा का गत दिनों उल्लेखनीय सेवाओं के लिए अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि उनकी माता श्रीमती कमला शर्मा, प्राचार्य पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा सहित परिवार के सदस्य, शिक्षा विभागीय अधिकारी व मीडिया कर्मी भी मौजूद थे।

डॉ. सरीन का गोल्ड मेडलिस्ट पद्म अवार्ड के लिए चयन

उदयपुर। गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के बाल विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र सरीन को वर्ष 2022 के नेशनल गोल्ड मेडलिस्ट पद्म अवार्ड के लिए चुना गया है। डॉ सरीन को अवार्ड उनके द्वारा विगत चार दशक में किए गए उत्कृष्ट शैक्षणिक कार्य, चिकित्सा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान व समाज सेवा तथा नेत्रहीन व दिव्यांग बालकों के प्रति समर्पण सेवा भावना के मददेनज़र प्रदान किया गया है।

नर्सेज राष्ट्र निर्माण में सहयोग करें

उदयपुर। गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ नर्सिंग और उदयपुर प्राइवेट नर्सिंग फेडरेशन की ओर से गत दिनों आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि नर्सेज को अपना टैलेंट बढ़ाकर अपनी सेवाएं विश्व स्तर पर देकर राष्ट्र निर्माण में सहयोग करना चाहिए। आरएनटी मेडिकल कॉलेज के ऑडिटोरियम में कार्यक्रम का आयोजन राजस्थान नर्सिंग काउंसिल के रजिस्ट्रार डॉ. शशिकांत शर्मा के पदभार ग्रहणर करने का एक वर्ष पूरा होने पर किया। स्वागत उद्बोधन में प्राइवेट नर्सिंग फेडरेशन के अध्यक्ष हरीश राजानी ने कहा कि प्राइवेट नर्सिंग कॉलेज अपनी टीचिंग फैकल्टी की शैक्षणिक योग्यता और सुविधाओं में निरंतर विस्तार कर बेहतर नर्सिंग शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। अध्यक्षता कर रहे राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष ने कहा कि नर्सिंग जैसी सेवा के नोबल प्रोफेशन में आना नर्सिंग विद्यार्थियों व कर्मियों के लिए गर्व की बात है। इस दौरान कमल पाहुजा, हेमंत भागवानी, पंकज शर्मा, एमपी सिंह, मयंक कोठारी, प्रदीप चपलोत, आरडी दामोर, गिरिश शर्मा, डॉ. कल्पेश चौधरी, आरएनटी नर्सिंग कॉलेज के इकबाल शेख, आरएनटी जीएनएम टीसी के सुखवाल आदि मौजूद रहे।

460 वाहनों पर रिफ्लेक्टर टेप लगाए

उदयपुर। सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने व आमजन को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक करने के लिए ट्रैफिक पुलिस की मुहिम के बीच प्रादेशिक विभागों की ओर से भी विशेष अभियान चलाया गया, जो डीटीओ.डॉ.कल्पना शर्मा के नेतृत्व में हुआ। इस दौरान 460 वाहनों पर रिफ्लेक्टर टेप लगाए गए।

संगीत प्रतियोगिता में मेघा विजेता

उदयपुर। गुलाब बाग रोड स्थित अर्बुदा कला मंदिर संगीत प्रशिक्षण संस्थान में आश्विन मासिक संगीत प्रतियोगिता उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुई। मुख्य अतिथि धीरज अरोड़ा व विशिष्ट अतिथि म्यूजिक इवेंट ऑर्गेनाइजर दिलीप माथुर थे। अतिथियों का स्वागत संस्थान संचालक विवेक अग्रवाल ने किया व संस्थान की जानकारी दी। गिटार की छात्रा मेघा अग्रवाल ने उत्कृष्ट प्रस्तुति देकर विजेता का पुरस्कार प्राप्त किया। मनाली पूर्बिया ने ईश वंदना प्रस्तुत की। स्वागत गीत हरमेश जैन ने प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने तबला, गिटार, हारमोनियम, की बार्ड, माउथ ऑर्गन की प्रस्तुति से समा बांध दिया। इसमें काश्वी व्यास, सृष्टि मलिक, तन्मय पाल, जागृत जैन, मेघा अग्रवाल, वंशिका कुमावत, जतिन चौहान, मीत शर्मा व हितांशु शांडिल्य ने भाग लिया। पूर्वी बंसल और दिव्यम जैन ने विशेष प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में नरेन्द्र विमावत, सपना व्यास, ललित व्यास, मनीष परमार, मनीष मेघवाल, जतिन चौहान व नमन कटारा का विशेष सहयोग रहा।

खां मुस्लिम मुसाफिर खाने के सदस्य नियुक्त

उदयपुर। वक्फ बोर्ड चेयरमैन डॉ. खानु खां बधुवाली ने मुस्लिम मुसाफिर खाना की जिला कमेटी घोषित की। जिसमें दिल अफरोज खां-सदर, इरफान बरकाती, नजमा मेवाफरोश, मोहसीन खां- नायब सदर, शराफत खां-सेकेट्री व इकबाल सिपाही को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन

उदयपुर। सुविवि के ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट सेंटर की कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन कुलपति आईवी त्रिवेदी ने किया। इस मौके पर प्रो. हनुमान प्रसाद, प्रॉक्टर बीएल वर्मा, प्रो. प्रदीप त्रिखा, प्रो. मीनाक्षी, प्रो. मंजू बाघमार, प्रो. नीरज शर्मा मौजूद रहे।

माधवानी को बिजनेस आइकॉन अवार्ड

उदयपुर। युवा उद्यमी व समाजसेवी मुकेश माधवानी को जयपुर में शुभ बीकाजी अवार्ड समारोह में बिजनेस आइकन अवार्ड से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में बॉलीवुड अभिनेत्री ईशा देओल, राजस्थान लघु उद्योग विकास निगम के चेयरमैन राजीव अरोड़ा, आईएएस मनीषा अरोड़ा ने देश-विदेश की कई हस्तियों को सम्मानित किया।

डॉ. कुमावत को महाराजा प्रमर अलंकरण

उदयपुर। राजा भोज जन कल्याण समिति की ओर से उज्जैन में विक्रम कीर्ति मंदिर, कोठी रोड़, उज्जैन में डॉ. प्रदीप कुमावत को महाराजा प्रमर अलंकरण सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ. कुमावत को संस्कृति, संवर्द्धन के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर परमार राजवंश रत्नमाला पुस्तक का विमोचन और राष्ट्रीय संगोष्ठी भी हुई।

बडोला हुंडई को बेस्ट रेजीमेंट अवार्ड

उदयपुर। जयपुर में आयोजित हुंडई मोटर्स इंडिया लिमिटेड अवार्ड सेरेमनी में बडोला हुंडई उदयपुर को 'बेस्ट रेजीमेंट'- 'आर्ट ऑफ वार' नॉर्थ जोन 2 अवार्ड दिया गया, जिसे जीएम सेल्स इंद्रपाल सिंह ने 'बेस्ट स्टॉक मैनेजमेंट' के लिए प्राप्त किया। निदेशक नक्षत्र तलेसरा व डीलर प्रिंसिपल रोहित बडोला ने बताया कि हुंडई कारें ग्राहकों को वैल्यू फॉर कनी एवं सैफ कारों की प्रतिस्पर्धा में सबसे आगे हैं।

'दहकते लम्हे' का विमोचन

ब्यावर। सामाजिक संस्था 'सम्पर्क के तत्वावधान में जयपुर में लघुकथा संग्रह 'दहकते लम्हे' का विमोचन गत दिनों सम्पन्न हुआ। जिसमें 125 नवोदित महिला रचनाकारों की लघु कथाओं का समावेश है। सम्पादिका रेणु शब्द मुखर को साहित्य क्षेत्र में उनके योगदान के लिए 'साहित्यश्री' अवार्ड प्रदान किया गया। संस्था के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विमल चौहान ने बताया कि विमोचन समारोह की मुख्य अतिथि संस्कृत विभाग की संयुक्त निदेशक डॉ. शालिनी थीं। मुख्य वक्ता वरिष्ठ साहित्यकार फारूख आफरीदी थे। अध्यक्षता हिंदी प्रचार-प्रसार संस्थान के अध्यक्ष डॉ. अखिल शुक्ला ने की। कार्यक्रम में ब्यावर की ईशिका जैन को अभिनय व मॉडलिंग व जाह्नवी भारवानी को समाज सेवा के लिए सम्मानित किया गया।

'झांकी राजसमंद की' समीक्षा-संगोष्ठी

उदयपुर। इतिहासविद् कवि एवं उद्यमी लक्ष्मण सिंह कर्णावट रचित काव्य संग्रह 'झांकी राजसमंद की' पर पिछले दिनों होटल विष्णु प्रिया में समीक्षा संगोष्ठी आयोजित की गई। इस काव्य संग्रह का गत 2 जून को हल्दीघाटी में राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी ने विमोचन किया था। समीक्षा संगोष्ठी के मुख्य अतिथि इतिहासविद् डॉ. देव कोठारी थे। अध्यक्षता सुखाड़िया विश्व विद्यालय विधि संकाय के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. आर.एल. जैन ने की। अतिथियों का स्वागत करते हुए रचनाकार कर्णावट ने काव्य संग्रह में सम्मिलित विषयों यथा- राजसमंद एवं उसके संस्थापक महाराणा राजसिंह, राजसमंद झील की नौ चौकी के शिल्प, महाराणा प्रताप व हल्दी घाटी-युद्ध, महाराणा कुंभा एवं कुंभलगढ़, सलूम्बर की रानी हाड़ी, अपने आदर्श व प्रेरक भंवरलाल कर्णावट, हुंकार कलिंगी, भारमल शतक आदि पर अपना अध्ययन और मन्तव्य प्रस्तुत किया। प्रमुख समीक्षकों में डॉ. राजेन्द्र नाथ पुरोहित, डॉ. गिरीश नाथ माथुर, शंभू सिंह राठौड़ डॉ. के.एल कोठारी, श्रेणीदान चारण, कवि राव अजात शत्रु, छगन लाल बोहरा व डॉ. एल.एल. धाकड़ थे। संचालन इतिहासकार डॉ अजात शत्रु सिंह शिवरती ने व धन्यवाद ज्ञापन लता कर्णावट ने ज्ञापित किया।

चित्तौड़गढ़ शाखा में सोनोग्राफी सुविधा शुरू

उदयपुर। मेडीसेंटर सोनोग्राफी एवं क्लिनिकल लैब की चित्तौड़गढ़ शाखा में सोनोग्राफी सुविधा शुरू हुई। उद्घाटन चित्तौड़गढ़ सीएमएचओ डॉ. रामकेश गुर्जर ने किया। मेडीसेंटर के डॉ. मनीष सेठ ने बताया कि 15 साल से सभी तरह की पैथेलॉजी व रेडियोलोजी की जांचो के लिए मेडीसेंटर लैब उत्कृष्ट संस्थान रहा। इसी श्रृंखला में चित्तौड़गढ़ में रेडियोलॉजी में गुणवत्ता पूर्ण सोनोग्राफी की शुरूआत की गई। उच्चतम गुणवत्ता की मशीन स्थापित की गई, जिसमें सभी तरह के सोनोग्राफी स्कैन होंगे।

मंगरोरा सदस्य नियुक्त

उदयपुर। राजस्थान सरकार के सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ वॉलंटरी सेक्टर के अध्यक्ष मुमताज मसीह ने सत्यनारायण मंगरोरा एवं पंकज कुमार शर्मा को राज्य स्तरीय सदस्य मनोनीत किया।

सिंघवी संभाग प्रभारी

उदयपुर। भाजपा चुनाव आयोग सम्पर्क विभाग में वरिष्ठ अधिवक्ता अशोक सिंघवी को उदयपुर संभाग का प्रभारी बनाया गया है। सिंघवी पूर्व में भाजपा के विधि प्रकोष्ठ के प्रदेश सहसंयोजक रह चुके है।

गजेंद्र भंसाली अध्यक्ष बने

उदयपुर। उदयपुर हैंडीक्राफ्ट एसोसिएशन संस्थान की साधारण सभा की बैठक हुई। साधारण सभा में सत्र 2022-2025 की कार्यकारिणी का चुनाव निर्विरोध हुआ। इसके तहत अध्यक्ष गजेन्द्र कुमार भंसाली, उपाध्यक्ष राघेश्याम सोनी, मंत्री इमदाद अली, सहमंत्री नरेन्द्र डांगी, कोषाध्यक्ष जयपाल दास वाधवानी, सहकोषाध्यक्ष अशोक चावला, परवेज अली, शकील मोहम्मद मनोनीत हुए।

मेघवाल आयोग सदस्य मनोनीत

उदयपुर। बाल अधिकारिता विभाग आयुक्त एवं संयुक्त शासन सचिव अनुप्रेरणा सिंह कुंतल ने राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के तीन नए सदस्यों की नियुक्ति की है। इसमें उदयपुर के राजीव मेघवाल को भी सदस्य मनोनीत किया है। इनके अलावा जयपुर की संगीता गर्ग, दौसा की साबो मीना शामिल है। सदस्यों का कार्यकाल तीन वर्ष रहेगा।

डॉ. कमलेश शर्मा पदोन्नत

उदयपुर। राजस्थान सूचना एवं जनसंपर्क सेवा के वर्ष 2005 बैच के अधिकारी और उदयपुर के जनसंपर्क उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा को संयुक्त निदेशक पद पर पदोन्नत किया गया है। राज्य सरकार के सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग की ओर से जारी एक आदेश के तहत विभागीय पदोन्नति समिति की अभिशंसा पर डॉ. शर्मा को वर्ष 2022-23 के रिक्त पद उपनिदेशक से संयुक्त निदेशक पद पर पदोन्नत किया गया है।

यादव सदस्य मनोनीत

उदयपुर। सक्सेस पॉइंट के प्रबंध निदेशक दिलीप सिंह यादव को उदयपुर जिला क्रिकेट एसोसिएशन की फाइनेंस कमेटी का सदस्य मनोनीत किया गया है। मनोनयन का पत्र उदयपुर जिला एसोसिएशन के अध्यक्ष मनोज भटनागर, कोषाध्यक्ष मनोज चौधरी, उपाध्यक्ष राकेश खोखावत ने यादव को भेंट किया और बधाई दी।

गोधा भाजपा उद्योग प्रकोष्ठ के संयोजक

उदयपुर। भाजपा उद्योग प्रकोष्ठ के संयोजक रघुनाथ अग्रवाल ने उद्योग प्रकोष्ठ के जिला संयोजक पद पर विजय गोधा व सह संयोजक पद पर राजेश सिंघवी व अनिता जोशी को मनोनीत किया। विजय गोधा पूर्व में लघु उद्योग प्रकोष्ठ व व्यापार प्रकोष्ठ के संयोजक के साथ संगठन में कई जिम्मेदारी निभा चुके हैं।

श्याम देवपुरा को नरेश बंसल स्मृति सम्मान

मथुरा। हिंदी सजल सर्जना समिति, द्वारा वार्षिक सजल महोत्सव का आयोजन गत 16 अक्टूबर को यहां आरसीए गर्ल्स डिग्री कॉलेज में सम्पन्न हुआ। जिसमें नामचीन साहित्यकारों व हिन्दी सेवियों को विभिन्न अलंकरणों से सम्मानित किया गया। साहित्य मंडल नाथद्वारा के प्रधानमंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा को नरेश बंसल स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। समिति अध्यक्ष डॉ. अनिल गहलोत ने बताया कि समारोह में 12 सजल संग्रहों का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष किशन सिंह चौधरी ने की। मुख्य अतिथि पूर्व ऊर्जा मंत्री श्रीकान्त शर्मा थे। विशिष्ट अतिथि समिति संरक्षक डॉ. चंद्रभाल सुकुमार, समाजसेवी, नगेन्द्र सिकरवार व गिरीश अग्रवाल थे।

चित्तौड़ा को लक्ष्यराज ने किया सम्मानित

उदयपुर। शहर के कलाकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा को लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने सम्मानित किया। मेवाड़ ने चित्तौड़ा द्वारा बनाई सबसे सूक्ष्मतम डायरी के लिए वर्ल्ड ग्रेटेस्ट रिकॉर्ड द्वारा जारी प्रमाण पत्र, स्टीकर, मैडल, बेच और स्मृति चिह्न भेंट कर उन्हें बधाई दी और उनकी उपलब्धियों की सराहना की।

फांदोत चेयरमैन निर्वाचित

उदयपुर। जीतो उदयपुर चैप्टर की 2022-24 की कार्यकारिणी के लिए चेयरमैन के चुनाव में विनोद फांदोत निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी वीरेन्द्र सिरोया ने बताया कि चार में से तीन प्रत्याशियों द्वारा नामांकन उठा लिए जाने के बाद विनोद फांदोत को निर्विरोध चेयरमैन निर्वाचित घोषित किया गया। निवर्तमान चेयरमैन राजकुमार सुराणा ने नव निर्वाचित चेयरमैन को पगड़ी पहनाकर व उपरणा ओढ़ाकर शुभकामनाएं दीं।

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्री दलपत सिंह जी चौधरी का 20 सितम्बर को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता, पुत्र निखिल, पुत्री प्राची खोखावत सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्री, बहिनों-भानजों का समृद्ध व सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती हुलास देवी जी काबरा (देलवाड़ा वाले) का 20 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे 86 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र गोपाल, सुनील व अनिल काबरा, पुत्रियां श्रीमती कला राठी व मंजू जागेटिया तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दौहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। हजानी बतुल बाई दाऊद धर्मपत्नी मरहूम हाजी अब्दे अली दाऊद का 30 सितम्बर को इन्तेकाल हो गया । वे 88 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे पुत्र हातिम अली, दाऊद अली, पुत्री जुलेखा कागजी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र व भाई-भतिजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं। वे समाज सेवी व धर्मपरायणा थीं।

उदयपुर। श्रीमान भंवरलाल जी बांठिया का 23 सितम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्मपत्नी श्रीमती कमला बाई, पुत्र अभय व संजय बांठिया, पुत्रियां श्रीमती रेखा कटारिया ,सुनीता बापना व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। जिला कांग्रेस के नेता एवं पूर्व पार्षद (नगर परिषद में नेता प्रतिपक्ष) जनाब अब्दुल अजीज खान साहब का 14 अक्टूबर को इंतकाल हो गया। वे अपने पीछे गमज़दा पत्नी श्रीमती फिरोज बेगम, पुत्र अब्दुल कलाम, अब्दुल सलाम व अब्दुल कादर तथा पुत्री श्रीमती शबाना सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ. गिरिजा व्यास, रघुवीर सिंह मीणा, लाल सिंह झाला, गोपाल कृष्ण शर्मा, पंकज शर्मा आदि ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। हाजी शब्बीर हुसैन मोटागांव वाला का इंतेकाल 27 सितम्बर को हो गया। वे अपने पीछे गमज़दा पुत्र आमिर हुसैन व भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री सुरेश जी मांडावत निवासी जयश्री कॉलोनी का 7 अक्टूबर को असामयिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला देवी, पुत्र अंकुर मांडावत, पुत्री श्रीमती कोमल वडेरा व भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। सीसारमा निवासी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता स्व. रोशनलाल जी नागदा के सुपुत्र समाजसेवी श्री देवेन्द्र जी नागदा का 21 सितम्बर को असामयिक निधन हो गया। उनके निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, विधानसभाध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, डॉ. गिरिजा व्यास, रघुवीर सिंह मीणा, लक्ष्मी नारायण पण्ड्या, लाल सिंह झाला समेत अनेक कांग्रेसी व अन्य राजनैतिक दलों के नेताओं-कार्यकर्ताओं ने शोक प्रकट किया है। वे अपने पीछे शोकाकुल माता श्रीमती चन्द्रादेवी, धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती, पुत्र विशाल, भूपेश, पुत्री डॉ. ध्वनि नागदा समेत भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्री, दोहित्री का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

शहादत को सलाम

उदयपुर। भारतीय थल सेना के पायलट उदयपुर (खेरोदा) निवासी मेजर मुस्तफा 21 अक्टूबर को अरूणाचल प्रदेश के सियांग जिले में रूद्र हेलीकॉप्टर दुर्घटना में अपने दो साथियों सहित शहीद हो गये। मेजर मुस्तफा ट्विंग क्षेत्र में पद स्थापित थे। उनके साथ शहीद होने वालों में मेजर विकास भांभू जयपुर व रोहिताश खैरवा झुंझुनू थे। मेजर मुस्तफा की पार्थिव देह को राजकीय सम्मान के साथ 23 अक्टूबर को खांजीपीर स्थित कब्रिस्तान में दफनाया गया। उनका शव डबोक एयरपोर्ट से सीधे खांजीपीर मस्जिद ले जाया गया। जहां बाद नमाज सैन्य अधिकारियों, परिजनों व हजारों नागरिकों के साथ जनाजा खांजीपीर कब्रिस्तान पहुंचा। हर आंख नम थी। मुस्तफा जिन्दाबाद, हिन्दुस्तान जिन्दाबाद के नारों से आकाश गूंज रहा था। मेजर मुस्तफा अपने पीछे गमज़दा पिता जकियुद्दीन, माता फातिमा, बहिन अलेफिया, मंगेतर फातिमा सहित भरापूरा दाऊदी बोहरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय

राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित - बड़वी, माही डेम रोड, बांसवाड़ा - 02962244022

पाठयक्रम	अर्हता	अवधि	शुल्क	
			आरक्षित वर्ग	अनारक्षित वर्ग
शास्त्री (बी.ए.) आचार्य (एम.ए.) वैदिक साहित्य ज्योतिर्विज्ञान, योग	उत्तर मध्यमा, वेद विभूषण (12वीं. / समकक्ष परीक्षा)	03 वर्ष	रु. 1500/-	रु. 2000/-
	शास्त्री/स्नातक समकक्ष	02 वर्ष	रु. 2000/-	रु. 2500/-

विशेषताएं

रोजगार के अवसर

* संस्कृत शिक्षक बनने में उपयोगी
* सामान्य शिक्षक बनने में उपयोगी
* भारतीय सिविल सेवा हेतु उपयोगी

स्वरोजगार

* ज्योतिष सेवा केन्द्र
* योग प्रशिक्षण केन्द्र
* कर्मकाण्ड शिक्षण

- नवीन शिक्षा नीति के अन्तर्गत संचालित
- राज्य सरकार द्वारा प्रदेय सभी छात्रवृत्तियां देय
- छात्रावास सुविधा
- प्राकृतिक शुद्ध वातावरण
- मेरिट आधार पर विशेष छात्रवृत्ति (विश्वविद्यालय द्वारा)
- प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन

मार्गदर्शन हेतु संपर्क .....

डॉ. लक्ष्मण लाल परमार
उपकुलसचिव एंव अकादमिक प्रभारी
मो. 9680397006

डॉ. महेन्द्र प्रसाद सलारिया
निदेशक - वेद विद्यापीठ
मो. 7976952639

वैदिक गुरूकुल के तहत 20 छात्रों का प्रवेश राज्य सरकार से स्वीकृति प्राप्त होते ही कर दिया जाना हैं। सभी छात्रों का शिक्षण आवासीय एवं नि:शुल्क रहेगा। छात्रों का आवास, भोजन आदि व्यय विश्वविद्यालय के द्वारा वहन किया जायेगा। विश्वविद्यालय द्वारा इस सत्र 2022-23 में UG L.L.B. तथा P.G. DIPLOMA ANNUAL (PG DIPLOMA COURSE IN LABOUR LAW) का संचालन किया जा रहा है। गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा में अकादमिक विभाग द्वारा संचालित पाठ्यकम निम्न प्रकार हैं-

S.N.	Post Graduate Programs	(Previous Year/1st Sem.)
1.	M.B.A.	
2.	M.com (ABST)	
3.	M.com (Bus. Adm.)	
4.	M.com (EAFM)	
5.	M.Sc. (Maths.)	
6.	M.Sc (Chemistry)	
7.	M.Sc (Botany)	
8.	M.Sc (Zoology)	
9.	LL.M	
10.	MA (URDU)	
11.	MA in Education	
12.	MA (Hindi)	
13.	MA (Sanskrit)	
14.	MA (English)	
15.	MA (Geography)	
16.	MA (History)	
17.	MA (Political Science)	
18.	MA (Sociology)	
19.	P.G. Diploma-YOGA	
20.	MA in Music	
21.	Diploma in Animal Husbandry	

Vikram Arora
Managing Director

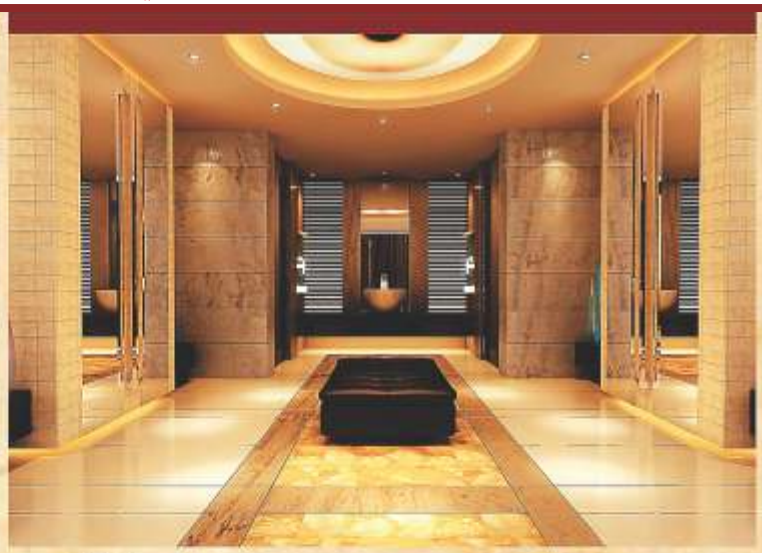

ARORA'S
JK NATURAL MARBLES LIMITED

ARORA GROUP

- ▲ Dairy
- ▲ Realty
- ▲ Mining
- ▲ Hospitality
- ▲ Distillery
- ▲ Trading

G-1, The IDEA Apartment, 14-A-1, New Fatehpura, Opp. Allahabad Bank
Udaipur - 313 004 (Raj.) India, Tel : +91 294-2414684 / 2810352

Corporate Office :
237, Ekta Co-operative Housing Society Ltd., Unit No. 1896
Motilal Nagar No. 1, Road No. 4, Opp. Ganesh Mandir Ground, Goregaon, West Mumbai - 400104

❙ www.jkmarble.com ❙ vikramarora@jkmarble.com

Since 1947

अर्चना®

अगरबत्ती

विश्वास पवित्रता का

Scan and get in touch

Clean and green city | Not tested on animals | Save Nature | Charcoal Free

Udaipur | Mumbai | Bangalore | www.archanaagarbatti.com | sales@archanaagarbatti.com | archanaagarbatti

Manufactured and marketed by:
ARCHANA AGARBATTI | NAVBHARAT INDUSTRIES

Registered Office
N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Chauraha,
Khempura, Sunderwas, Udaipur, Rajasthan, India. 313001

अर्चना ग्रुप

डिस्ट्रीब्यूटरशिप हेतु संपर्क करें।
कॉल या Whatsapp करे
+91 9468540806
+91 8209293887

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed To Be University)

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय)

1937
सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

Pratap Nagar, Udaipur – 313001 (Raj.) Ph. & Fax : 0294-2492440, Email: admissions@jrnrvu.edu.in

समस्त पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) से मान्यता प्राप्त

ADMISSIONS OPEN - 2022-23

Manikyalal Verma Shramjeevi College

Faculty of Social Sciences and Humanities : Ph. : 0294-2413029, 9829160606, 9460826362

B.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology, Geography, Economics, Political Science, Public Administration, Environmental Science, Jyotish, Music.
M.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology, Geography, Economics, Political Science, Music. **Diploma Courses** : Diploma in Music (Surmalhar), Diploma in Panchgavya, P.G. Diploma in G.I.S. and Remote Sensing, Bachelor of Journalism and Mass Communication. **Certificate Courses** : Spoken English, Proficiency in English and Communication Skills, Culture of Rajasthan, Research Methods and Data Analyst, Human Rights, Acupressure.

Faculty of Commerce : Ph. : 0294-2413029, 9460275655, 9460372183

B.Com., B.B.A., M.Com, (Accounting, Business Administration), Master of NGO Management, PG Diploma in Training and Development Certificate Courses: Plastic Processing and Manufacturing Skills, Tally ERP 9.0, Goods and Service Tax (GST).

Faculty of Science : Ph. 9828072488,7852803736

B.Sc. : Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology, Biotechnology, Environmental Science, Geology
M.Sc. Chemistry (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
M.Sc. : Mathematics, Physics, Botany, Zoology, Environmental Science. Statistics, Bioinformatics, Biotechnology.

Jyotish and Vastu Sansthan - 9460030605

M.A. (ज्योतिर्विज्ञान), **Diploma and Certificate Courses in Astrology** (ज्योतिष), Vastu (वास्तु), Palmistry (हस्तरेखा), Worship System (पूजा पद्धति), Rituals (अनुष्ठान), Vedic Culture (वैदिक संस्कार संस्कृति).

Faculty of Education - 9460693771

B.A. B.Ed (4 year Integrated Course), B.Sc. B.Ed. (4 Year Integrated Course)

Manikyalal Verma Shramjeevi Evening College
Mob. - 9414291078, 0294-2426432, 8209630249

B.A., B.A. Additional (All Subject), B.Com. M.Com (All Subjects), M.A. (All Subjects), M.A. (Education), M.A. in Music, M.Sc. (Psychology), B.Lib, M.Lib., B.Ed in Special Education (ID / HI), D.Ed Special Education (HI / VI / MR), PG Diploma in Guidance and Counseling, Diploma in Library Science, PG Diploma in Population Study, PG Diploma in Mental Health Counseling, PG Diploma in Lib. & Inf. Science (Medical / Engg. / Industrial), MBA (Executive), Diploma in Community Based Rehabilitation

Department of Physical And Yoga Education
M.V. Shramjeevi Collage Campus, Ph.: 9352500445

PhD. Yoga, M.A.Yoga, P.G. Diploma In Yoga, PhD. Physical Education, M.A. Physical Education, Bachelor of Physical Education & Sports, (B.P.E.S), Diploma In Gym Instructor, Diploma in Sports Coaching (NIS) - 1 Year(Wrestling, Judo, Powerlifting, Yoga, Weight Lifting, Boxing, Wusu)

Department of Physical Education, Pratap Nagar Campus - 9829943205

Master of Physical Education (M.P.Ed.) - 2 Years, Diploma in Sports Coaching (NIS) - 1 Year (Hockey, Football, Kabaddi, Volleyball, Basketball, Badminton)

Department of Law - 9414343363, 9887214600

B.A.LL.B. (5 Year Integrated Course), LL.B. (3 Year Degree Course), LL.M. (2 Years), Ph.D., PG Diploma (1 Year Course) in Labour Law (PGDLL). Cyber Law (PGDCL), Law & Forensic Science (PGDLFS). Accountancy & Taxation (PGDLTA) and Intellectual Property Laws (PGDIPL). LLM 2 years (Criminal and Business Law)

Department of Pharmacy - 9414869044

D. Pharma (Diploma in Pharmacy)

Faculty of Engineering - Rajasthan Vidyapeeth Technology College
Ph. : 0294-2490210, 9829009878, 9950304204

Diploma in Engineering - Civil Engineering, Electrical Engineering, Mechanical Engineering. Electronics & Communication Engineering, Computer Science.

Faculty of Computer Science and Information Technology
Ph. 2494227, 2494217, 9414737125

B.C.A., M.C.A., M.Sc.(CS), B.Sc. in Data Science, P.G.D.C.A., B.Voc in Software Development, DCA (Diploma in ComputerApplications).

Department of Physiotherapy - Ph. : 0294-2656271, 9414234293

Bachelor of Physiotherapy (B.P.T.). Master of Physiotherapy (M.P.T.). Master of Hospital Management. Fellowship in Palliative Care and Oncology Rehabilitation, Fellowship in Neurological Rehabilitation, MBA in Health Care Management. Fellowship in Geriatric Care and Rehabilitation, Fellowship in Sports Rehabilitation

Udaipur School of Social Work - Ph. 8118806319, 9829445889

Master of Social Work (MSW). PG Diploma in HRM, PG Diploma in CSR, Post Graduate Diploma in Rural Development (PGDRD), Master of Social Work (MSW - Self Finance Evening Batch), P.G. Diploma in Talent Management.

Sahitya Sansthan (Institute of Rajasthan Studies)
Ph. : 0294-2491054, 8003636352

M. A. In Ancient Indian Culture and Archaeology, Diploma in Archaeology.

School of Agricultural Sciences, Dabok - 9460728763

B.Sc. (Hons.) Agriculture, B.Sc. Horticulture, B.Tech. Food Technology, M.Sc. Agronomy and Horticulture

Manikyalal Verma Shramjeevi Girls College, Dabok
Ph. : 0294-2655327, 9460856658, 9694881447, 9079919960

B.A., B.Com., B.Sc., M.A. (English, Hindi, Sanskrit, Pol. Sc., History. Geography, Sociology, Economics), M.Com (Accountancy),
Special Classes for English Speaking and Computer Basics.

R.V. Homeopathic Medical College and Hospital, Dabok
Ph. : 0294-2655974, 2655975, 9414156701, 9351343740

Diploma in Homoeopathic Pharmacy (DHP).

Faculty of Management Studies (FMS)
Ph. : 0294-2490632, 9461260408, 9782049628, 9001556306

B.B.A, M.B.A (H.R / Marketing / Finance / Production & Operation Management / I.B / I.T / Tourism and Travel / Retail Management / Agri-Business / Family Business Management), M.H.R.M.

Department of Travel, Tourism & Hospitality
Faculty of Management Studies - 9950489333

BBA (Tourism and Travel) Specialization in Hotel Management
Diploma in Hotel Management (Food & Beverage Service)
Diploma in Hotel Management (Housekeeping)
Diploma in Hotel Management (Food Production).

Manikyalal Verma Shramjeevi Girls College, Pratapnagar, Udaipur, Mob. : 9928456341, 9929939963

B.A., B.Com, B.Sc. , M.A. Geography, Pol.Sc., Regular Special Classes for Competition exams

Lokmanya Tilak Teachers Training College, Dabok
Faculty of Education - Ph. : 8306182436, 0294-2655327

M.Ed., M.A. Education, B.Ed.-M.Ed. (3 Year Integrated), B.Ed., B.Ed. (Child Development), B.A.-B.Ed. and B.Sc. B.Ed. (4 Year Integrated), D.El.Ed., PG Diploma in Yoga

SHIVA © 9828244344

Note :

For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website : www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department

REGISTRAR